बीति गेल समय

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

बीति गेल समय

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5593-875-6

दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण :2022

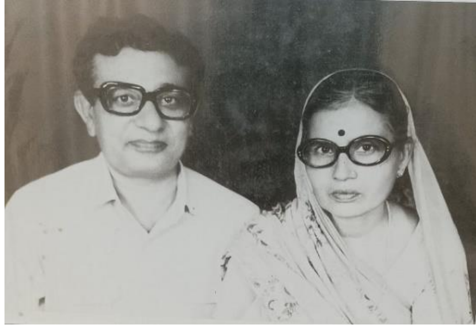
लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

बीति गेल समय

A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



हमर ससुर(स्वर्गीय गणेश झा)

आ

सासु(स्वर्गीया दुर्गा देवी)

ग्राम पण्डौल डीह टोल(मधुबनी)क

पावन स्मृतिमे



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
बएस : ६९ वर्ष
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)
११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)
१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

१९.बीति गेल समय(उपन्यास)

In English: -
1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ किनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

`

आभार

हमर प्रकाशित पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि। एहि प्रसंगमे प्रोफेसर(डाक्टर) श्री भीमनाथ झा, प्रोफेसर(डाक्टर) इन्द्रकांत झा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामे मैथिली विभागमे प्राध्यापक प्रोफेसर(डाक्टर) रमण झा, प्रोफेसर(डाक्टर) अरुणा चौधरी,विभागाध्यक्ष,विश्वविद्यालय मैथिली विभाग,पटना विश्वविद्यालय,पटना , श्री सुबोधनाथ झा(सेवानिवृत्त आइ.ए.एस) आ हुनकर श्रीमतीजी, श्री केदार कानन, श्री चंद्रमोहन कर्ण,श्री बुद्धिनाथ झा,डाक्टर कीर्तिनाथ झा , आ श्री कामेश्वर चौधरी(सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी,रेल) विशेषरूपसँ उल्लेखनीय छथि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत ।

मैथिलीक इ-पत्रिका विदेहमे हमर रचनासभ निरंतर छपैत रहल अछि । बहुत रास पाठक एहिसँ लाभान्वित भेलाह । एहि हेतु विदेहक यशस्वी संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजी आ हुनकर सहयोगी लोकनिकैं हार्दिक धन्यवाद ।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ) सेवानिवृत्त प्राध्यापक,आर.एम.कालेज सहर्षाक अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

15.01.2022

बीति गेल समय

1

हम ओहि नवनिर्मित मंदिरपर रहए लगलहुँ । ओहिठाम दिनभरि तँ केओ-ने-केओ अबिते रहैत छल । रातिमे अंतिम पूजाक बाद मंदिर शांत भए जाइत छल । हमर सेवादार सेहो सुति रहैत छल । तकर बाद हमर काज शुरु होइत छल । रातिमे सुतबाक हेतु जखने ओछाओनपर जइतहुँ कि लगैत जेना ककरो पदचाप सुनाएल, केओ आबि कए हमर सिरमा लगमे बैसि गेल अछि ।

ओहूराति एकांत होइतहि फेरसँ ओएह पदचाप सुनाएल । लागल जेना कहैत अछि-

"हँ, तँ सुनाउ अपन वृतांत ।"

"कतएसँ सुनबिअ?"

"जेना-जेना फुराइत अछि, तेना-तेना कहैत जाउ । फेर कथाकारसभ ओकरा सरिआ देथिन ।"

"सही कहलहुँ। हम एही छओ-पाँचमे रही जे पहिने की कहिअह । कहीं कहबामे बिसंगतिसँ तोहर मोन ने उचटि जाह।"

"अहूँ कमाल करैत छी। हमरा जे जखन हेबाक होएत से होएत । अहाँ अपन रस्ता तँ पकड़ू ।"

“बड़ बेस । तँ सुनह । जखन थाकि जाह, निन्न लागि जाह तँ इसारा कए दिअह ।”

“फेर ओएह बात । अहाँ अपन बात शुरु करू । हमर चिंता छोड़ू।”

हम शुरु करैत छी । अपन कथा बजैत चलि जाइत छी । बीच-बीचमे ओ मुड़ी हिला दैत अछि,जेना हमर बात बहुत ध्यानसँ सुनि रहल होअए ।

“बात तँ आब बहुत पुरान भए गेलैक । मुदा अखनो लगैत रहैत अछि जेना काल्हिएक घटल होइक । हम भैयाक बिआहमे बरिआती गेल रही । ओहि समयमे बहुत सीमित संख्यामे बरिआती जाइत छल । बर लगा कए मात्र पाँचगोटे रही-हम,बाबूजी,ओझाजी आ पीसाजी । ओही साल प्रथम श्रेणीमे मैट्रिकक परीक्षा पास कए कालेजमे नाम लिखओने रही । भैयाक सारि,रागिनी सेहो हमरे किलासमे नाम लिखओने रहथि । ओना कालेजमे हम हुनका कैकदिन देखिअनि, मुदा गप्प-सप्प नहि होअए । मोन तँ रहए माने मौके नहि भेटए । कालेज अबैत-जाइत काल हम हुनका नित्य देखिअनि । शुरुमे तँ ई सभ अकस्मात होइत छल । मुदा बादमे ई आदति बनि गेल । जँ कहिओ नहि देखाथि,किंवा कोनो कारणसँ हमही कालेज नहि जा सकलहुँ तँ मोन छटपट करए लगैत छल। परेसान भए जाइत छल। जखन भैयाक बरिआती गेलहुँ आ हुनका परिछन कालमे बरक संगे हँसी-ठठ्ठा करैत देखलहुँ तँ हमरा सौंसे देहमे करेंट लागि गेल । तकर बाद तँ राति भरि आओर की-की भेलैक,की नहि से किछु नहि बूझि सकलिऐक । हम बस हुनके आगू-पाछू करैत रहि गेलहुँ ।

भैयाक बिआह नीकसँ संपन्न भए गेलनि । बरिआतीसभक बहुत नीकसँ सत्कार भेलनि । दोसर दिन दूपहर बाद भोजन कए ओ सभ वापस होबए लगलाह । सभकेँ काजर ,चानन लगाओल गेल । लाल-लाल धोती,नव-नव कुरता पहिराओल गेल । ललकापाग पहिराओल गेल । आब बरिआतीसभक प्रस्थानक समय आबि गेल छल कि एतबेमे आङनसँ हमरा बजाओल गेल ।

हम आङन दिस बिदा होइत छी । आङनक मुहथरिएपर चापाकल चलबैत भैयाक सारि भेटि गेलीह ।

“यौ! अहाँ जेबाक लेल किएक धरफराएल छी । अखन तँ अहाँक भैयाक बिआह भेबे केलनि अछि । राति भरि सभ ओहीमे लागल रहल । कनीको गप्प-सप्प नहि भए सकल । आइ रहि जाउ । चारि दिनक बाद जखन द्विरागमन हेतैक तँ कनिआक संगे चलि जाएब । कोनटा लग ठाढ़ि भैयाक सासु ई बात सुनि रहल छलीह। ओ बजैत छथि-

“ई तँ धिआ-पुता छथि । हिनका रहबामे कोन लाज?”

ताबे भैया सेहो पोखरि दिससँ आबि गेलथि । चापाकलपर हाथ मटिआबक रहनि । हमरा ओहिठाम ठाढ़ देखि पुछैत छथि-

“की बात छैक?”

रागिनी हुनका सभटा बात कहलखिन ।

“ठीके तँ कहैत छथुन । आइ रूकि जाह । द्विरागमन दिन सभगोटे संगे-संगे चलब ।”

बात बाबूजी लग गेलनि । ओहो मानि गेलाह ।

“ओहुना द्विरागमनक हेतु ककरो-ने-ककरो तँ आबहि पड़ितैक । ई काज तूंही कए लेबह ।”- बाबूजी कहलखिन ।

आखिर बरिआतीसभ हमरा ओतहि छोड़ि वापस भए गेलथि ।

2

दिनभरिक थकानक कारण थोड़बे कालमे आँखि लागि गेल । पदचाप स्वतः लुप्त भए गेल । हम भोरे उठि दैनिक दिन चर्यामे लागि गेलहुँ । आगन्तुक लोकनिक संगे भेंट-घांट,पूजा-पाठ,भजन -कीर्तन,प्रसाद वितरणमे दिन कोना बीति गेल से नहि बूझि सकलहुँ । सूर्यास्त भेल ,राति आएल । साँझक आरती भेल। प्रसाद लए गौंवासभ अपन-अपन घर चलि गेलाह । हमर सेवादार सेहो सुति गेल । रहि गेलहुँ हम आ हमर एकांत । ओछाओनपर पड़ले छलहुँ कि फेर ओएह पदचाप । ओहने भाव-भंगिमा । काल्हुक कथाक आगू सुनबाक हेतु व्याकुल । हमरा किछु बजबासँ पहिने ओएह पुछि दैत अछि-

“तँ तकर बाद की भेलैक?”

हम सतर्क भेलहुँ ।

“तूहूँ बाटे तकैत छलह की? अखने तँ ओछाओनपर अएलहुँ अछि आ शुरु भए गेलह ।”

“से हम की करू? हमहु तँ एही क्षणक प्रतीक्षा करैत रहैत छी।”

“मुदा तूँ छह के?”

ओ किछु जबाब देबासँ बँचि ठहाका पाड़ए लगैत अछि । ओकर उत्सुकता देखि हम अपनाकेँ नहि रोकि सकलहुँ । कहैत छी-

“ओकर बात बहुत दुखद घटना घटलैक।”

“से की?”

“हमर ज्येष्ठ भाइ साँझमे कलममे पोखरि दिस गेलाह । संगे हुनकर सार लोटा लेने गेलथि । कलम लगीच अएलाक बाद ओ लोटा हुनका सुनझा कए अपने फटकी भए गेलथि । भैया कलम गेलाह। ताबे चारूकात अन्हार भए गेल रहैक । तेँ एकांत देखि लगेमे बैसबाक उपक्रम करिते चिचिआ उठलाह-

“काटि लेलक, काटि लेलक ।”

चित्कार सुनि हुनकर सार आगू बढ़लाह । भैया सेहो कलमसँ बाहर भगलाह । थोड़बे आगू बढ़लापर दुनूगोटेक भेंट भेलनि -

“की भेल?”

“लगैत अछि किछु काटि लेलक ।”

ओ अपन पैर सारकेँ देखबैत छथि । अंगूठा लगसँ खून टपकि रहल छलनि । हुनकर सार घबड़ा गेलाह। ओ जोर-जोरसँ चिकरए लगलाह। हल्ला सुनि कए गामक लोकसभ दौड़ल। हुनकर ससुर सेहो दौड़लाह । आङनसँ स्त्रीगणसभ सेहो दौड़लीह ।

एहि तरहें थोड़बे कालमे ओहिठाम लोकक करमान लागि गेल । भैया बेहोस भए गेल रहथि । हुनका उठा-पुठा कए दरबाजापर आनल गेल। साँपक विष उतारबाक हेतु तरह-तरहक ब्योंत कएल गेल । चटिबाहसभकेँ बजाओल गेल । ओझा-गुनीसभ सेहो अपना भरि प्रयास करैत रहलाह । मुदा हुनकर हालत

बिगड़िते गेलनि । हुनकर सासु,भगवती घरमे छाती पिटैत रहि गेलीह । मुदा कोनो सुनबाइ नहि भेलनि । दूपहर राति होइत-होइत ओ निष्प्राण भए गेलथि । एहि तरहें बिआहक दूदिन भीतरे नवकनिआक सोहाग उजड़ि गेलनि । घरमे सभ पेटकुनिआ दए देलक । हमर बाबूजी तँ ई समाचार सुनिते बेहोस भए गेलाह । सौंसे गामकें जेना पक्षाघात भए गेलैक । सभक मोनमे दुख आ चिंता भरि गेलैक ।

"आब की होएत?"

"नवकनिआक संगे तँ बहुत अन्याय भेलैक ।"

"ओकर बिआह छोटभाइसँ कए देल जाए ।"

एहि तरहें तरह-तरहक बातसभ गाममे होइत रहल ।

गयामे भैयाक श्राद्ध कएल गेल । इहो काज हमरे हाथे भेल। जेना-तेना श्राद्धक विध-विधान पूरा कएल गेल । गयामे पोखरिसभक हाल देखि ओतए बैसबाक मोन नहि होइत छल । चारूकात दुर्गंध करैत रहैत छल । एहनेमे जेना-तेना पिंडदान कएल जाइत छल । ओहिठाम पंडासभक क्रूड़ता देखैत बनैत छल । ओकरासभकें तँ बस टाका चाही । एना कए दिऔक,ओना कए दिऔक ,दैत चलिऔक । एतबो विचार नहि जे केहन मामिला छैक। हमरा संगे हमर पितिऔत आ गामक दूगोटे आओर आएल रहथि । गयामे श्राद्ध कए हमसभगोटे गाम वापस आबि गेलहुँ । हमर माए-बाबूजी तँ गामे पर बेहोस पड़ल छलाह । हुनकासभक हालत देखि सभ चिंतिति रहथि ।

समय बीतए लागल । लोकसभ अपन-अपन काजमे लागि गेल । मुदा एहि घटनाक बाद हमर माए-बाबूजी फेर कहिओ सुखी

नहि देखेलाह । जीबाक छलनि,से जीबैत रहलाह । मुदा मोनमे उत्साह नहि,प्रसन्नताक तँ बाते नहि । नवकनिआ जकर पति द्विरागमनोसँ पहिने बिआहक दू दिनक बादे मरि गेल होइक,तकर हालत सोचल जा सकैत अछि । एहि बीचमे हम एकाध बेर भैयाक सासुर गेबो केलहुँ । हुनका लोकनिक मनोदशा देखि बहुत चिंतित भए गेलहुँ । माए-बाबूजी तँ परेसान रहबे करथि । हँ, एकटा बात।

“की?”

जखन कखनहुँ हम भैयाक सासुर जाइ तँ भौजीमे उत्साहक संचार भए जानि । ओ हमरासँ नीकसँ गप्प कए लेथि । रागिनी सेहो हमर स्वागत करथि । लागए जेना किछु कहए चाहैत छथि मुदा कहि नहि पाबि रहल छथि । एकदिन हम अपन दरबाजापर बैसल रही।

“तखन?”

“देखलिऐक जे भैयाक ससुर तीनगोटेक संगे आएल छथि । बाबूजी हुनका संगे बड़ी काल धरि गप्प कए रहल छथि । हम गाहे-बगाहे हुनका लोकनिक गप्प सुनैत रही । मुदा स्पष्ट किछु नहि बूझि सकलहुँ । थोड़े कालक बाद ओ सभ बिदा होबए लगलाह तँ हमरा बाबूजी बजओलथि-

“ई सभ किछु कहए चाहैत छथि?”

“की?”

“से हुनकेसँ सुनि लएह ।”

"हमसभ चाहैत छी जे रानीक बिआह अहींसँ कए देल जाए । सभकिछु अहाँकेँ बूझले अछि । घरक बात घरेमे रहि जाएत आ ओकर जीवन सेहो बरबाद होबएसँ बँचि जेतैक ।"

एकाएक एहन प्रस्तावक हमरा उमीद नहि छल। हम चुप्प रहि गेलहुँ। किछु बजले नहि होअए । हमरा चुप्प देखि बाबूजी कहलखिन-

"अहाँसभ ई चिंता हमरापर छोड़ि दिअ । हम एकरा मना लेब ।"

ओ सभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलाह । जाइत-जाइत हमरा बहुत आशीर्वाद दैत गेलाह।

3

आखिर हमर बिआह रानीसँ संपन्न भेल । रानी बहुत प्रसन्न रहथि । हुनकर जीवन एकबेर फेर हरिआ गेल छलनि । मुदा हुनकर बहिन रागिनीकेँ ओतेक प्रसन्न नहि देखिऐक । कारण किछु बूझेबे नहि करए । पहिने ओ कतेक रमनगर रहैत छलि । हँसी-मजाक करैत छलि । मुदा आब जखन-तखन गुम-सुम रहैत छलि। ओकर स्वभावमे एहन परिवर्तनक कारण नहि बुझाइत छल ।

रानी आ रागिनी देखएमे एक्के रंग छलि । जँ एकठाम ठाढ़ि भए जाइ तँ चिन्हनाइ मोसकिल । देखबा सुनबामे दुनूगोटे बहुत सुन्दरि छलि । मुदा दुनूक स्वभाव शुरुएसँ दू रंग रहैक । रानीकेँ पढ़बा-लिखबामे कोनो रूचि नहि रहैक । ओ माएक संगे घरक काज करबामे बहुत प्रसन्न रहैत छलि । जखन कि रागिनी पढ़बामे

बहुत तेजगर छलि । घरक काजमे हुनकर मोन नहि लगैत छलनि। एकहि ठाम दुनू बहिनमे एतेक अंतरसँ परिवारमे सभ चकित छल।

रानीक संगे हमर बिआह हमर जीवनकेँ,हमर सोचकेँ,जीबाक अंदाजकेँ बदलि देलक । रानी एकटा अद्भुत महिला छलि। हुनकर रग-रगमे हमरा प्रतिए अनुराग भरल रहनि । बिआहक बाद शुरुमे हमरा मोनमे कनी संकोच,कनी दुविधा छल,असमंजस छल । से सभ एहि द्वारे जे हमर ओ भौजी छलीह। मुदा अकस्मात एहन घटना घटि गेल जे सभ किछुकेँ बदलि देलक। हमरा सभक आपसी संबंधकेँ तँ बदलिए देलक ।

बिआहक बाद हम मास-मास दिन सासुरेमे पड़ल रहैत छलहुँ । ओमहर कालेजमे किलास सेहो चलैत रहैत छल । कहिओ गेलहुँ,कहिओ नहि गेलहुँ,कहिओ ककरो मारफत हाजिरी लगबा लेलहुँ । एहि समयमे रागिनी सेहो हमरे किलासमे पढ़ैत छलीह । हमरे संगे कैक बेर कालेज जाइत छलीह । मुदा सालक-साल चलि रहल एहि निकटतामे अतरंगता आबि गेल,स्वभाविके । मनुक्ख कोनो पाथर तँ अछि नहि । जँ केओ दू व्यक्ति एक-दोसर लगमे रहत तँ कोनो-ने-कोनो प्रकारक संबंध विकसित हेबे करतैक , चाहे ओ जाहि प्रकारक होइक । मुदा रागिनीक संगे हमर संबंध एतेक मधुर भए जाएत तकर अनुमान ने हमरा रहए ने हुनका रहल हेतनि। मुदा एहि घटनाक्रमसँ रानीक मोनमे चिंता होबए लागल रहनि । तथापि, ओ किछु बाजथि नहि । साइत सोचथि जे समयक संगे सभ किछु सामान्य भए जेतैक । आखिर कालेजक पढ़ाइ खतम भेलैक। बीए अंतिम वर्षक परीक्षा भेलैक । हम दुनूगोटे संगे परीक्षा

देलहुँ । हम आ रागिनी एकहि संगे बीएक परीक्षा पास केलहुँ । बीए परीक्षामे हमरासँ बहुत बेसी नंबर रागिनीकेँ आएल रहनि ।

आगूक कोना की कएल जाए ? एहि बातपर बहुत दिन धरि घमरथन होइत रहल । हमर घरक स्थिति तेहन नहि रहि गेल छल जे आगूक पढ़ाइ करी । घर-गृहस्थी चलेबाक हेतु नौकरी करब जरूरी छल । लगपासमे कोनो जोगार नहि भए सकल । हेबो कतए करैत? अपना ओहिठाम ने कोनो कारखाना,ने कोनो उद्योग । हारि कए हम नौकरी करबाक हेतु असगर दिल्ली बिदा भेलहुँ। सोचलहुँ जे पहिने कतहु नौकरी पकड़ि लेब,फेर नीक डेरा लेब । तकर बाद परिबारोकेँ लए अनबैक ।

दोसर दिन साँझमे हम दिल्ली पहुँचलहुँ । हम दिल्ली अएलहुँ । दिल्ली आबि तँ गेलहुँ मुदा अबिते-अबिते एहिठामक द्रुतगामी जिनगीमे हम जेना हरा गेलहुँ । एक-एकटा चीज नव लगैत छल । बसमे चढ़ब,चढ़बासँ पहिने टिकटक हेतु पाँति लगाएब , कतहु बससँ उतरबासँ पूर्व एक ठहराव पहिनेसँ तैयारीमे लागि जाएब ,बसमे सीटक हेतु धक्कम-धुक्की करब । एहूसभसँ बेसी चिंताजनक होइत छल ककरो जेबी कटि गेनाइ। बसक भीड़मे के पाकेटमार अछि से चिन्हनाइ बहुत मोसकिल । कारण सभ तँ नीक-नीक परिधानमे सजल-धजल रहिते छल । फेर ओ सभ तँ अपन काजमे ततेक माहिर रहैत छल जे कनिको हवा नहि लागए दैत छल । जखन बससँ उतरि जाए तँ पता लगैक जे जेबी साफ भए गेलैक । एकटा महिला डांरमे गुल्लक बन्हने छलि । गुल्लक लटकले रहि गेलैक आ सभटा टाका निकालि लेलकनि । एहूसँ दुखद होइत छल जखन कोनो महिला संग केओ सहयात्री किछु

अनट करैत । बसमे केओ किछु नहि बजैत । एनासन जेना की ओ किछु सुनिते नहि छल,देखिते नहि छल । करए की? महानगरक जीवनमे सभकेँ अपन मजबूरी रहल हेतैक । नित्यप्रति एहन घटनासभ बसयात्राक क्रममे होइते रहैत छल ।

हमरा एही बीचमे आँखि लागि गेल । ओ पदचाप अबैत तँ सुनाइत छल मुदा जाइत काल कहिओ नहि सुनाएल। हमर आँखि लगिते सभ किछु ठहरि गेल जेना की सीनेमाक बीचमे मध्यांतर भए गेल होइक । ई क्रम बहुत दिन धरि चलैत रहल । रातिमे जहाँ सुतबाक प्रयास करी कि ओ हाजिर भए जाइत छल। एहि तरहें हमर कथा वृतांत आगू बढ़ैत रहल ।

4

हमरा लेल दिल्लीक बस यात्रा सगुनिआ भेल । केना? से कहैत छी। एकदिन हम रातिमे बसमे चढ़ले रही कि आगूसँ कैकटा सिपाहीके चढ़ैत देखलिऐक । ओकरासभकेँ देखि बस ठाढ़ भए गेल । चारूकातसँ सिपाहीसभ बसकेँ घेरि लेलकैक । पुलिससभ एक-एकटा यात्रीक जाँच करए लागल। ओकर सामानसभक सेहो जाँच करए लागल। यात्रीसभकेँ भेलैक जे टिकटक जाँच भए रहल अछि । मुदा एहिठाम तँ बात किछु आओर रहैक । पुलिसकेँ गुप्त सूचना रहैक जे ओहि बससँ किछु तस्करसभ यात्रा कए रहल अछि। बसमे यात्रीसभक जाँच चलिए रहल छल कि हमर बसठहराव आबि गेल । हम पाछू बाटे बससँ उतरि गेलहुँ । बस खुजि गेल ।

हम आगू बढ़िए रहल छलहुँ कि ताबतेमे केओ एकटा झोरा बसमेसँ फेकलक । ओ झोरा ठीक हमरा सामनेमे खसल । ताबे ओ बस दस लग्गा आगू बढ़ि गेल छल । हम ओहि झोराकेँ उठा लेलहुँ आ बड़ीकाल धरि प्रतीक्षा करैत रहि गेलहुँ जे केओ आएत आ ओहिपर अपन दाबी करत। मुदा जखन ओहि झोराक मालिकक कोनो जानकारी नहि भेटल तँ हारि कए हम ओहि झोरा लेने अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ। डेरामे ओकरा पेटीमे राखि देलिऐक आ सुति रहलहुँ । दोसर दिन भेने हम ओही समयमे फेर ओही बसठहरावपर अएलहुँ । मुदा केओ ओहि झोराक बारेमे खोज-पुछारी नहि केलक । एहि प्रकारे कैकदिन धरि हम बसठहरावक चक्कर लगबैत रहलहुँ । मुदा जखन कोनो एहन व्यक्ति नहि भेटल जे ओहि झोराक मालिक होअए तँ हम प्रयास छोड़ि देलहुँ । तकर बाद हम ओहि झोराकेँ अपन पेटीमे राखि देने रहिऐक।

कैकदिनक बाद उत्सुकता भेल जे देखिऐक जे ओहिमे आखिर छैक की? हम पेटीमे सँ झोरा निकाललहुँ आ ओकर गिरह खोलि देलिऐक । झोरामे जे देखलहुँ से देखिते रहि गेलहुँ । ओहिमे तरह-तरहक रत्न,सोनाक गहना आ थाकक-थाक रुपैया भरल छल। आब तँ हम बहुत परेसानीमे पड़ि गेलहुँ । एतेक मूल्यवान वस्तुसभकेँ सुरक्षित कोना राखल जाए? जकरे कहबैक सएह जानक पाछा पड़ि जाएत । इहो आश्चर्य होअए जे केओ एतेक मुल्यवान वस्तुसँ भरल झोराकेँ किएक फेकि देलक? बादमे अखबारसँ पता लागल जे किछु तस्करसभ ओहि बससँ यात्रा करैत पकड़ल गेल अछि । संभवतः ओहीमेसँ केओ जान बँचेबाक हेतु ओहि झोराकेँ नीचाँ फेकि देलक ।

कहबी सही छैक जे भगवानकेँ जखन देबाक होइत छनि तँ चार फारि कए दैत छथिन । हमरा संगे सएह भेल छल। हम झोरामे भरल ओहि अकूत धनक उपयोग कए दिल्लीमे नीकसँ ब्यवस्थित भए गेलहुँ । दिल्लीसँ सटले गुरुग्राममे एकटा कारखाना बैसेलहुँ , मकान बनेलहुँ । ओहि बीच गामसँ रानीक संगे रागिनी सेहो हमर गुरुग्राम स्थित घरपर आबि जाइत गेलीह । रागिनीक इच्छानुसार हुनकर नाम गुरुग्रामेमे एमबीएमे लिखा देलिअनि। संगे ओ हमर कारखानाक काज सेहो गाहे-बगाहे देखैत रहलीह । हमर घरमे सभटा सुबिधा छल । नोकर-चाकर छल । ककरो कोनो परेसानी हेबाक सबाले नहि रहैक । रानीक समय बहुत नीकसँ कटए लगलनि । एहि तरहें साल भरिक भीतरे हमर दुनिआ बदलि गेल छल।

रागिनीक बेसी समय कालेजमे बीति जाइत छलैक । तकर बाद संगीसभक संगे घुमबा-फिरबामे व्यस्त रहैत छलि। कालेजसँ घर वापस अबैत-अबैत ओ बहुत थाकि जाइत छलि । हमहु तँ ब्यस्ते रहैत छलहुँ । तेँ कैक बेर तँ चारिदिन-पाँचदिनपर भेंट होअए । मुदा जखन करवनो ओ भेटितथि तँ बहुत नीकसँ समय कटैत । कालेजक कैकटा मनोरंजक प्रसंगसभपर चर्च होइत । हमहु अपन अनुभवसभ कहितिऐक । एहिसभसँ रागिनीक प्रति हमर आकर्षण बढ़िते गेल । से कोनो आइसँ छल से बात नहि । जखन हमसभ मधुबनीमे पढ़ैत रही तखनेसँ किछु-ने-किछु चलैत रहैत छल । मुदा एहि बीचमे ततेक तरहक उठा-पटक भेल जे की-कतए गेल तकर कोनो ठेकान नहि रहल । हमरासभकेँ बेसीकाल गप्प करैत भए जाइत तँ रानी कैक बेर चिंतिति भए जाथि । हमरासभ लग आबि कए बैसि जाथि । हुनकर माथपर चिंताक

डरीर स्पष्ट देखल जा सकैत छल । फेर ओ जल्दीए विसर्जित भए जाइत। हमसभ अपन-अपन काजमे लागि जाइ ।

हमर माए-बाबूजी गामे रहथि । ओ सभ कतबो आग्रह केलिअनि गामसँ टस सँ मस नहि भेलाह । जखन ओ सभ गामेमे रहबाक हेतु अड़ि गेलाह तँ प्रयास केलहुँ जे हुनकासभक हेतु गाममे नीक मकान बना दिअनि । मुदा हमर बाबूजी ताहू हेतु तैयार नहि भेलाह । हम एहि हेतु कैकबेर प्रयास केलहुँ । मुदा हुनकर एक्के जबाब रहेत छल –"हम सभ एही घरमे ठीक छी । ब्यर्थमे झंझट नहि बढ़ाबह, फेर हमसभ छीहे कतेक दिन? तकरबाद एहिठाम के रहत?" जँ किछु करबेक छह तँ जमीन किनि लएह जाहिसँ भविष्य सुरक्षित रहत । हम हुनकर बात मानि गाममे खेतिहर जमीन किनए लगलहुँ । जखन जे कोनो जमीन बिकाइ हम सभसँ बेसी दाम दए किनि लैत छलहुँ । एहि तरहें हमरासभकेँ गामोमे किछु संपत्ति भए गेल । मुदा घर पुरनके छल ।

आर्थिक संपन्नता होइतहि समाजमे हमरा लोकनिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ि गेल । जखन करवनहु हम गाम जाइत छलहुँ हमरा लगमे लोकक करमान लागि जाइत छल । दिन-राति चाहक केतली चढ़ले रहैत छल । एकटा गुट गेल तँ दोसर आएल । ई प्रक्रिया भोरसँ साँझ धरि चलैत रहैत छल । एही बीचमे कैकगोटे अपन दिक्कति सेहो कहितथि । हम यथासाध्य हुनकासभकेँ मदति कए दिअनि । कलियुगक कामधेनु थिक टाका । से जहाँ हाथ लगितनि की हुनकरसभक मोन खनहन भए जाइत । हमरो ई नीक लागए । ककरो सुखी देखि मोनमे संतुष्टि होअए । सोची जे ककरो काज तँ अएलहुँ । टाका दए कए बिसरि जाइ । ओकर वापसीक

स्वप्नोमे उमीद नहि राखी ,ने ताहि दिसामे कोनो प्रयास करी । तैं शांतो रही। जँ ताहि फिराकमे पड़ितहुँ तँ दिन-राति झंझटमे पड़ल रहितहुँ । गामघरक ई पुरान रेबाज थिक जे टाका दिऔक मुदा वापस नहि मंगिऔक ।जँ तगादा केलिऐक तँ हुनकासँ बेसी खराब केओ नहि होएत।

5

एहि प्रकारें हमरा लोकनिक समय बहुत नीकसँ बीतए लागल । गामसँ दिल्ली धरि प्रशंसकक पाँति लागल रहैत छल। समय कोना कटि जाइत छल से पता नहि चलए । रागिनीक एमबीए पूरा भए गेलनि । ओ हमरे कारखानाक काजमे लागि गेलीह ।एहिसँ हमरा बहुत उसास भेल ।एहि बीचमे रानीक मोन करखनो काल खराब रहए लगलनि। डाक्टर लग लए गेलिअनि । डाक्टर जाँच-पड़तालक बात बहुत सुखद समाचार देलक । रानी गर्भवती रहथि। हमसभ एहि समाचारसँ बहुत उत्साहित भेल रही। मुदा की भेलैक,की नहि छठम मासमे जा कए हुनकर गर्भपात भए गेलनि। रानी एहि बातसँ बहुत दुखी भेलथि । हुनकर स्वास्थ्य गड़बड़ा गेलनि ।हमसभ बहुत बुझा-सुझा कए हुनकर मनोदशाकेँ बदलबाक प्रयास करी ।मुदा ओ रहि-रहि कए उदास भए जाथि । हुनकर मनोदशा किछु दिनक बात तखने बदललनि जखन किछु दिनक बाद फेरसँ संतानक जोग भेलनि ।मुदा इहो प्रसन्नता बहुत दिन नहि रहलनि। फेर ओएह हाल भेल । असमयमे हुनकर गर्भपात भए गेलनि ।ई बात कैक बेर भेल ।एहिसभसँ रानी बहुत

कमजोर भए गेलीह । कहि नहि कोन-कोन भगवानक कबुला ने कएल गेल । मुदा बात नहि बनल । डाक्टरक कहब रहैक जे हुनकर खूनमे किछु समस्या छनि जाहिसँ संतानक गर्भपात भए जाइत छैक । तकरबाद बहुत प्रयास केलहुँ जाहिसँ ओ ठीक भए जाथि । कोन-कोन डाक्टर लग नहि गेलहुँ । वसंतपंचमीक दिन सुल्तानपुरसँ गंगाजल लए बाबा बैद्यनाथक दरबारमे पैरे गेलहुँ ।

बाबा बैद्यनाथ हमरालोकनिक प्रार्थना सुनलनि । हुनका फेर संतान होनहारी भेलनि । एहि बेर शुरुएसँ हमसभ सतर्क रही। हुनका गुरुग्रामक बहुत नीक अस्पतालमे पूर्ण विश्राममे राखि देल गेलनि। सभकेँ आशा रहैक जे एहि बेर मामिला सम्हरि जेतैक । आठ महिना समय ठीक-ठाक बीति गेलनि । निश्चित समयसँ दू सप्ताह पहिने संतान हेबाक संभावना भेलैक । शल्यक्रिया द्वारा पुत्रक जन्म भेल । मुदा की भेल,की नहि जे डाक्टर लोकनिक अथक प्रयासक बादो संतानक जन्मक किछुए कालक बाद रानीक सौंसे देह अकड़ि गेलनि । ओ थोड़बे कालक बाद एहि दुनिआसँ चुपचाप चलि जाइत रहलीह । दुर्भाग्यवश,हम हुनकासँ अंतमे किछु गप्पो नहि कए सकलहुँ । ओ अपन नेनाकेँ सेहो नहि देखि सकलीह । रागिनी ओहि जनमौटी बच्चाक संगे अस्पतालमे रहलीह आ हमसभ रानीक अंतिम संस्कार हेतु बिदा भेलहुँ ।

एहि दुखद वृतांतक बाद हमरा लोकनि अत्यंत दुखी भए गेलहुँ । कैकदिन धरि हमरा बकोर लागि गेल। माथा सुन्न भए गेल। किछु सोचि नहि पाबी । ठाढ़ नहि भेल होअए। माथामे घुरमी लागए । बुझाए जेना ठामहि खसि पड़ब । विश्वासे नहि होअए जे एहनो भए सकैत अछि । हमरा तखनो होअए जे रानी निन्नमे छथि

आ थोड़े कालक बाद उठि जेतीह । तेहनमे जे लोकसभ हमरा अंतिम संस्कारक हेतु विध-व्यवहार करए कहथि,हमरा स्नान करए कहथि,चितामे अग्नि देबाक हेतु कहथि,से सभ बहुत विचित्र लागए। हम प्रतिकार करबाक स्थितिमे नहि रही। जे-जे लोक कहैत गेल,से-से करैत गेलहुँ । बेचेन मनसँ सभ किछु करैत रहलहुँ । मुदा मोनमे शांति नहि रहए ।

एहने हालतमे हम हुनकर चितामे आगि लगओलहुँ । थोड़बेकालमे चितामे हुनकर देहकेँ जड़ैत देखलहुँ । हमर सौंसे दुनिआ जड़ि कए खाक भए गेल । हम अतिसए उदास भए कातमे ठाढ़ रही कि लागल जेना चितासँ रानी बाहर भेलीह ,हमर गट्टा पकड़ि लेलीह आ कहैत छथि- “अहाँ पुरुख छी । एहि तरहें कानब अहाँकेँ शोभा नहि दैत अछि । हम तँ एकटा संतना छोड़िए गेल छी। अहाँ ओकर नीकसँ पालन-पोषण करू । अहाँक संग देबाक हेतु रागिनी अछिए । ओहो अहाँक प्रतीक्षा कए रहल अछि । साहसपूर्वक आगू बढ़ू ।”-से कहि जेना ओ विलुप्त भए गेलीह । दाह संस्कार पूर्ण भए गेल छल । सभगोटे पंचकठिआ दए ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ । आगू-आगू हम आ हमर पाछू-पाछू शेष लोकसभ एकस्वरमे कहैत रहल -“रामनाम सत्य है... ।”

घर वापस आबि कए बाहर राखल चौकीपर पड़ि रहलहुँ । करवन कोन विध केलहुँ किछु ध्यानमे नहि रहल। चौकीपर पड़ले-पड़ल निन्न लागि गेल । एहि तरहें दिन बीति गेल। साँझमे किछुगोटेक आबाज सुनि निन्न टुटल ।

ई दुखद समाचार हमर माए-बाबूजीकेँ भेटलनि । हमर सासु-ससुर सेहो गुरुग्राम स्थित हमर आवासपर अएलथि । ओहिसँ

पहिने हमर माए बाबूजी एकटा गौंवाक संगे एतए आबि गेल रहथि। रानीक असामयिक निधनसँ सभ दुखी रहए । लगैक जेना संपूर्ण परिवारकेँ लकबा मारि देलकैक । ककरा के बुझबितैक? सभ अपने परेसान छल,दुखी छल । मुदा रागिनीक हालत सभसँ बेसी खराब छलैक।

हमर सासु-ससुरक इच्छा रहनि जे रागिनी अपन डेरा फराक राखि लिअए । रानीक देहावसानक बाद स्थिति जरूर बदलि गेल छल । मुदा रागिनी ताहि हेतु मना कए देलकैक ।

“एहन हालतमे हिनकासभकेँ असगर छोड़ि देब उचित नहि अछि।”

“बात तँ ठीके कहैत छह । मुदा आइ-ने-काल्हि कोनो व्यवस्था तँ बनबहि पड़तनि । तूँ कतेक दिन एतए रहि सकबह?”- हमर ससुर कहलखिन ।

“समयसँ सभ किछु अपने ठीक भए जेतैक । थोड़ेक दिन धैर्य रखनाइ जरूरी अछि । हमरो आ अहूँ सभकेँ । एहिठामक माहौल ठीक होबए दिऔक फेर एहि विषयपर विचार करब ।”

हमर ससुर चुप्प भए गेलाह । किछुदिनक बाद ओ सभ वापस गाम चलि गेलाह ।

6

रानीक देहावसानक बाद हमर आँखिसँ निन्न हरा गेल । कतेको राति जगले रहलहुँ । लगातार निन्न नहि हेबाक कारण स्वास्थ्य खराब होइत गेल । भूख लगबे नहि करए । ककरोसँ गप्प

करबाक मोन नहि होअए । लगैत छल जेना सभ किछु ठहरि गेल होअए । बुझेबे नहि करए जे आब जीवन कोना चलत?कारखानाक कारबारमे कोनो रूचि नहि रहि गेल रहए । कारखाना सम्हारब,टेल्हक देखरेख करब ,ऊपरसँ घर चलाएब,सभटा काज रागिनी करथि। एक आदमी एतेक भार कतेक दिन धरि सहि सकैत? आखिर ओहो दुखित भए गेलि । पता नहि कोन बोखार धेलकनि जे उतरबाक नामे नहि लिअए? बहुत मोसकिलसँ ओ स्वस्थ भेलि । डाक्टर,बैद जखन किछु काज नहि कए सकल तँ हनुमानजीकेँ गोहरेलहुँ। मंगल दिन रहैक । ओही राति रागिनीक बोखार उतरि गेलनि । दू-तीन दिनमे तँ ओ पूर्ववत सभकाज करए लागलि । हम हनुमान मंदिर जा कए लड्डू चढ़ओलहुँ । हनुमानजीकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद देलिअनि ।

रागिनी हमर कारखानाक काज बहुत दिनसँ देखैत छलि । मुदा आब जिम्मेबारी बहुत बढ़ि गेल रहैक । हम ओमहर नामो लेल नहि जाइत छलिऐक । तकर दुष्प्रभाव कारखानाक माहौलपर पड़ल । कर्मचारीसभ काज करबामे आनाकानी करए । असलमे बेसी कर्मचारी तँ अपने ओहिठामक रहैक । सभकेँ होइक जे ओएह मालिक अछि । से बुझबा लेल कोनो हर्जा नहि छलैक । मुदा अधिकारक संगे कर्तव्यक ध्यान नहि रहैक । ई नहि सुझाइक जे जँ काल्हि भेने ई कारखाना बंद भए गेल तँ ओकरसभक आजिवीकाक की हेतैक?परिस्थिति देखि युनियनबाजी सेहो फेरसँ होबए लागल । हम जाबे आबी-जाइ ताबे ककरो साहस नहि होइक जे हमर विरोधमे झंडा उठाएत । मुदा कारखानासँ हमर अनुपस्थितिक लाभ उठबैत अपनो लोकसभ गड़बड़ करए लागल। जखन-तखन कारखानामे हड़ताल होबए लागल । कारखानाक आमदनी घटए

लागल । घरक परिस्थिति तँ प्रतिकूल रहबे करए । ऊपरसँ ई अतिरिक्त समस्या उठि रहल छल । मुदा कएल की जाए?

कैक रातुक जगरनाक बाद ओहि राति ओछाओनपर जाइते निन्न पड़ि गेल । एक निन्न सुतबो केलहुँ । मुदा तकरबाद जे निन्न टुटल से टुटले रहि गेल । एहन परिस्थितिमे मोनमे तरह-तरहक प्रश्न-प्रतिप्रश्न उठए लागल ।

“हम जनैत छी जे तू बहुत परेसानीमे पड़ि गेल छह । मुदा एना हाथ पर हाथ धए बैसलासँ तँ हलात खराबे होइत जाएत । तोहर की हाल छह ताहिसँ ककरा मतलब छैक? लोक आएल-गेल । सहानुभूति किछु शब्द दए अपन कर्तव्यक इतिश्री कए लेलक । तूँ पेटकुनिआ धेने तहिआसँ पड़ल छह । मुदा एनामे तोहर परिवारक की भविष्य छह? ओहि टेल्हक की होएत? तोहर वयोवृद्ध माता-पिताक पालन-पोषण के करतनि?”

“बात तँ तूँ बहुत वाजिब कए रहल छह । मुदा हम करी तँ की करी? हमहु बेबस छी । मोन संग नहि दए रहल अछि। देह आ मोनमे समन्वय भइए नहि पाबि रहल अछि । काजक बात तँ छोड़ह ।”

“ई सभ तोहर मोनक कल्पित समस्या मात्र थिक । कोनो असगरे तूंही परेसानीमे पड़लह अछि से बात तँ अछि नहि? अगल-बगल घुमि कए देखहक । ई दुनिआ कष्टसँ भरल छैक । राजा,रंक,फकीरसभ परेसान अछि । सभकेँ किछु-ने-किछु झंझट छैहे। केओ निचेन नहि अछि ।”

“तँ हम की करी?”

“साहस करह । काजपर जाह । कारखाना बरबाद भए रहल छह। ओकरा फेरसँ पटरीपर आनह । माता-पिताकेँ साहस दहुन ।

नान्हिटा टेल्ह छह तकरा पैघ करबाक ब्योंत करह । रागिनी सेहो तोहर मुँह देखैत रहैत छह । ओकरो तोहर प्रश्रय चाही । जखन तूँ अपना-आपकेँ ठीक करबह तकर बादे ने ककरो मदतिओ करबहक।"

"ठीक छैक । तूँ बहुत वाजिब कहि रहल छह । हम प्रयास करैत छी ।"

हमरा फेरसँ निन्न लागि गेल । भोरे उठितहि हमरा रातुक बातसभ मोन पड़ए लागल । हम रागिनीकेँ बजबैत छी । मुदा पता लागल जे ओ तँ भोरे कारखाना चलि गेलि ।

7

हम कारखाना अएनाइ-गेनाइ फेर शुरु केलहुँ । अपना मोनकेँ बुझबैत काजमे लागि गेलहुँ । कारखानाक काज फेरसँ पटरीपर आबए लागल । किछु कर्मचारीसभ काज छोड़ि देने छल। ओहोसभ दोबारा काज शुरु कए देलक । कर्मचारी युनियनक नेतासभसँ लए-दए किछु समझौता कएल गेल । ओ सभ काजमे सहयोग करबाक आश्वासन देलक ।

कारखानाक काजमे मदति करबाक हेतु दिवाकरकेँ सेहो गामसँ बजा लेलिऐक । दिवाकर कद-काठी बहुत मजगूत छल । पहलमानीमे ओकर मोन बहुत लगैत छल । गाम-घरमे कोनो झगड़ा होइतैक ओ ओहिठाम जरूर पहुँचि जाइत । ओ हमरे इसकूलमे

पढ़ैत छल । मुदा कालेजमे ओ पाछू भए गेल । लगातार दू साल धरि फेल करैत रहल। ताबे हम आगू बढ़ैत रहलहुँ । गुरुग्राम अएलाक बाद ओ कारखानामे काजो करए आ संगहि अंशकालिक पढ़ाइ सेहो ।

दिनमे आ रातिओमे हम रागिनीकेँ कैकबेर देखिऐक,गप्पो होअए मुदा हमर दृष्टि बदलि गेल छल । लागए जेना हमरसभक आपसी संबंध ठहरि गेल अछि । रागिनीक मौनकेँ थाहब मोसकिल भए रहल छल । ओकर मोन सदिखन दोसर रंग लगैत छल । जँ कखनो ओकर टेबुल लग जेबो करी तँ ओ अन्यमनस्क बुझाइत। बातमे कोनो लसि नहि । कैकबेर ओकरा दिवाकरक संगे कैंटिनमे बैसल देखिऐक । ओकरा संगे हँसी ठठ्ठा करैत सुनिऐक । ताहिबातसँ हमरा तामस होइत छल । से हेबाक नहि चाहैत छल । कारण रागिनी हमरासभक अत्यंत कठिन समयमे संग देने छलि। नान्हिटा जनमौटी बच्चाक जान बचओने छलि। दिन-राति अस्पतालमे ओकरा ओगरने रहैत छल । जखन रत्नेश घर आबि गेल तखनहु ओ पूर्ण समर्पणसँ ओकर रक्षा करैत छलि। मुदा अचानक ओकर स्वभावमे परिवर्तन देखि हम घोर असमंजसमे पड़ि गेल रही। बुझेबे नहि करए जे ई सभ कोना भेल?

दिवाकर हमर छोट भाइ छल । केओ आन रहितए तखन तँ ओकरा हम कहिआ ने कारखानासँ हिसाब-किताब कए देने रहितिऐक । कारण ओकर रागिनीक संग बढ़ैत निकटताक अंदाज हमरा बहुत पहिने भए गेल रहए । दुनूगोटेक कारखानामे बैसबाक स्थान लगीचेमे रहैक । जखने मौका होइत दिवाकर रागिनीक कोठरीमे पहुँचि जाइत । कैकबेर रागिनी ओकरा लग बैसलि

देखाइत छलि । मुदा हम एकरा बेसी महत्व देब उचित नहि बुझलहुँ। फेर ओहो सभ तँ मनुक्खे अछि । एकठाम रहलाक बाद किछु-ने-किछु आपसी संबंध हेबेक छलैक। हम कारखानाक काजमे लागल रहैत छलहुँ । ओही काजे हमरा कैकठाम जाए पड़ैत छल । तखन तँ इएहसभ सभटा काज देखैत छल ।

8

एकदिन हम कारखानाक निरीक्षण करैत छलहुँ । भोजनालय लग सँ जाइत रही तँ दिवाकर आ रागिनी आपसमे गप्प करैत बुझाएल । हम उत्सुकतावश कान पाथि कए सुनए लगलहुँ । रागिनी कहि रहल छलि -

"रानी बहिनकेँ आकस्मिक चलि गेलाक बाद हमर मोनमे एकदम उचाट भए गेल अछि । हम चाहैत छी जे कतहु एकांतमे चलि जाइ। एहन ठाम रही जतए मनुक्ख नामक चीज नहि होइक ।"

"एना किए भए रहल अछि? अखन अहाँक बएसे की भेल अछि? फेर जखन सभ एहिना जीवनसँ भागैत फिरत तँ ई संसार चलत कोना? एहिठाम तँ सुख-दुख लागले रहैत छैक । लोक एहि दुनिआमे अपन कर्तव्य करैत अछि आ चलि जाइत अछि । ककरो लेल ई दुनिआ बंद नहि भए जाइत छैक । से होइतैक तँ अखन धरि सौंसे श्मशान भए गेल रहितैक । मुदा अखनहु सौंसे हरिअरी छैक। दुर्घटनाक बाद जीवन समस्त शक्तिसँ लहलहा उठैत छैक । जँ एकटा रस्ता बंद होइत छैक तँ एक हजार विकल्प खुजि जाइत छैक। इएह थिकैक जिजीविषा ।

कहि नहि कहिआसँ ई दुनिआ चलि रहल अछि आ कहिआ धरि चलैत रहत । हम,अहाँ नहि रहब तखनहु चलिते रहत। गाछ-बृक्ष एहिना हरिआएल रहत,फरैत-फुलाइत रहत । भोरक हवामे ओहिना सुगंध रहबे करत,सुर्योदय आ सुर्यास्त होइते रहत । तेँ जरूरी अछि जे हमहुसभ प्रकृतिक संग लए मिला कए चली । रचनात्मकताकेँ ग्रहण करी । जे चलि गेल से तँ घुरि नहि आओत। मुदा जे जीबि रहल अछि से तँ सकारात्मक रहए । के जनैत अछि जे ई जीवन दोबारा भेटबो करत की नहि?"

"कहनाइ आसान छैक । मुदा सोचिऔक जे ई नान्हिटा टेल्ह जे अनाथ भए गेलैक ताहिमे एकर कोन दोख छैक? एकर दुनिआ तँ कष्टमय भइए गेलैक ने? एकरा माएक सुख के दए सकत? अहाँ,हम,भने अपन रस्ता ताकि ली मुदा एकर की हेतैक?"

"मुदा अहाँ एकर रक्षा एहि तरहें तँ नहि कए सकैत छी । ताहू हेतु पहिने अहाँकेँ स्वयं स्थिर होबए पड़त । हम तँ कहब जे अहाँ भैया संगे बिआह कए लिअ ।"

ई बात दिवाकरक मुँहसँ निकलितहि रागिनी भोकासी पाड़ि कए कानए लागलि । ओकरा मोनमे रानीक फोटो चमकि गेलैक?

"हम कोना अपन बहिनक स्थान लेब? नहि-नहि , किन्नहु नहि। हम आब एहि संसारमे ब्यर्थ भए गेल छी । हमर बरदास करबाक सामर्थ्य झूस पड़ि गेल अछि । हम आब ककरो सुख नहि दए सकैत छी ।"

रागिनीकेँ कनैत सुनि हमरा बहुत दुख भेल । हमरा ने आगू बढ़ल होअए ने पाछू । लागए जेना केओ गछारि देलक अछि। दुनू पैर अकड़ि गेल छल । हम रागिनीक बात सुनि बहुत छगुन्तामे रही।

दिवाकरक लाख प्रयासक बादो ओ सामान्य नहि भए रहल छलि। हम कैंटिनमे चलि जाइत छी । हमरा देखि दिवाकर हड़बड़ा कए उठि जाइत अछि । मुदा रागिनी जस-के-तस छलि।

“की भेलैक? एना किएक परेसान भेल छी ?”

रागिनी किछु नहि बाजलि । दिवाकर ओहिठामसँ उठि अपन कोठरीमे चलि गेल । रागिनीकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलहुँ । मुदा ओ किछु बजबे नहि करथि । ताबतेमे केओ कहैत अएलैक- “बच्चा बहुत कानि रहल छैक ।”

से सुनितहि रागिनी घर दिस जेबाक हेतु उद्यत भेलीह । हम हुनका अपने संगे घर लेने गेलिअनि । ओतए रत्नेश कनैत-कनैत बेहाल छलैक । बुझेबे नहि करए जे एकरा की भए गेलैक? एहन हालतमे एकर पालन केना हेतैक? रागिनी कतेक दिन एहिमे ओझराएल रहतीह? आखिर ओकरो तँ भविष्य छैक ।

9

समय बीतैत देरी नहि लगैत अछि । आइ रानीक पहिल बरखी छनि । बरखीक अवसरपर भजन-कीर्तनक आयोजन कएल गेल अछि । रानीक पसंदक भजनसभ गबैयासभ गाबि रहल छथि। अपना ओहिठामक हिसाबे कर्मकाण्ड तँ भइए रहल अछि । मुदा रागिनीकेँ आइ फेर बहुत परेसान देखि रहल छिअनि । हम हुनका प्रतिए बहुत चिंतामे पड़ि गेल छी । ओ साल भरिसँ हमर टेल्हेमे ओझराएल छथि । कारखानामे जे समय कटि जाइत छनि ततबे

काल ओ सामान्य रहि पबैत छथि। दिवाकरक हुनका प्रति सिनेह बढ़िते गेलनि । मुदा ओ स्पष्टतः किछु बाजि नहि पाबि रहल छथि। ओ करवनो हमरा दिस तँ करवनो रागिनी दिस तकैत रहि जाइत छथि । आइ बररवीक अवसरपर रागिनी आ दिवाकर दुनूगोटे आमने-सामने छथि । किछु आओर मित्र,संबंधी आ शुभचिंतक तँ छथिहे । गामसँ हमर माए-बाबूजी सेहो आएल छथि ।

दिनभरि बररवीक काजमे सभ केओ लागल रहल । पहिले बररवी रहैक । हमर घाव हरिआ गेल । रागिनी तँ भरि दिन कनिते रहि गेलि । दिवाकर असगरे सभटा काज सम्हारलनि । सायं काल भजन-कीर्तनक कार्यक्रम भेल । ताहिसँ सभक मोनमे कनीक शांति भेटलैक । पंडितजी गीताक उपदेश सुनओलथि ।

“जीवन-मृत्यु ककरो वशमे नहि अछि । जकरा जरवन जन्म लेबाक छैक, जरवन मृत्यु हेबाक छैक सभ प्रारब्धक अधीन होइत रहैत अछि । ओहिमे केओ किछु नहि कए सकैत अछि ।”

पंडितजी से सभ कहैत रहलखिन । जकरा जे प्रभाव पड़ल होइक।

राति भए गेल रहैक । सभकेओ भोजन कए विश्राम करए चलि गेलथि । हम अपन कोठरीमे ओछाओनपर पड़ल टुकुर-टुकुर ताकि रहल छलहुँ की माए-बाबूजीकेँ कोठरीमे अबैत देरवैत छी । हम उठि कए बैसि जाइत छी । ओहोसभ सामने राखल कुर्सीपर बैसि जाइत छथि । थोड़े कालक गुम्मीक बाद माए बाजलि-

“हमसभ एहिबेर सोचि कए आएल रही जे दिवाकरक बिआह करा दिअनि । मुदा ताहिसँ पहिने चाहैत छलहुँ जे तोरो बिआह करा दिअ। आरिवर कतेक दिन एना रहबह? असगर एतेकटा जीवन काटब बहुत मोसकिल काज अछि । फेर रागिनी एहि घरकेँ कतेक

दिन सम्हारति? ओकरो बिआह हेतैक । अपन घर जाएत । तकर बाद तोहर बच्चाकेँ के पालतह?”

“भगवान पालथिन । जे भगवान एहन परिस्थिति बनओलथि सएह समाधानो करथिन । हम कइए की सकैत छी?”

“एना सोचलासँ काज चलैत छैक? तोहर बएसे की भेलह अछि? दोसर बिआह कए लएह। हमसभ कनिआ तकने छी। सभगुण संपन्न अछि । अपनसभक गामे लगक छैक । देखल-सुनल काज होएत । संगे एकटा गरीब कन्याक कल्याण भए जेतैक ।”

“हम कैक बेर अपन मोनक बात अहाँ लोकनिकेँ कहि चुकल छी । मुदा अहाँसभ बुझिए नहि रहल छी ।”

“बुझिए कए की करबैक? जे समयक संग तादात्म्य स्थापित नहि कए पबैत अछि से मनुक्ख नष्ट भए जाइत अछि। मानलहुँ जे तोरा संग बहुत अन्याय भेलह । मुदा इएह भावी छल से बुझबाक चाही। कम सँ कम नान्हिटा बच्चाक भविष्यपर सोचबाक चाही ।”

“ओकर भविष्य हमर बिआह केलासँ नीक होएत की अधलाह से के जनैत अछि?”

“से किएक?”

“सतमाएसभक करनी सुनि कए देहक रोंआ ठाढ़ भए जाइत अछि। हमरा हिसाबे तँ हमर बिआह नहिए केलासँ रत्नेशक भविष्य बेसी सुरक्षित रहत । रहल ओकर पालन-पोषणक बात । से तँ एतेकटा दुनिआक जखन पालन भगवान करैत छथि तँ ओकरो हेबे करतैक ।”

“तखन?”

"हमर स्पष्ट निर्णय अछि जे हम आब बिआह नहि करब । जे हेतैक से देखल जेतैक । हमर मोन एहि लेल किन्नहु तैयार नहि भए रहल अछि । हम की करू? अहीं कहू?"

"तखन दिवाकरक बिआह करबा दैत छिऐक । कारण ओकरो बएस तँ बढ़ले जा रहल छैक ।"

"ओकरासँ गप्प करिऔक ।"

"गप्प केलिऐक अछि । ओ अड़ल अछि जे पहिने तोहर बिआह होएत तकर बादे ओ सोचत।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि । हमर बिआह भए गेल अछि । हमरा संतानो अछि । ई तँ संयोग छैक जे हुनकर देहान्त भए गेलनि । मुदा एकटा संतान तँ छोड़ि गेल छथि । ओकर पालन-पोषण नीकसँ होइक से बेसी जरूरी अछि । हमरा विचारसँ दिवाकरक बिआह करा देबाक चाही ।"

"हमहु सभ तँ सएह कहि रहल छी ।"

"बात ई छैक जे ओ रागिनीसँ बिआह करए चाहैत अछि । नहि तँ ओ ककरोसँ बिआह नहि करत।"

"तखन?"

"तखन की? हमसभ रागिनीसँ पुछलिऐक । मुदा ओ बिआह करए नहि चाहैत अछि । ओकरा बिआहक चर्चेसँ माथ खराब भए जाइत छैक ।"

"एहि विषयपर हम की कहि सकैत छी? आखिर दिवाकर आ रागिनीकेँ स्वयं निर्णय करबाक हेतैक जे ओ सभ चाहैत की अछि? रहल हमर बात से साफ अछि । हमसभ किछु कहिए देने छी ।

समय पाछू नहि जेतैक । एकरा आगू जेबाक छैक । ताही हिसाबे सभगोटेकेँ सोचबाक छैक ।"

राति बेसी भए गेल रहैक । माए-बाबूजी बहुत थाकल रहथि। हम आग्रहपूर्वक हुनकासभकेँ अपने लगक ओछाओनपर सुतबाक आग्रह केलिअनि । ओ सभ ओछाओनपर जाइते फोंफ काटए लगलाह । मुदा हम रातिभरि करोट बदलिते रहि गेलहुँ ।

10

प्रात भेने हमर माए -बाबूजी गाम बिदा भए गेलाह । ओ सभ बहुत उदास लगैत रहथि । कोनो बात आगू नहि बढ़ि सकल। ने हम बिआह करबाक हेतु तैयार भेलहुँ ,ने दिवाकरक कोनो ठेकान लागि सकल । रागिनीक तँ कोनो हिसाबे नहि बुझा सकलनि । तखन ओसभ हमरा लग बैसल की करितथि ? परेसानी छोड़ि किछु नहि भेटितनि । सएह सोचि ओ सभ हमर डेरा छोड़ि देलनि । एमहर रागिनी दिन-राति काजमे लागल रहथि । कखनहु कारखाना तँ कखनहु घर ।रत्नेशक सभटा भार हुनकेपर छलनि । दिवाकर आ रागिनी घंटो कारखानामे संगे रहैत छलाह । गप्प-सप्प करैत समय बीति जाइत छलनि । मुदा हुनका लोकनिक संबंध जेना कतहु ठहरि गेल रहनि । रागिनी टेल्हक चिंता करैत रहैत छलि । दिवाकर रागिनीक चिंतामे परेसान रहैत छलाह । हम तँ स्वयंसँ परेसान छलहुँ । के ककरा सम्हारैत?

एहि बीचमे रागिनीक स्वास्थ्यमे निरंतर ह्रास होबए लगलनि । हम डाक्टरसँ देखेबाक आग्रह करिअनि तँ किछु-ने-

किछु बहाना बना कए टारि देथि । क्रमशः हुनका भूख लगनाइ साफे बंद भए गेल । दिन-राति उकासी होइत रहैत छलनि । देहक वजन निरंतर घटिते जा रहल छलनि । आखिर एकदिन हुनकर मुँहसँ खूनक थक्का उकासी करैत काल खसल । ओ बेहोस भए गेलि । ओही हालतमे हम हुनका अस्पताल लए गेलिअनि ।

रागिनीकेँ अस्पतालक आपत्तिकालीन विभागमे डाक्टरसभ गहन जाँच केलक । हुनकर हालत गड़बड़ाइत देखि थोड़े कालक बाद आइसीयूमे लए गेल । साँझ होइत-होइत जाँचसभक विवरण आएल । से देखि डाक्टरसभ बहुत चिंतित रहए । हम पुछबो केलिऐक-

“डाक्टर साहेब बात की छैक? अहाँसभ बहुत चिंतित बुझाइत छी।”

“बाते तेहने छैक । की कहू?”

“की बात छैक से तँ बुझिऐक।”

“हिनका रीढ़क हड्डीमे कैंसर बिमारी छनि । कम सँ कम साल भरि इलाज चलतनि । तखन जा कए ई ठीक भए सकतीह ।”

“कोनो बात नहि । हिनकर इलाज शुरु करू ।”

“मुदा एहिमे बहुत खर्चा लागत । हिनका अस्पतालेमे राखए पड़तनि। परिवारक केओ ओहि अस्पतालमे नहि रहि सकत । तेँ दिन-राति सेवाक हेतु उपचारिका लगाबए पड़त । संगहि पथ्य-पानिक नीक इंतजाम करए पड़त ।”

“अहाँ जरूरी इलाज करू । खर्चाक चिंता करबाक काज नहि छैक। हम ताहिसभ हेतु तैयार छी । ई जाहिसँ ठीक भए जाथि से हेबाक चाही ।”

डाक्टरक परामर्शक अनुसार रागिनीकेँ अस्पतालमे भर्ती करा देल गेल । दू लाख टाका अग्रिम हम जमा कए देलिऐक। अपना भरि रागिनीकेँ बुझाबक प्रयास सेहो केलहुँ । मुदा ओ अस्पतालमे रहबाक हेतु किन्नहु तैयार नहि रहथि ।

“हम गामेपर रहि कए इलाज कराएब । हमरा अस्पतालमे असगर रहलासँ आओर मोन खराब होएत ।

“मुदा डाक्टरक कहब तँ मानए पड़त । तखने अहाँ स्वस्थ होएब ।”

रागिनी चुप्प भए गेलि । हम हुनका अस्पतालमे छोड़ि कए बिदा हेबाक प्रयास करैत छी । हमरा जाइत देखि रागिनी बच्चा जकाँ कानए लगलथि । हल्ला सुनि कए डाक्टर ,उपचारिकासभ आबि गेल । ओ सभ रागिनीकेँ तरह-तरहसँ बुझेबाक प्रयास करए लागल। ओही बीचमे हमरा इसारासँ ओहिठामसँ जेबाक हेतु कहलक । हम रागिनीकेँ बिना किछु कहने घसकि जाइत छी । हम अस्पतालक मुख्यद्वारिपर पहुँचिए रहल छलहुँ की दिवाकर देखाएल। ओकरा आएल देखि हमर मोन हल्लुक भेल । ओकरा सभटा बात बूझा देलिऐक । संगे किछु टाका सेहो देलिऐक जाहिसँ हम नहिओ रही तँ अस्पतालक काजमे परेसानी नहि होइक ।

11

हमर माए बाबूजीकेँ गाम ओगरने रहबाक एकटा प्रमुख कारण हमर मथसुन्न भाइ दुखन सेहो छथि । हुनका रस्तापर अनबाक जतेक प्रयास बाबूजी केलाह ततेक ओ बिगड़ैत गेलाह । शुरुएसँ संगति गड़बड़ा गेलनि । दुपहरिआमे ओकरासभक संगे बाधे-बाध बौआइत रहैत छलाह जाहिसँ इसकूल नहि जाए पड़नि । जखन गामक इसकूलसँ गुरुजीक सिकाइत आबनि तँ ओ दुखनकेँ तकैत फिरैत रहैत छलाह । कहिओ कलममे,कहिओ बाधमे तँ कहिओ पोखरिक महारपर गामक संगी सभक संगे घुमैत रहैत छलाह । एकदिन ओ भरनपर गामेक एकटा छौंड़ा संगे तमाकुल खाइत पकड़ल गेलाह । बाबूजीक तामसक तँ अंते नहि छल । मुँहसँ तमाकुल उगलबओलथि । तामसे कैक चमेटा लगा देलथि आ पकरने-पकरने घर लेने अएलाह । ओहिठाम दुखनकेँ शपथ खुओलथि जे आगू कहिओ तमाकुल नहि खेताह,नित्य समयपर इसकूल जेताह,गलत संगतिमे नहि रहताह । एक-दू दिन तँ ओ तकर पालनो केलनि । तकर बाद ढाकक तीन पात । फेरसँ ओएहसभ काजमे लागि गेलाह । पढ़ाइमे हुनका कोनो रुचि नहि रहनि । पहलमानी करब,कबड्डी खेलाएब,गामक छौंड़ासभसँ झगड़ा करब हुनकर बहुत प्रिय काज छलनि ।

इसकूलोमे दुखन बिदति करैत रहैत छलाह । एकबेर किछु संगीसभक संगे रातिमे एकगोटेक घरमे घुसि गेलाह । घरमे ओकर इसकूलमे पढ़ि रहल एकटा बालिका सुतल छलि । ओकरा खाटपर सुतले ओ सभ उठा लेलक आ बाहर लेने चलि गेल । प्रात भेने सौंसे

हल्ला भेल । ओकर पिता इसकूलमे सिकाइत कए देलक । दोखी विद्यार्थी सभक पहिचान कएल गेल । सभ विद्यार्थी दुखनेक नाम लगओलक । ओकरे कहलासँ ओ सभ एहन काजमे सामिल भेल छल । इसकूलक प्रधानाध्यापक बहुत तमसेलाह । दुखनकेँ इसकूलसँ निकालि देल गेलनि । ओही साल हुनका मैट्रिकक परीक्षा देबाक रहनि । बाबूजी अपना भरि बहुत प्रयास केलनि जे दुखनकेँ इसकूलमे फेरसँ लए लेल जानि जाहिसँ हुनकर मैट्रिकक परीक्षा बाधित नहि होनि । मुदा प्रधानाध्यापक अड़ि गेलाह -

“हमरा इसकूल चलेबाक अछि । जँ एहन-एहन घटनापर कारबाइ नहि हेतैक तँ इसकूलक अनुशासन कोना रहत? जकरा जे मोन हेतैक से करत । अहाँकेँ अपन पुत्रकेँ बुझेबाक चाही । मैट्रिक पास करबासँ बेसी महत्वपूर्ण थिक जे ओ सही आदमी बनथि । नीक संस्कार अपनाबथि, नीक लोक बनथि ।”

प्रधानाध्यापकक बातक बाबूजी लग कोनो तोड़ नहि छलनि । ओ चुपचाप इसकूलसँ वापस भए गेलाह। अपना भरि दुखनकेँ बहुत बुझेलखिन। इसकूल छुटि गेलाक बाद तँ ओ आओर निश्चिंत भए गेलाह । दिनभरि अवारासभक संगतिमे रहथि । केओ केओ तँ इहो सिकाइत करए लागल जे ई तारी सेहो पीबैत छथि । भांग तँ पीबिते छलाह । एक राति ई अपन संगीसभक संगे तारीक कटिआ बाबूजीक सिरमा तरमे राखि देलाह । भोरे जखन ओ उटलथि तँ कटिआ दर्शन भेलनि । हुनका ई बुझबामे कनीको देरी नहि भेलनि जे ओ काज ककर थिक । मुदा की बजितथि? एहि बीच उत्तरमध्यमाक फार्म भरा कए हुनका जेना-तेना पास कराओल गेल । मुदा ओ कोनो काजक साबित नहि भेल ।

दुखनक बदमासी बढ़िते गेलनि । हुनकर तारीक अमल सेहो बढ़िते गेलनि । कैकबेर रातिमे तेहन प्रचंड रूप धरथि जे बाबूजीक धोतीमे लघी भए जानि । माए डरे घरमे नुका जाए । गामक लोकसभ घरे-घर केबार बंद कए लिअए ।

एकदिन बाबूजी ओकरापर बहुत तमसा गेलखिन । हुनका तमसाएल देखि दुखन भागल आ सामनेमे बिजलीक खंभासँ टकरा गेल । संयोगसँ सामने बिजलीक तार खुजल खसल छल । ओकर पैर ओहि तारपर पड़ि गेलैक । ओकरा जोरसँ करेंट लागल । तकर बादसँ तँ ओ अड़बड़ बाजए लगलाह । लोक पुछैक किछु,ओ जबाब दैक किछु । एतेक दिन तँ शारीरिक आ मानसिक रूपे स्वस्थ रहथि। माए-बाबूजीकेँ उमीद बनल रहनि जे आइ ने काल्हि ओ सही रस्तापर आबि जेताह । अपन घर-गृहस्थी सम्हारताह । मुदा भावी प्रवल । करेंट लगलाक बाद ओकर हालत खराबे होइत गेल। किछु दिन तँ निठ्ठाहे बताह भए गेलाह । इलाज करओलाक बाद किछु मामुली सुधार भेलनि अवश्य । मुदा नाममात्रेक । करवनहु साफे गुम्म भए जइतथि तँ करवनहु बहुत बुद्धिमान जकाँ बतिअइतथि । माए-बाबूजी बहुत अफसोच करथि । आब तँ जे हेबाक छल से भए चुकल। सुधारक कोनो संभावना नहि बुझा रहल छल । आखिर, परिस्थितिसँ समझौता कए ओ सभ गामेपर समय काटि रहल छलाह ।

दुखनक बदमासीक कारण घरमे सभ परेसान भए गेल छल । बाबूजीक परेसानीक तँ अंते नहि छल । एहीसभसँ हुनकर रक्तचाप बढ़ि गेलनि । माथामे चक्कर देबए लगलनि । कैकबेर तँ बेहोस भए खसिओ पड़थि । मुदा दुखनपर तकर कोनो असर नहि

भेल । कहू ,केहन दुखद परिस्थितिसँ हमर माए-बाबूजी गुजरलाह। तथापि, प्रयास रहनि जे दुखन सुधरि जाथि । हुकर जीवन रस्तापर आबि जानि । मुदा से भेल नहि ।

12

जखन दुखनक हालत खराबे होइत गेलनि आ गामपर सुधारक कोनो रस्ता नहि बुझाइनि तँ बाबूजी एकबेर हुनका अपना संगे माघमेला लेने गेलखिन । केओ कहने रहनि जे माघमेलामे संत-महात्मा अबैत छथि । ओ सभ चमत्कार कए सकैत छथि। एकबेर माथापर हाथ देथिन तँ दुखन ठीक भए जेताह । बाबूजी ओहुना माघमेला जाइते रहैत छलाह । एहिबेर दुखनोकेँ संग कए लेलनि । माए सेहो संग लागि गेलखिन । तीनूगोटे माघमेला बिदा भेलाह । सगे गामसँ बहुत रास महिला-पुरुख सेहो बिदा भेलाह । सभगोटे एक्के संगे दरभंगा टीसनसँ रेलगाड़ी पकड़लनि ।

एकहि ठामक एतेक गोटे एक्के संगे चलि रहल छलाह । अद्भुत आनंदक समय लगैत छल । केओ महादेवक नचारी गबैत तँ केओ भगवतीक गीत। माहौल रमनगर रहैत छल । रेलगाड़ी धराधर चलैत रहल । ओतेकटा रस्ता कोना कटि गेल से नहि पता चलल। भोर भेने सभगोटे प्रयागराज टीसनपर उतरल । आश्चर्यक बात जे रस्तामे दुखन कतहु कोनो बिदति नहि केलकनि । संचमंच गीतनाद सुनैत रहल ।

प्रयागराज टीसनसँ एक्कापर बैसि सभगोटे माघमेला पहुँचि गेलाह । एक्काक ओरिआन मैथिलक प्रसिद्ध पंडा लोकनि केने रहथि। एक्कासभ धराधर आगू बढ़ि रहल छल । आनंद भवनसँ कनीके आगू माघमेलाक गोदाम लग किछुगोटे भजन-कीर्तन कए रहल छलाह । हुनकासभक आगू-आगू हाथीपर भगवानक मूर्ति राखल छल । पाछू-पाछू भक्तमंडली भजन नचैत- गबैत माघमेला जा रहल छलाह । संयोग एहन भेल जे हाथीकेँ देखितहि घोरा भरकि गेल आ पैर पाछू घिचलक। ओतबेमे एकटा फटफटिआ ओतए आबि गेल । घोराक टांग पटफटिआसँ टकरा गेल । बाबूजी,माए आ दुखन ओहि एक्कापर बैसल रहथि । एक्का उलटि गेल । सभगोटे जमीनपर नीचाँ मुँहे भरे खसलाह । माएक दहिना हाथमे चोट लागि गेलैक । बाबूजीक बामा पैरमे चोट लगलनि। मुदा दुखन बाँचि गेल । ओ सभ जेना-तेना ओहने हालतमे माघमेलामे माछछाप पंडाक बासापर पहुँचलाह । माघमेलामे माछ छाप झंडा लगओने ओ सभ फटकीएसँ पहिचानमे आबि जाइत छथि । ओहिठाम पंडाजी सभटा ओरिआन केने रहथि। ताबे हमर गौंवासभ सेहो संगे पहुँचलाह । माए-बाबूजीकेँ माघमेलाक डाक्टर देखलकनि । हुनकासभकेँ हड्डी नहि टुटल रहनि, मोचटा पड़ि गेल रहनि । किछु दबाइ,किछु मलहम आ सभसँ ऊपर माघमेलाक प्रतापे ओ सभ साँझ होइत-होइत बहुत आराममे आबि गेलाह । सभगोटे अपन-अपन सामिआनामे पसरि गेलाह।

ओहि समयमे हमसभ गुरुग्रामेमे रहैत रही । हुनकर समाचार सुनि साँझक रेलगाड़ीसँ प्रयाग बिदा भेलहुँ । प्रयागमे माघमेला पहुँचलाक बाद हुनका लोकनिकेँ सुभ्यस्त देखि बहुत प्रसन्नता भेल। ओहिदिन संगमपर स्नान रहैक । कतए-कतएसँ

लाखो लोक स्नान हेतु आएल छल । हमहु सभगोटेक संगे स्नानक फएदा उठओलहुँ। माघमेला घुमलहुँ । एक-दूदिन ओहिठाम रहबो केलहुँ । हमर इच्छा रहए जे माए-बाबूजी माघमेलासँ हमरा संगे गुरुग्राम चलथि । मुदा ओ सभ माघमेला बीचेमे छोड़बाक हेतु तैयार नहि भेलाह । हमरा तँ वापस हेबेक छल कारण गुरुग्रामक कारखानाक काजकेँ देखब सेहो जरुरी छल । तेँ हम दू दिनक बाद गुरुग्राम लौटि गेलहुँ ।

माघमेलामे सभ भोरे नहाइत अछि । पूजा-पाठ करैत अछि । संत-महात्माक प्रवचन सुनैत अछि । साँझमे एकबेर मात्र भोजन करैत अछि । सभकेओ एहि दिनचर्यामे लागि गेल । मुदा हमर माए-बाबूजी दुखनक दुखसँ परेसान रहथि । सुनने रहथि जे ठढ़ेसरी बाबा बहुत सिद्ध पुरुष छथि । साइत हुनकर आशीर्वादसँ दुखनक माथ ठीक भए जानि । से सोचि ओ सभ दोसर दिन भोरे हुनकर आश्रमपर पहुँचलाह । हुनकासभकेँ देखितहि ठढ़ेसरी बाबा बाहर आबि गेलाह। सभगोटे हुनका प्रणाम केलखिन । ठढ़ेसरी बाबा बिना किछु कहने बजलाह- “दुखनक नाम हमर संस्कृत कालेजमे लिखा दिऔक ।”

हमर माए-बाबूजी तँ तुरंत तैयार भए गेलाह । मुदा दुखन ताहि हेतु तैयार नहि रहथि । ओ कहैत छथि-“हमरा बहुत डर लगैत अछि । हम गामे रहब । ओतहि पढ़ब ।” दुखनक बातपर ठढ़ेसरी बाबा ठहाका पारि कए हँसए लगलाह । ओ तँ अंतर्यामी छलाह । भए सकैत अछि हुनका दुखनक पूर्वजन्मक रहस्य बूझल होनि । जे-से। माए-बाबूजी दुखनक संगे वापस माघमेलामे अपन सामिआनामे आबि जाइत गेलाह ।

माघमेलामे लोकसभक भजन-कीर्तन करैत समय बीति रहल छल । मुदा हमर माए-बाबूजीकेँ दुखनक कारण मोनमे चेन नहि रहनि । मासदिन माघमेलामे रहलाक बाद बाबूजी,माए दुखनक संगे गाम लौटि गेलाह ।

13

माघमेलासँ लौटलाक बाद माएक स्वास्थ्य खराब भए गेलनि। बाबूजी दिन-राति ओकर सेवा करथि । मुदा ओकर स्वास्थ्य गड़बड़ाइते गेल । कहि नहि कोन पेचिस धेलकैक जे ठीक हेबाक नामे नहि लैक । दिन-राति सुलबाइ करैत-करैत हुनकर देह कंकाल भए गेलनि । कतहु जान लगबे नहि करए । अपना भरि जे इलाज संभव होनि से बाबूजी कराबथि। मुदा इलाज तँ बिमारीक होइत छैक ने । जखन काल आबि जाइत छैक तँ की इलाज हेतैक? हुनका लोकनिक हेतु दुखन सभटा दुखक जड़ि रहथि । ऊपरसँ हमरो पारिवारिक स्थिति गड़बड़ाएले रहए । दिवाकर से परेसाने रहथि । रागिनीक बिमारीक समाचार से हुनकासभकेँ माघेमेलामे भेटि गेल रहनि । ओहूसँ हुनकरसभक मोन टुटि गेलनि । चारूकात अन्हारे-अन्हार देखाइत छलनि । संभवतः इएहसभ सोचैत-सोचैत माएक हालत एतेक खराब भए गेलनि ।

एकदिन हम भोरे चाह पीबैत रही की गामसँ दुखन फोन केलक-“माए मरि गेल ।” ओ एतबे बाजल छल कि फोन कटि गेल। हम ओकरासँ किछु नहि पुछि सकलहुँ । तकर बाद कतबो प्रयास केलिऐक जे दोबारा ओहि फोनपर गप्प करी मुदा फोन नहि

लागल । ई समाचार सुनितहि पहिने तँ भरि मोन कनलहुँ । फेर जखन मोन स्थिर भेल तँ आगाक कार्यक्रम बनबए लगलहुँ । गाम गेनाइ जरूरी छल । एमहर रागिनी अस्पतालमे भर्ती छलि। दिवाकर अस्पतालेक द्वारि लग एकटा कोठरी किरायापर लए दिन-राति ओतहि ओगरने रहैत छल । हमर नान्हिटा बच्चा नौकर-चाकरक बले समय काटि रहल छल । मुदा आब की होएत? गाम गेनाइ जरूरी छल आ एहिठाम छोड़नाइ से बहुत मोसकिल लागि रहल छल । एही गुनधुनमे बड़ीकाल धरि पड़ल रहलहुँ ।

आखिर हम रत्नेशकेँ अपना संगे लेने गाम बिदा भेलहुँ । गाम बिदा हेबासँ पहिने दिवाकरकेँ सभबात कहि देलिऐक। माएक समाचार सुनि ओ भाव विह्वल भए गेल । ओहो गाम जेबाक हेतु आतुर छल। मुदा हम बुझेलिऐक-"तूँ एखन एतहि रहह । कारण रागिनीकेँ असगरे अस्पतालमे छोड़ि देब उचित नहि होएत। गामसँ हम कोनो ओरिआन करब तकर बाद तूँ आबि सकैत छह ।" दिवाकर मानि गेल ।

हम गाम पहुँचलहुँ । बाबूजी बहुत दुखी रहथि । हुनकर संपूर्ण पारिवारिक व्यवस्था गड़बड़ा गेल छलनि । हम,दिवाकर,दुखन तीन भाइ रही । मुदा केओ हुनकासभक काज नहि आबि सकल रही । ओ सभ स्वयं जीवनसँ लड़ैत रहलाह,तरह-तरहक कष्ट सहैत रहलाह । अंततोगत्वा, माए एहिसभकेँ बरदास्त नहि कए सकलीह आ ऊपर चलि जाइत रहलीह । कहाँदनि अंतो कालमे ओ "दुखन-दुखन" बजैत रहथि । किछु आओर कहए चाहथि । एकबेर कहाँदनि रागिनीओक नाम लेने रहथि आ तकर बाद आँखि उल्टा देलनि ।

हम रत्नेशक संगे गाम पहुँचलहुँ तँ बाबूजीकेँ ओसारापर पटिआपर पड़ल देखलअनि - बेसुध,शब्दहीन । हमरा देखिओ कए ओ किछु बाजि नहि सकलथि । सुन्न आकास दिस तकैत रहि गेलथि । थोड़ेकालक बाद रत्नेशपर ध्यान गेलनि । फेर तँ ओकरा संग बहुत रास बात करए लगलाह । एहि बातसँ हम आश्वस्त भेलहुँ जे हुनकर दुखी मोनकेँ कतहु विश्राम भेटलनि ।

रहि-रहि कए माए मोन पड़ैत रहलथि । हमरा होइत छल जेना हुनकर एना चलि जेबाक हेतु हमही दोषी छी । कतबो मोनकेँ बुझेबाक प्रयास करिऐक मुदा बात ओतबे पर रहि जाइत छल । कतेको राति जागले बीति जाइत छल । बाबूजी अपन पौत्रक संगे समय काटि लैत छलाह। मुदा हमरा अफसोच करबाक अतिरिक्त किछु फुरेबे नहि करए । जखनसँ महापात्र आबि जाथि तखनसँ कर्ममे व्यस्त भए जाइ । एक हिसाबे तखने हम कनी शांतो रही ।

श्राद्धक समयमे महापात्रसभक व्यवहारसँ मोन अतिशय दुखी भए गेल । ओ सभ तँ दिन-राति एही फिराकमे रहैत छल जे केना अधिक सँ अधिक टाका निकालि ली । कखनहुँ स्वर्ण दानक नामपर,कखनहु गोदानक नामपर तँ कखनहु साल भरिक हेतु अन्नदानक नामपर । बस टाका दैत चलू,मृतकक आत्माक मुक्तिक हेतु अपना आपकेँ बन्हक धेने चलू । बारह दिन धरि कोनो-ने-कोनो विध होइते रहल। ऊपरसँ गरुड़ पुराण से पढ़ल गेल । ओहिमे तरह-तरहक खिस्सासभ भरल अछि । एना करब तँ ओना स्वर्ग भेटत । एहिसभक अतिरिक्त एकादशा आ द्वादशाक दिन गामक-गाम ब्राह्मणसभकेँ नोत खुआउ । जे मरल से तँ मरिए गेल । मुदा ओकरा स्वर्ग पठाबक चक्करमे जे जीबि रहल अछि सेहो मरि जाएत ।

श्राद्धक एहन कठिन आ महग व्यवस्था देखि हमर मोन बहुत क्षव्ध रहए मुदा सभ सहि गेलहुँ । जे-जे महापात्रसभ कहलनि से करैत रहलहुँ । जबार नोतल गेल । वैदिकी विध-विधानसँ कर्मसभ कएल गेल ।

माएक श्राद्ध नीकसँ संपन्न भेल । श्राद्धक समयमे दुखन आश्चर्यजनक रूपसँ शांत रहल । कोनो बिदति नहि केलक। दिन-राति खटैत रहल । मुदा जखने तेरहम दिन बीतल ओ फेर अपन पुरनका रस्ता पकड़ि लेलक । ओकर हालत देखि बाबूजी फेर परेसान रहए लगलाह । कोनो समाधानो नहि छलैक । बाबूजीक आग्रह रहनि जे रत्नेशकेँ हुनके संगे रहए देल जाए । खबासिन हुनका एहिमे मदति कए देतनि । गुरुग्राममे ओकरा के देखत? बातो वाजिब बुझाएल । हम हुनकर बात मानि रत्नेशकेँ हुनके लग छोड़ि गुरुग्राम हेतु बिदा भए गेलहुँ। रत्नेशकेँ कोरामे लेने बाबूजी हमरा सड़क धरि अरिआति देलनि । हम बसपर चढ़ैत रही तखनो ओ हमरे दिस एकटक देखैत रहथि । बस खुजि गेल । बाबूजी रत्नेशकेँ कोरामे लेने तैओ ओतहि ठाढ़ रहथि । बस गति पकड़लक आ तेजीसँ आगू बढ़ैत गेल ।

14

गुरुग्राम पहुँचतहि सभसँ पहिने अस्पताल गेलहुँ । अस्पतालक द्वारिएपर दिवाकर भेटि गेल । ओकर दाढ़ी -मोछ सभ बढ़ि गेल छल । मुँह एतबे दिनमे पिअर भए गेल छल । आँखि लग कारी-कारी चेन्ह पड़ि गेल छल । बुझेबे नहि करए जे एतबे दिनमे ओकर एहन हालत कोना भेलैक? हमरा देखितहि ओ

भोकासी पाड़ि कए कानए लागल। बहुत मोसकिलसँ ओ शांत भेल। हम बेर-बेर पुछिऐक जे की भेल तँ ओ किछु बजबे बहि करए। बस कानए ।

हम बुझबे नहि करिऐक जे ओ एतेक परेसान किएक अछि जे हमरा देखितहि कानए लागल आ कनिते जा रहल अछि? कहीं रागिनीकेँ किछु भए गेलैक की? मुदा जाबे ओ किछु बाजत नहि हम बुझबै कोना? हम कोनो ज्योतिषी तँ छी नहि? जखन ओ एहिना करैत रहि गेल तँ हम जोरसँ चिकरलहुँ-"रे फरिछा कए किएक नहि बजैत छह जे की भेलैक?"

"रागिनीक हालत ठीक नहि छैक।"

"मुदा से कनलासँ तँ ठीक नहि हेतैक? जखन जे समस्या आबि गेल छैक तकरा तँ सामना करक होइत छैक । शांत मोनसँ सोचबाक होइत छैक जे आगू की कएल जाए?"

हमर बात सुनि दिवाकर रहि-रहि कए कनिते रहि गेल।

"एना तँ काज नहि चलि सकैत अछि । आखिर बुझिऐक तँ जे बात की छैक? तूँ रहि-रहि कए एना किएक कानि रहल छह? रागिनीकेँ किछु भए गेलैक की?"

ओ मूड़ी हिला देलक।

"की भेलैक?"

"रागिनीक बिमारी बहुत बढ़ि गेल छैक । डाक्टरसभ ओकरा आरोग्य निकेतन मुंबई लए जेबाक परामर्श देलक अछि। हम अहींक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ । कारण जे ओकरा इलाजमे बहुत टाका लगतैक । तथापि ई पक्का नहि अछि जे ओ ठीक भइए

जाएत । डाक्टरक कहब जे आधा-आधा संभावना अछि । जँ ठीक भइओ जेतीह तँ कैकटा समस्यासभ भए सकैत छनि, आगू संतान नहि हेतनि । आओर कैकटा बात सभ कहलक जे अपनो मोन नहि अछि । अंग्रेजीमे की-की बजैक से नीकसँ बुझिओ नहि सकलिऐक ।”

दिवाकरक बात सुनि हम गुम्म पड़ि गेलहुँ । बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ सम्हारलहुँ ।

“जखन परिस्थिति एहने भए गेल छैक तँ कनलासँ की हेतैक? साहसपूर्वक एकर सामना करबाक चाही आगू जे हेबाक हेतैक से हेतैक ।”

दिवाकरक संगे हम रागिनीक शायिका लग पहुँचलहुँ । ओ ओतए नहि रहथि । उपचारिका कहलक जे ओ कोनो जाँच करेबाक हेतु गेल छथि । आइ हुनकासँ भेंट नहि भए सकत। एहिसँ बेसी ओ किछु नहि बाजलि । हम संबंधित डाक्टरसँ भेंट करबाक प्रयास केलहुँ मुदा सभ कोनो-ने-कोनो बहाना बना कए टरका देलक । केओ किछु कहबाक हेतु तैयार नहि छल । अंतमे हम विभागाध्यक्ष लग पहुँचलहुँ । संयोगसँ ओ अपन कक्षमे असगरे रहथि । हम बिना किछु कहने हुनकर कोठरीमे पैसि गेलहुँ । दिवाकर बाहरे प्रतीक्षा कए रहल छल । हमरा एना अबैत देखि ओ हड़बड़ा गेलाह । हम हुनकर बात बुझलिअनि ।

“माफ करू डाक्टर साहेब । हम बिना अपनेकेँ पुछनहि एतए आबि गेलहुँ । असलमे एहिसँ पूर्व हम बहुत प्रयास केलहुँ जे हमर रोगीक हाल पता लागए, सभ डाक्टरसँ गप्प करबाक प्रयास केलहुँ मुदा

केओ साफ बात नहि केलथि । सभ टरकबैत रहल । हारि कए हमरा अहाँक शरणमे आबए पड़ल ।"

"अहाँक रोगीक की नाम अछि?"

"रागिनी"

रागिनीक नाम सुनितहि जेना ओ बहुत दुखी भए गेल । फेर कहैत अछि-

"की कहू? मुदा नहि कहनो तँ बात नहि बनत। हमतँ स्वयं अहाँकेँ ताकि रहल छलहुँ । ओकरा आरोग्य निकेतन मुम्बई लए जाए पड़त। ओतहि आगूक इलाज भए सकैत अछि । ओहिठाम इलाजमे बहुत खर्चा होएत । तखनो परिणाम की होएत से किछु नहि कहल जा सकैत अछि।"

"कोनो बात नहि । जे हेबाक छैक से हेतैक । हमसभ अुनका मुम्बई अवश्य लए जेबनि ।"

डाक्टरकेँ नमस्कार कए हम बाहर भेलहुँ । बाहर दिवाकर हमर प्रतीक्षा कए रहल छल । हम ओकरा किछु नहि कहि सकलिऐक । दुनूगोटे अस्पतालसँ बिदा भए गेलहुँ -चुपचाप,गुम्म ,भविष्यक चिंतामे लीन ।

15

अस्पतालसँ घुरि कए भरिदिन टाकाक जोगारमे लागल रहलहुँ । मुदा कोनो समाधान नहि भेटल । कारखानाक हालत बहुत खराब भए गेल छल । कतेकोदिनसँ मजदूरसभ हड़तालपर

छल । ओकरासभकेँ पगार नहि भेटि रहल छलैक । मास-दूमास तँ ओ सभ धैर्य रखलक । मुदा पेटक आगू बात कतेक दिन चलैत? ओकरसभक परिवार घोर कष्टमे छलैक । दोकानदारसभ उधारी देनाइ बंद कए देलकैक । घरमे भानस बंद भए गेलैक । तखन ओ सभ नियंत्रणसँ बाहर भए गेल । कारखानाक मुख्यद्वारिपर ताला मारि कए मजदूरसभ धरनापर बैसि गेल । मुदा हम की करितिऐक? अपना भरि प्रयास केलिऐक जे कारखाना चलैत रहैक । मासक-मास बिना दरमाहाकेँ केओ कतेक दिन काज करैत?

एमहर रागिनीक हालत से गड़बड़ाइते गेल । ओकरा मुम्बईमे इलाज जरूरी अछि । ताहि लेल मोट रकम चाही। से कतएसँ आओत? जखन कोनो आओर रस्ता नहि बुझाएल तँ घरकेँ बैंकक हाथे बन्हक राखि पचपन लाख टाकाक ओरिआन केलहुँ । बैंकक सर्तसभ बहुत कठिन छल । सभटा आँखि मुनि कए मानि लेलहुँ । पहिने एकटा संकटसँ निपटि ली । फेर देखल जेतैक। मोने-मोन सोचलहुँ।

टाकाक जोगार भए गेलाक बाद हम दिवाकरक संगे रागिनीकेँ मुम्बई लए गेलहुँ। रागिनीक संगे मुम्बईक यात्राक दुखद वृतांत की कहू? जकरा देखिते मोन प्रफुल्लित भए जाइत छल,लगैत छल जेना वातावरण चमेलीक फूलक सुगंधसँ महमह कए रहल अछि,लगैत छलैक जे जँ एकबेर हुनकापर नजरि पड़ल तँ आँखिक पम्ही खसबे नहि करत,एकटक हुनके देखैत रहि जाएत सएह रागिनी आइ केहन रूप धेने अछि? माथपरहक केससभ उड़ि गेल छैक । विकिरणक प्रभावसँ देहक हरिअरी बिला गेल छैक ।

एक्कोडेग चलबाक हेतु ककरो मदतिक काज पड़ैत छैक । मुदा ई समय छैक । उलट-पुलट होइत रहैत छैक ।

हमसभ जेना-तेना आरोग्य निकेतन,मुम्बईक मुख्यद्वारि लग पहुँचलहुँ । ओतहिसँ रोगी आ ओकर समांगसभकक भीड़ लागल छल। आब की होएत? मकानो बन्हक परि गेल आ एहिठाम एहन भीड़मे इलाज हेबो करतनि की नहि से नहि बुझा रहल छल । आरोग्य निकेतनमे भरिदिन धक्का खाइत रहलहुँ। मुदा हुनकर भर्तीक बात तँ छोड़ू प्राथमिको जाँच नहि भए सकलनि । जकरे देखू से कबाइत पढ़ैत निकलि जाइत । आखिर साँझमे निराश हमसभ डेरा लौटि गेलहुँ । डेरा की छल,एकटा नान्हिटा कोठरीक बीचमे एकटा फट्टा छल जेना रेलक बोगीमे बीचलका शायिका भेटि गेल होअए । कहुना कए राति बितओलहुँ । दोसर दिन भोरे फेर हमसभ अस्पताल बिदा भेलहुँ ।

संयोगसँ अस्पतालमे स्वागतीसँ गप्प करैत काल एकटा डाक्टर हमरासभक बात सुनलनि । ओ रागिनी दिस बेर-बेर ताकथि जेना कि हुनका पहिनेसँ जनैत होथि । बातो सएह रहैक । जहाँ रागिनी हुनका दिस घुमल कि ओ बाजि उठलाह-

“रागिनी! रागिनी!

मुदा रागिनी किछु नहि बाजि सकलि । डाक्टर हमरा कातमे लए गेलाह आ कहैत छथि -

“हिनका हम नीकसँ जनैत छिअनि । ई तँ इसकूलमे हमरा संगे पढ़ैत छलि ।”

डाक्टर हमरासँ सभटा बात बूझि लेलथि । तकरबाद हमरा कहैत छथि-

“अहाँसभ एहीठाम रहू । हम हिनकर सभटा ओरिआन केने अबैत छी ।”

करीब आधाघंटाक बाद ओ एकटा अपन संगी संगे अएलाह । हुनकर संगी तकरबाद तँ छाया जकाँ हमरा संगे लागल रहलाह , चारूकात दौरैत रहलाह । घंटा भरिमे सभटा जरूरी प्रक्रिया पूरा भए गेल । रागिनीकेँ अस्पतालमे भर्ती करा देल गेलनि। बीच-बीचमे डाक्टर शशांक सेहो अबैत-जाइत रहलाह ।

डाक्टर शशांकक सहयोगसँ असंभव लागि रहल काज अत्यंत सरलतासँ संपन्न भए गेल । हम तँ बहुत निराश भए गेल रही। मुम्बई सन महानगरीमे ओहि परिस्थितिमे हम कइए की सकैत छलहुँ? मुदा ईश्वरेक कृपासँ डाक्टर शशांक भेटि गेलाह । हमसभ बहुत हद धरि निचेन भेलहुँ । तेँ कहल जाइत छैक जे सदिखन आशावान रही,प्रयासमे लागल रही,आगूक जोगार भगवानक करैत छथिन । सएह एतहु भेल । हमरासभकेँ मुम्बईमे रहबाक कोनो जोगार नहि छल । एकराति लेल अस्पतालक लगीचेमे एकटा शायिका लेने रही । हमसभ जेना-तेना ओहिमे राति बितओलहुँ ।

आइ कैक रातिसँ जगरनेमे छी । भोजनोसँ बेसी सुतनाइ जरूरी बुझा रहल छल। हमरसभक स्थिति डाक्टर शशांक बुझलनि। ओ कहैत छथि-

“अहाँसभ हमरे ओहिठाम चलू। हमर डेरा खालिए पड़ल अछि । सभगोटे बहुत थाकल छी । रातिभरे आराम करब। फेर आगूक काज काल्हि कएल जेतैक ।”

डाक्टर साहेबक बात सुनि उसास भेल । हमसभ तुरंत डाक्टर साहेबक बात मानि हुनका संगे बिदा भए गेलहुँ।

16

डाक्टर शशांक तन्मयतासँ रागिनीक इलाजमे लागल रहलाह । ओ अमेरिकासँ कैंसर बिमारीक इलाजक अत्याधुनिक तरीकासभ हालेमे प्रशिक्षण लेने रहथि । तकर पूरा उपयोग रागिनीक इलाजमे कएलथि । कैकटा दबाइसभ विदेशसँ मंगाओल जाए । खर्चा करबा लेल हम तैयारे रही । अस्पतालोसँ बहुत सहयोग भेटि रहल छल। कुलमिला कए एकरसभक परिणाम बहुत अनुकूल रहल । मास दिनक भीतरे रागिनीक हालतमे बहुत सुधार भेलनि। हुनकर स्थिति आब एहन भए गेल रहनि जे घरोपर रहि कए आगूक इलाज करा सकैत छलीह । अस्पतालमे भर्ती रहब जरूरी नहि छल । मुदा मुम्बईमे ओ रहतीह कतए?डाक्टर शशांक स्वयं तकर समाधान कए देलनि ।

“हमर नीचाँक फ्लैट खालिए पड़ल अछि । ई निःसंकोच ओहिठाम रहथि । अहूँसभ जाबे जरूरी छैक ओतहि रहि जाएब । सभगोटेकेँ देखि हुनकर मनोवल बढ़ल रहतनि जाहिसँ बिमारी ठीक होएबामे बहुत मदति हेतनि ।”

“से तँ बहुत नीक होएत । मुदा हमसभ कतेक दिन ओहिठाम पड़ल रहब । एक तँ अस्पतालमे अपने मदति केलहुँ आ कइए रहल छी। ऊपरसँ आबो हमरासभक भार अपनापर राखब से ठीक नहि बुझाइत अछि ।”

"मुदा रागिनीकेँ इलाजक हेतु कम सँ कम तीन महिना लगपासमे रहए पड़त । तकर बादे हिनका आन सहर पठाओल जा सकैत अछि । ई सुनिश्चित कएल जाएत जे हुनका ई बिमारी दोबारा नहि होनि ।"

"तहन एकटा काज कएल जाए ।"

"की?"

"हम गुरुग्राम चलि जाइत छी । दिवाकर रागिनी संगे अपनेक डेरापर रहि जेताह । जरूरी हेतैक तँ हम एहि बीचमे मुम्बई अबैत-जाइत रहब ।"

आखिर सएह भेल । अस्पतालसँ छुटि कए रागिनी डाक्टर शशांकक नीचाँक फ्लैटपर पहुँचलीह । पाछू लागल हमहुसभ ओतए पहुँचलहुँ । हमरा अस्पतालमे हिसाब-किताब करबामे किछु विलंब देखि डाक्टर शशांक बिल काउंटर पर आबि गेलाह । हमरा लग सभटा टाका सठि गेल तथापि किछु बाँकी रहि गेलैक । ओहो तखन जखन की अस्पताल प्रशासन डाक्टरक अनुशंसापर किछु छूट सेहो देलकैक । सरकारसँ किछु अनुदान सेहो भेटलैक। तखन की कएल जाइत? आओर टाकाक ओरिआन करब तत्काल संभव नहि छल। हमरसभक परेसानी डाक्टर साहेब बुझलनि आ तुरंत अपना दिससँ बँकिओताक चेक काटि देलखीन । अस्पतालसँ हिसाह-किताब फरिआ कए हम आ डाक्टर शशांक संगे हुनकर डेरापर जाइत रही । रस्तामे हम डाक्टर साहेबकेँ कहलिअनि-

"आब हम गुरुग्राम जाएब । कारण ओहिठाम हमर कारखानाक हालत बहुत खराब भए गेल अछि । हमरा आमदनीक कोनो आन

साधन नहि अछि । जँ ओहो चलि गेल तँ बेस परेसानीमे पड़ि जाएब।"

"कोनो बात नहि । अहाँ निश्चिंत भए जाउ । हम एहि ठाम छी ने । फेर दिवाकर सेहो रहबे करताह ।"

मुम्बईसँ बिदा होइत काल हम रागिनीकेँ भेंट केलिअनि । ओ बहुत कृतज्ञतापूर्वक हमरा दिस तकैत छलीह । किछु बाजथि नहि मुदा आँखिसँ निरंतर नोर ढब-ढब खसि रहल छलनि । डाक्टर साहेब मना केलखिन-

"अहाँ अखन एतेक नहि कानू । एहिसँ अहाँक स्वास्थ्य खराब भए जाएत । थोड़बे दिनक बात छैक । तकरबाद तँ फेर अहाँ हुनके लग चलि जाएब ।"

रागिनी डाक्टर साहेबक बात बहुत ध्यानसँ सुनैत रहलीह। दिवाकर सेहो ओतहि पीढ़ीपर बैसल छल । हम ओकरा इसारासँ बाहर बजा लेलिऐक । रागिनीसँ छुट्टी लए हम बिदा भेलहुँ । बाहर दिवाकर प्रतीक्षा करैत छल । हम ओकरा किछु टाका सुंझा देलिऐक आ कहलिऐक-

"जँ कोनो दिक्कति होइ तँ हमरा फोन कए दिअह । ओना एहिठाम डाक्टर साहेबकेँ रहैत किछु परेसानी नहि हेबाक चाही ।"

डाक्टर साहेब हमरा टीसन धरि अरिआति देलनि । थोड़बे कालक बाद दिल्लीक रेलगाड़ी आबि गेल । सौंसे रेलगाड़ी खाली छल । किछु बुझेबे नहि करए जे एना किएक छैक । हम अपन स्थानपर बैसि गेलहुँ । रेलगाड़ी खुजि गेल । प्लेटफार्मपर ठाढ़ भेल डाक्टर साहेब बड़ीकाल धरि हमरा दिस तकैत रहलाह । रेलगाड़ी घुसकति रहल आ थोड़बे कालमे अदृश्य भए गेल ।

डाक्टर साहेबक मधुर व्यवहार,सकारात्मक दृष्टिकोण आ निस्वार्थ सेवासँ रागिनीक स्वास्थ्यमे नित्य गुणात्मक सुधार होइत गेल । जे दस दिन पूर्व उठि कए बैसि नहि पबैत छलि सएह रागिनी आइ डाक्टर साहेबक हेतु स्वयं चाह बनेने छलि। भोरे-भोर गरम-गरम चाहक चुस्की संग डाक्टर साहेब रागिनीक मनोवल बढ़बैत रहलाह । ताबे दिवाकर सेहो रागिनीक हेतु दबाइ आनि ओतए पहुँचि गेलाह । तेसरकप चाह हुनका हाथमे गेलनि ।

“चाह के बनेलक?”

“से किएक?”

“एकर स्वाद तँ गजब लगैत अछि । एहन चाह तँ रागिनी बनबैत छलीह । मुदा ओ तँ चाह बनबक स्थितिमे नहि छथि । तखन चाह बनओलक के?”

“ओएह चाह बनओलथि अछि ।”

“सही...कहि रहल छी की?”

“एकदम सही । अहाँ स्वयं पुछि लिअनु ।”

डाक्टर साहेब अस्पताल चलि गेलाह । डेरापर दिवाकर आ रागिनी रहथि। आइ कतेको दिनपर रागिनी प्रसन्न छलीह। हुनका प्रसन्न देखि दिवाकर सेहो उत्साहित छल । दुनूगोटेमे बड़ीकाल धरि गप्प-सप्प होइत रहल ।

17

गुरुग्राम वापस अबितहि हमर ध्यान एहिठामक समस्यासभमे ओझरा गेल । स्वभाविके । कारखाना लगभग बंद भए गेल छल । मासिक बेतन नहि भेटबाक कारण कार्यकर्तासभ कारखानामे काज बंद कए देने छल । तथापि किछु कर्मठ आ निष्ठावान कर्मचारीसभ कारखानाकेँ बँचबएमे अड़ल रहथि । अपना भरि प्रयासमे रहथि जे कारखाना फेरसँ चालू भए जाए । कतेको रोजी-रोटीक सबाल रहैक । मुदा कारखानाक हालत ततेक बिगड़ि गेल रहैक जे एकरा दोबारा पटरीपर आनब बहुत कठिन छल । सबसँ बेसी जरुरी रहैक जे ओहिमे प्रचूर मात्रामे टाका झोंकल जाए जाहिसँ बँकिऔतासभक भुगतान होअए । कैकटा मसीनसभ सेहो बैसि गेल रहए । तकरासभकेँ मरम्मति कराओल जाए वा बदलि कए नव मसीन आनल जाए । कुलमिला कए बहुत झंझटक काज लगैत छल । हमर गुरुग्रामक घर बिका चुकल छल । हम कैकदिनसँ होटलेसँ काज कए रहल छलहुँ । मुदा ई कतेक दिन चलैत। कर्मचारी युनियनक नेतासभ हड़ताल वापस तखने लेत जखन सभक बकिऔता दरमाहा दए देल जेतैक । हम कहिऐक जे थोड़ बहुत टाका लए तत्काल काज शुरु कएल जाए। जँ-जँ आमदनी होएत,सभक बकिऔता दए देल जेतैक । मुदा से केओ मानए लेल तैयार नहि भेल ।

दिनभरिक प्रयासक बात बिना कोनो ठोस परिणामकेँ हम होटल वापस आबि गेल रही । मोन बहुत थाकल लगैत छल । चाह मंगओलहुँ । किछु जलखैक सेहो ओरिआन करए कहलिऐक ।

ताबे अखबारक पन्नासभ उन्टा रहल छलहुँ । एतबेमे कारखानासँ जबरदस्त धधरा उठैत देखाएल । लगपासक घरबलासभ अग्निशमन विभागमे फोन कए देलकैक । अग्निशमन विभागक दमकलसभ सड़कपर दौर रहल छल । मुदा ओहूसँ बेसी गतिसँ कारखानाक आगि पसरि रहल छल । जाबे दमकलसभ काज शुरु केलक ताबे तँ आगि बहुत पसरि गेल छल । होटलक ओहि कोठरीसँ कारखानाक विनाशक दृश्य सद्यःदेखाइत छल । हमसभटा असहाय भेल देखैत रहलहुँ । बहुत मोसकिलसँ आगिपर काबू कएल जा सकल । ताधरि कारखानाकेँ बहुत क्षति भए चुकल छल। ओकर कतेको महत्वपूर्ण कागजात सेहो जरि गेलैक । कहि नहि आब कर्मचारीसभक हिसाब-किताब कोना की होएत?

घर बिका गेल । कारखाना बंद भए गेल । आब गुरुग्राममे रहब तँ कतए आ किएक? गामपर बाबूजी वयोबृद्ध भए गेल छलाह। माएक देहांतक बाद हुनकर स्वास्थ्य सेहो खसिते गेलनि । ओ बारंबार हमरा गाम अएबाक हेतु समाद दैत रहैत छलाह । हुनकर परेसानीक प्रमुख कारण दुखन छल । ओकर उत्पात बढ़िते जा रहल छल । इलाकामे गुंडामे ओकर नाम भए गेल छल । कतहु कोनो फसाद होइतैक ओकर नाम ओहिमे जरूर रहैत छलैक । कैकबेर ओ ओहिमे सामिल नहिओ रहैत छल तथापि ओकर नाम ओहिमे थाना धए दैक । कारण अपराधीकेँ पकड़बाक दबाब उच्च स्तरसँ अबैक। तकर एहन-एहन लोकसभ सुलभ समाधान भए जाइत छल । जहाँ मौका देखलक पुलिस एहन-एहन दू-चारिगोटेक नाम आगू कए दैत छल ।

एकदिन एहिना भोरे होटलमे चाह पीबि रहल छलहुँ । संगे अखबारक पन्ना उल्टा रहल छलहुँ । दोसर पृष्ठपर सभसँ ऊपर समाचार छल-"तारीक लेल दोकानदारकेँ छूरा मारि देल गेल । अपराधी ओही गामक अछि । मुदा घटनादिनक बादसँ निपत्ता भए गेल अछि ।" समाचारकेँ विस्तारसँ पड़लहुँ । ओहिमे दुखनक नाम मुख्य अपराधीमे छपल छल । संगहि ओकर किछु संगीसभ सेहो ओहिमे सामिल कहल जाइत छल । कैकदिन बीति गेलाक बादो पुलिस ककरो पकड़ि नहि सकल छल । ताहि कारणसँ इलाकामे असंतोष बढ़ि रहल छल । मामिला राजनीतिक रंग लेने जाइत छल। आखिर पुलिस महकमा सख्ती केलक । दुखन आ ओकर संगीसभ पकड़ल गेल ।

दुखनक कांड आ कुकांडसँ बाबूजीक मोन सदिखन आहत होइत रहैत छलनि । हम से बाहरे रहिअनि । दिवाकर सेहो हमरे लग रहए। गामपर ओ असगर रहथि । एनामे ओ केना की करैत हेताह से सोचि-सोचि मोन व्याकुल भए गेल । मुदा तेहन चक्रव्यूहमे फँसल रही जे बाहर होएब मोसकिले नहि असंभव लगैत छल । मुम्बईमे रागिनीकेँ बँचाउ,गुरुग्राममे अपनाकेँ बचाउ की गाममे बाबूजीकेँ देखअनि? समाधान किछु नहि सुझाइत छल । समाधानक रस्तासभ तँ टाका बाटे खुजैत छैक मुदा तकरे अभाव भए गेल छल। एकाएक हमर हालत एहन भए जाएत से अपनो विश्वास नहि होइत छल । मुदा से यथार्थ छल। ककरो मानला,नहि मानलासँ परिस्थिति थोड़े बदलि जइतैक ?आखिर करी की? कैकदिन एही गुनधुनमे पड़ल रहि गेलहुँ ।

आखिर निर्णयक क्षण आएल । दोसर दिन भोरे बाबूजीक फोन आएल । ओ कहलथि-

"तार पढ़ितहि गाम आबि जाह । रत्नेशक मोन बहुत खराब छैक ।"

आन कोनो बात रहितैक तखन तँ सोचबो करितिऐक,मुदा रत्नेशक दुखित हेबाक समाचार हमर मोनमे बिरड़ो मचा देलक । हम चोट्टे उठलहुँ । होटलक हिसाब केलहुँ । ओकरा चेक देलिऐक । एकटा चिठ्ठी दिवाकरकेँ लेखि देलिऐक। गामक स्थिति आ परिस्थितिसँ ओकरा अवगत कराएब बहुत जरूरी छल । सभटा बात चिट्ठीमे फरिछा कए लीखि देलाक बाद इहो लीखि देलिऐक जे ओ गुरुग्राम आबि जाए । जँ रागिनीकेँ मुम्बईमे अखन रहब जरूरी होइक तँ ओकरा ओतहि डाक्टर साहेब लग रहए दैक । गुरुग्राम आबि कए कारखानाक बाँचल-खुचल समानसभक कोनो जोगार लगाबए । जँ कोनो ग्राहक भेटि जाइत छैक तँ ओकरा बेचि दैक । हमरा ई सभ लिखनाइ एहि लेल जरूरी बुझाएल जे गाम गेलाक बाद केहन हालत रहत,कहिआ धरि वापस आबि सकब तकर कोनो ठेकान नहि बुझाइत छल । अपने डाकघर जा कए चिट्ठी स्पीडपोस्टसँ लगा देलिऐक । ओहिठामसँ सोझे गामक रेलगाड़ी पकड़बाक हेतु टीसन चलि गेलहुँ ।

हमर चिठ्ठी संयोगसँ रागिनीक हाथमे आबि गेलैक । ओहि समयमे दिवाकर अस्पतालक काजसँ गेल रहए । डाक्टर साहेब सेहो ओकरे संगे बाहर गेल रहथि । तँ डाकिआ चिठ्ठी रागिनीकेँ थम्हा देलकैक । चिठ्ठीपर हमर अक्षर देखि रागिनीकेँ नहि रहि भेलैक । ओ तुरंत चिठ्ठी खोलि पढ़ए लागलि । चिठ्ठी पढ़ि ओ बहुत चिंतामे पड़ि गेलि । मुदा करैत की? घंटा भरिक बाद दिवाकर

अस्पतालसँ दबाइक पुरजी आ एक पथिआ दबाइ लेने आएल । सभटा दबाइक जोगार डाक्टर साहेब अपने कए देलखिन । ओकरा घर अबितहि रागिनीपर ध्यान गेलैक । ओ कतहु नहि देखा रहल छलैक। "कतए छी?कतए छी?" कएक बेर आबाज देलक । रागिनी कोनबला कोठरीमे ओछाओनपर पड़ल कानि रहल छलि। दिवाकर ओकरा एना कनैत देखि बहुत परेसानीमे पड़ि गेल ।

"बहुत मोसकिलसँ अहाँक स्वास्थ्य ठीक भए रहल अछि । तेँ अनेरे कानि कए एकरा फेर गड़बड़ नहि कए लिअ । ठीक भए जाउ, तकर बाद जे करबाक होएत से करब ।"-दिवाकर बाजल ।

रागिनी बिना किछु बजने हमर चिठ्ठी ओकरा पकड़ा देलकैक । दिवाकर दबाइक झोरा ओतहि राखि कुर्सीपर बैसि चिठ्ठी पढ़ए लागल ।

दिनभरि दिवाकर आ रागिनीमे घमरथन होइत रहल । रागिनी सेहो दिवाकरक संगे गुरुग्राम जाए चाहैत छल । मुदा अखन ओकर इलाज पूरा नहि भेल छलैक । एहि परिस्थितिमे ओकर मुम्बई छोड़ब ओकरापर भारी पड़ि सकैत छलैक । आखिर दिवाकर असगरे गुरुग्राम बिदा भए गेल ।

18

ओमहर हमभोरे भोर गाम पहुँचलहुँ । जहाँ गामक सीमामे पैर रखलहुँ की दुखनक बारेमे तरह-तरहक बातसभ सुनबामे आबए लागल । बेसी बात तँ बूझले छल । टटका समाचार ई छल जे कहाँ

दनि रातिमे पुलिस छापा मारि कए हमरा लोकनिक गामक घरसँ सभटा सामान जब्त कए लेलकैक । बाबूजी ओसारापर असहाय भेल देखैत रहलाह। मुदा ओ करबे की करितथि? दुखनक नामे तलासी अधिपत्र छलैक ।

नोनिआटोलमे कोनो युवकक हत्या भए गेल रहैक। ओहि केसक चर्चा सौंसे राज्यमे भए रहल छल । अखबार ओकर समाचारसँ पाटल रहैत छल । जन आक्रोश बढ़ैत देखि सरकार एहि मामिलाक जाँच करबाक हेतु सीआइडीकेँ दए देने छलैक । सीआइडीकेँ सक रहैक जे एहि मामिलामे दुखनक हाथ अछि । पुलिस बहुत प्रयास केलक मुदा दुखन हाथ लगैक नहि । तैं घरक समानक जब्ती-कुर्कीक आदेश न्यायालयसँ करओलक । पुलिस ताही आदेशक पालन करैत दूपहर रातिमे घरमे पैसि गेल । ओकरा कतहुसँ सूचना भेटल रहैक जे दुखन रातिमे घरेमे रहैत अछि । मुदा छापामे कोनो खास समान नहि भेटलैक । दूखन तँ घरमे रहबे नहि करैक । तखन जएह हाथ लगलैक से लेने पुलिस वापस चलि गेल। घरक केबार धरि निकालि लेलक । घरमे तीन बोरा चाउर छल,किछु दालि,किछु अल्लु सेहो छल । पुलिस सभटा उठा-पुठा कए लेने चलि जाइत रहल । जेबासँ पहिने पुलिस घरक देबालपर सूचना साटि देलकैक ।

ओही दिन भोरे हम गाम पहुँचल रही । दरबाजापर पहुँचैत-पहुँचैत लागल जेना पाँच सए कोस चलि कए आबि रहल छी। बाबूजी असोथकित चौकीपर पड़ल रहथि । घरक हालत बहुत लटपटा गेल छल । ओहनोमे बाबूजी रत्नेशकेँ रखने रहैत छलाह। दिन-राति अपन छातीसँ सटने रहैत छलाह । काजबाली सेहो एहि

काजमे मदति करनि । मुदा जखनसँ पुलिसक छापा पड़ल ओ हमरा ओहिठाम काज केनाइ छोड़ि देलक । ओकरा डर भए गेलैक जे कहीं ओकरो नाम पुलिस केसमें ने पड़ि जाइक । तेहन हालतमे हमरा आएल देखि बाबूजीक जानमे-जान अएलनि । हम हुनका जहाँ पैर छुबि प्रणाम केलहुँ तँ ओ चोट्टे उठि बैसलाह,जेना किछु भेबे नहि कएल होइक । हमरा आएल देखि काजोबाली आङन आएलि। ओ रत्नेशकेँ हमरा लग लेने आएलि । रत्नेशकेँ हमरासँ अनचिन्हार लगैत छलैक । हमरा लग अबितहि जोर-जोरसँ कानए लागए । बहुत मोसकिलसँ ओ चुप्प भेल । बाबूजी सेहो कनी शांत बुझेलथि।

19

गाम अएलाक बाद कैक दिन थाना कचहारीक चक्कर लगबैत रहलहुँ । मुदा दुखनक जमानत नहि भेलनि । कोनो एक-दूटा केस रहनि तखन ने सलटि जाए । थानामे ओकरा खिलाफ एक ढाकी मोकदमा चलि रहल छलैक । ओ तँ दिन-राति एहीसभमे रहैत छल । अनको झंझटसभ अपन माथपर बेसहाने रहए । पुलिसक कहब जे जाबे ओ हाजिर नहि हेताह ताबे जमानत कोना हेतनि? न्यायालयोसँ कोनो राहत नहि भेटि सकलनि ।

दुखन तँ अपन दुनिआमे मस्त छल । भोरे पीबति,साँझमे पीबति आ अंतमे सुतबा कालमे पीबति । तेँ कोनो चिंता करबाक अवसरे नहि रहैत छलैक । जकरा जे होइत छैक से होउक । अनका की होइतैक मुदा बाबूजीक बहुत तबाही भए रहल छलनि । ओ दुखनक चिंता करैत-करैत स्वयं बिमार भए गेल छलाह । एहने

परिस्थितिमे एक राति ओछाओनपर सुतले-सुतल हृदयाघात भेलनि। थोड़ेक काल ऐंह-उँह केलाह । फेर शांत भए गेलाह ।

रातिमे ककरो किछु पतो नहो लगलैक । भोरे जखन हम उठलहुँ तँ ओ दरबाजापर ओछाओनपर पड़ले रहथि ।

“एहन तँ भए नहि सकैत अछि जे ओ एतेक काल धरि सुतले रहथि। जरूर कोनो बात छैक ।”-हम मोने-मोने सोचलहुँ। जखन हुनका लग गेलहुँ आ उठेबाक प्रयास केलहुँ तँ हुनकर सौंसे देह हिलि गेल। देहमे कतहु जान नहि छलनि । हम बात बूझि गेलिऐक जे बाबूजी एहि दुनिआमे नहि छथि । दरबजेपर हम जोरसँ हाक देलिऐक । हमरा चिकरैत सुनि लग-पासक लोकसभ जमा भए गेल । देखिते-देखिते की सँ की भए गेल?

लोकसभसभ तरह-तरहक बातसभ कए रहल छल ।

“जे ने करए दुखन..”

“दुखनेक चिंतासँ हुनकर ई गति भेलनि ।”

“बएसो भए गेल छलनि । फेर कोनो सुखो तँ नहिए छलनि । भने चलि गेलाह ।”

गौंवासभक बात हम सुनि रहल छलहुँ । मुदा ककरा की कहतिऐक? ककर-ककर मुँहमे जाबी लगा दितिऐक? परेसान तँ ओ छलाहे-जाएज वा नजाएज ।

बाबूजीक देहांतक समाचार दिवाकरकेँ देल गेलनि । ओ पहिनेसँ बहुत परेसान छल । मुम्बईसँ रागिनीसँ फराक होइत काल ओकरा कोनो नीक नहि लागल रहैक । तथापि परिस्थितिवश ओ गुरुग्राम आबि गेल रहए । मुदा ओकर मोन सदरिकाल ओतहि

लटकल रहैक । रागिनीक प्रति ओकर सिनेह जगजाहिर छल । मुदा ताहि संग संयम आ कर्तव्यवोध ओकर व्यवहारकेँ सदिखन परिमार्जित केने रहैत छलैक । ओकरा उमीद रहैक जे थोड़बे दिनमे सभकिछु फेरसँ ठीक भए जेतैक आ ओ सभगोटे पुनः सुखपूर्वक गुरुग्राममे रहि सकत । अपना भरि कारखानामे प्राण फुँकबाक सेहो ओ बहुत प्रयास केलक । मुदा से कारगर नहि भेल । कनी-मनी समस्या रहितैक,तखन ने ओकर छोट-मोट समाधान संभव होइत। ओ तँ ततेक जर्जर भए गेल छल जे ओकरा दोबारा चालू करब संभव नहि भए सकलैक । से बात ओ हमरा कैकबेर कहबो केने रहए । हमही ओकरा थोर-थाम लगबैत रहलहुँ । सोची जे गामसँ निपटि एकबेर अंतिम प्रयास करब । यदि से सफल भेल तँ बड़ बढ़िआँ नहि तँ ओकरा बेचि निठ्ठाह कए गाम चलि आएब । गामेमे खेती-बारी करब । मुदा मनुक्खक सोचल किछु कहाँ होइत छैक? सभ किछु प्रतिकूले होइत गेल । गाम गेलाक बाद पता लागल जे दुखनक दबाबमे बहुत रास जमीन बाबूजी सस्तेमे बेचि देलाह । आब तँ नाम मात्र जमीन बाँचल छल । ताहि भरोसे जीवन कदापि नहि चलि सकैत छल । तखन? जे भावी ।

एही बीचमे बाबूजीक देहावसान भए गेलनि । आब सभसँ पहिने तँ हुनकर श्राद्ध करब जरुरी छल । तकर बादे किछु सोचल जाएत । दिवाकरसँ गप्प भेल तँ ओ कारखानाक दुखद परिस्थितिक बारेमे कहए लागल । ओ कोनो नव बात नहि छल । जँ किछु सुधरि जाइत तँ चमत्कार होइत । हम दिवाकरकेँ कहलिऐक-

“तूँ अखन सभकिछु बिसरि गाम आबि जाह । बाबूजीक श्राद्ध कए लैत छी । तकर बाद ओहि समस्यासभपर सोचल जेतैक ।”

हमर बात मानि दिवाकर गाम बिदा भए गेल । कारखाना बंदे छल आ संप्रति बंदे रहत । तेँ ओकरा ओहिना छोड़ि देलक । पिताक मृत्युक समाचार दुखनकेँ सेहो कोना-ने-कोना भेटि गेलैक। ओ दूपहर रातिमे नित्य आबि जाए । हमरासभसँ भेंट करए आ भोर होबएसँ पहिने कतहु चंपत भए जाइत छल । ई क्रम द्वादशा धरि चलैत रहल । मुदा द्वादशाक भोज संपन्न होइतहि रातिएमे पुलिसक छापा पड़ि गेल । दुखन पकड़ल गेल । हमरा सामनेमे पुलिस ओकरा मारैत-पिटैत घिचने चलि गेलैक । हम सभकिछु देखैत रहि गेलहुँ । दिवाकर सेहो जगले छल । हल्ला सुनि कए ओ अपन कोठरीसँ बाहर निकलल । ताबे पुलिस दुखनकेँ जीपपर बैसा कए आगू बढ़ि गेल छल ।

20

हम सभदिन बाहरे रहलहुँ । दिवाकर सेहो कमोबेस हमरे संगे गुरुग्राामेमे रहल । गामपर रहि गेलाह बाबूजी,माए आ दुखन। जेहने नाम दुखन तेहने ओकर काजो दुखन छल। माए-बाबूजीक जिनगीकेँ ओ नर्क कए देलक । ओकरे चलते दुनूगोटेक दुखद अंत भेलनि । सभचीज अछैतो ओ सभ घोर अभावमे जीबाक हेतु विवश भए गेलाह । सभसँ दुखक बात जे अपने संतान हुनकर जीवनक उत्तरार्धमे शत्रु बनि कए ठाढ़ भए गेलनि । मुदा जे हेबाक छल से भेल । आब माए-बाबूजी तँ छथि ने जे ओकर अपराधसभ आँखि मुनि कए क्षमा करैत रहताह । समाजमे जीबाक हेतु दोसरक सुख-दुखक विचार करब जरूरी होइत अछि । खाली अपने हिसाबे तँ जानबरे रहि सकैत अछि ।

दुखनक दुर्दशा देखि बहुत दुख भेल । जीवनमे ओहिना कोनो कम कष्ट छैक जे लोक आओर दुख बेसाहत? मुदा आदमी अपन स्वभावसँ लाचार रहैत अछि । जनितो जे ओ सही रस्तापर नहि अछि लोक ओएहसभ करैत रहैत अछि जे ओकर विनाशक कारण बनि जाइत छैक । दुखन कोनो नेना नहि छल । ओकरा बुझेबाक,सही रस्तापर अनबाक कोनो कम प्रयास बाबूजी नहि कएलनि । अपितु,सालक-साल ओहीमे लागले रहलाह । कैकबेर ओकर जायज-नाजायज इच्छाक पूर्ति करैत रहलाह । सदरिकाल इएह सोचथि जे आब रस्तापर आओत तँ ताब । मुदा ओ गड़बड़ाइते गेल। कहाँ-कहाँसँ गलत लोकक संगति ताकि लिअए। गलत काज करब तँ जेना ओकर स्वभाव भए गेल छलैक ।

दुखन सभकेँ दुख दैत रहल मुदा अपनो तँ दुखेमे रहए । समस्या आब तँ ई छल जे ओकरा जमानत कराओल जाए,जहल जेबासँ बँचाओल जाए कि अपन भाग्यपर छोड़ि देल जाए । इहो तय नहि छल जे हमर प्रयास केलासँ ओकरा जमानत भइए जेतैक। जँ से भइओ गेलैक तँ कोन ठेकान जे ओ नबका उकबा नहि कए लेत? कोनो ठेकान नहि । अपितु,भए सकैत अछि जे प्रतिशोधक आगिमे जरैत ओकर मोन कतहु कोनो आओर बड़का फसाद ने कए लिअए ।

पुलिसकेँ जतेक कुन्नह रहैक से ओ रातिभरिमे निकालि लेलक । ओ सभ दुखनकेँ हाजतिमे बड्ड मारि मारलक। बाहरसँ किछु नहि देखाइक मुदा ओ दर्दसँ बफारि तोड़ि रहल छल । भोरमे जखन गामक लोक ओकर हाल-चाल लेबए थाना पहुँचल तँ पुलिस ओकरासभकेँ बाहरे रोकि देलक । ककरो थानाक भीतर नहि जाए

देल गेल । ओकरा दस बजे दंडाधिकारी लग लए जेबाक रहैक । तेँ हाजतिसँ निकालि ओकरा पुलिस जीपपर राखल गेल । मुदा रतुका मारिसँ ओ पस्त पड़ि गेल छल । एकहु डेग चलल नहि होइक । आधा रस्ता जाइत-जाइत ओ बेहोस भए गेल । एहि बातसँ पुलिससभ परेसानीमे पड़ि गेल । डर होबए लगलैक जे जँ एकरा किछु भए गेलैक तँ नौकरी कोना बाँचत?

न्यायालय जेबासँ पहिने ओकरा अस्पताल लए जाएब जरुरी भए गेल । अस्पतालक आपत्तिकालीन विभागमे ओकरा पुलिस भर्ती करओलक । दुखनक हालत देखि पुलिसकेँ डाक्टर पुछलकैक-

“एकर ई हालत केना भेल?”

“ई बहुत बदमास अछि, डाक्टर साहेब । रस्तामे हमरासभकेँ धकिआ कए पुलिस जीपपरसँ कुदि गेल । मजबुरीमे हमरासभकेँ लाठी चलबए पड़ल । जँ से नहि करितहुँ तँ ई तँ भागिए जाइत, हमसभ सेहो नहि बँचितहुँ ।”

डाक्टर की बजैत,चुप्पे रहि गेल । पुलिसक ई कोनो एकदिनक काज तँ छलैक नहि । ओ सभ नित्य एहन घटना देखैत अछि । तखन दुखन पुलिसक कब्जासँ कोना भागि जाइत ? सभ मनगढ़ंत बात सभ छलैक । डाक्टरसभ ई बात बुझैत छलाह । मुदा पुलिस संगे के झंझट करत? काल्हि जा कए ओकरो इएह हाल कए सकैत अछि ।-से सोचि डाक्टरसभ मेडिकल विवरणमे असली बातसभ नुका देलक । जे-जे पुलिस कहैत गेलैक सएह लीखि देलक ।

दुखनकेँ अस्पतालमे भर्ती रहबाक कारण न्यायालय नहि आनल जा सकल । साँझ धरि ओकर हालतमे लगातार सुधार भए

रहल छल। मुदा दूपहर रातिमे की भेल,की नहि ओ आँखि उल्टा देलक। भोरे हमरासभकेँ पुलिस सूचित केलक जे दुखनक इलाजक समयमे अस्पतालमे मृत्यु भए गेलनि । दुखन गलती रहए की सही से विवाद अपने तय भए गेल। न्यायालयक काज नहि पड़ल ।

दुखनक लास लेबाक हेतु हमरा संगे गामसँ किछु आओर गोटे थाना पहुँचलहुँ । मुदा पुलिस कहलक-"अखन तँ हिनकर शवपरीक्षण हेतनि । न्यायालयक आज्ञा सेहो लेबए पड़तैक । तकर बादे अहाँसभ आएब ।" हमसभ ओहिठाम बैसल की करितहुँ? गाम वापस आबि गेलहुँ । दोसर दिन भोरे पुलिस हमरासभकेँ लास लेबाक हेतु शवगृह बजओलक । भोरे हमसभ ओतए पहुँचलहुँ। दुखनक लास हमरासभकेँ दए देल गेल । लास लए हमसभ जीवछ पुल लग पहुँचलहुँ । हमरासभक संगे किछु पुलिस सेहो छल । ओहिठाम लासकेँ स्नान करेबाक काल लोकसभ चिकरि उठल-

"जा! एकर तँ दुनू आँखि गायब छैक। पेटो कैकठाम चिरल छैक ।"

पुलिस ओहि आदमीकेँ धए लाठी मारलक । ओ ठामहि खसि पड़ल । ककरो साहस नहि भेलैक जे तकर बाद किछु बाजत।

जीबछपुल लग धारक कातमे श्मशानमे होइत हल्ला सुनि कए सामने सड़कपर जा रहल विद्यार्थीसभ ओतए आबि जाइत गेल। ओ सभ परीक्षा देबए मधुबनी जा रहल छल । ओहीमेसँ सड़केपरसँ एकटा विद्यार्थी पुलिसक अत्याचारक भीडिओ बना लेलक । केओ मीडियाबलासभकेँ बजा लेलक । देखिते-देखिते श्मशानमे लोकक भीड़ लागि गेल । पुलिसक प्रयास रहैक जे जल्दी सँ जल्दी लासकेँ जरा देल जाए जाहिसँ मामिला खतम भए जाइत।

मुदा ओहिठाम एतेक जल्दी लोकक हुजुम जमा भए जाएत आ मीडियाक लोक सौंसे देशमे एहि घटनाक प्रचार करए लागत से तँ ओ सभ कहिओ सोचने नहि छल ।

दुखनक लासकेँ चितापरसँ उतारल गेल । सरकारक आदेशानुसार ओकर दोबारा शवपरीक्षण डाक्टरसभक मंडली द्वारा कएल गेल । ओकर विवरण गुप्त छल । मुदा केना-ने-केना मीडियाक लोकसभक ओकर प्रतिलिपि प्राप्त कए लेलक । प्रात भेने सभ अखबारक मुखपृष्ठपर एहि समाचारकेँ प्रमुखतासँ छापल गेल । एक तँ पुलिस हिरासतमे अकाल मृत्यु भेल छल,दोसर मृतकक लाससँ ओकर देहक कतेको महत्वपूर्ण अंग बिला गेल छल। निश्चय ई घटना असाधारण छल । केओ नहि सोचने होएत जे एहनो होएत । सभ चीजक चोरी तँ सुनैत छल । मुदा देहक अंगसभक एना चोरी कएल जाएत से तँ खिस्सेमे केओ पढ़ने रहल होएत । देखिते-देखिते सौंसे देशमे ई मामिला गरमा गेल । सभक इएह अनुमान रहैक जे एहिमे बहुत उच्चस्तरक षड़यंत्र अछि । भए सकैत अछि जे मानव तस्करीक ई काज होअए । ई भेल,ओ भेल,किछु दिन ई मामिला खूब गरमाएल रहल। तकर बाद तेना ने बिला गेल जे फेर केओ कतहु एकर चर्चो करैत नहि सुनाएल। कहक माने जे कोनो मजगूत शक्ति एहि मामिलाक रफा-दफा कए देलक ।

ओही राति अन्हरिएमे हमरासभकेँ पुलिस घरसँ उठओलक आ दुखनक लासकेँ कोनो अज्ञात स्थानपर अग्निकेँ समर्पित कए देलक । संयोग छल की पूर्वनियोजित षड़यंत्र ,एहि घटनाक दृश्यक भीडिओ भोरे सौंसे सोसल मीडियामे पसरि गेल । पुलिसक हाथ-

पैर फुलि रहल छल । आब की कएल जाए? सरकारक इज्जति बँचाएब मोसकिल भए गेल छलैक । हमरासभकेँ उठा-पुठा कए कतहु अज्ञात स्थानमे पुलिस नुका देलक । सप्ताह भरि हमसभ ओतहि रहि दुखनक क्रिया-कर्म करैत रहलहुँ । आखिर नओ केस दिन हमसभ गाम पहुँचि सकलहुँ । ओतहि जेना-तेना दुखनक श्राद्ध संपन्न भेल ।

21

दुखनक श्राद्धक बाद हम आ दिवाकर कैक दिन धरि भविष्यक योजना बनबएमे लागल रहलहुँ । एक मोन होअए जे वापस गुरुग्राम चली । ओहीठाम फेरसँ जिनगीकेँ पटरीपर अनबाक प्रयास कएल जाए । मुदा तकर साहस हमरासभमे नहि रहि गेल रहए। संयोगेसँ हम ओतेक आगू चलि गेल रही । गुरुग्राममे घर बना लेलहुँ। कारखाना स्थापित कए लेलहुँ । रागिनीकेँ आगू पढ़बामे मदति केलहुँ । दिवाकरकेँ सेहो जोगार भेलनि । मुदा अचानक रानीक अकालमृत्युसँ सभ किछु गड़बड़ा गेल । तखनसँ सभकिछु उल्टे-पुल्टे होइत गेल । आओर बात तँ छोड़ू,रागिनीकेँ एहन बिमारी हेबाक ई कोन समय छल? एकदम युवा अवस्थामे ओकरा कैंसर सन असाध्य रोग भए गेल जाहिसँ सभ मजबूर भए गेल । धन्य कही डाक्टर शशांककेँ जे ओ रागिनीक हेतु देवदूत बनि कए प्रकट भेलाह । अपन जानपर खेपि कए रागिनीकेँ बँचा लेलाह ।

गामक माहौलसँ,ओतए घटित घटनासभसँ हमर मोन उबिआ गेल छल । ओमहर मुम्बईमे रागिनीक स्वास्थ्यक बारेमे तँ

चिंतित रहिते छलहुँ । गुरुग्राममे कारखाना से बंद पड़ल छल । ओकरो कोनो हिसाब जरूरी छल ।

दिवाकरसँ एहिसभ विषयपर चर्चा करबाक विचारसँ हम ओकरा बजओलहुँ । ओ पोखरि दिससँ आबि चाह बना रहल छल। दुनूगोटे चाह पिलहुँ । संगे भविष्यक योजनापर विमर्श सेहो केलहुँ।

“हम तँ फिलहाल मुम्बई जा कए रागिनीक हाल-चाल लेब सभसँ जरुरी बुझैत छी । रहल कारखानाक बात । ताहिपर कोनो निर्णय अहींकेँ लेबाक होएत । ओना आब ओहिमे कोनो जान नहि छैक। ओहिमे पूँजीसँ बेसी लागत छैक।”

“हमरा हिसाबे तूँ पहिने मुम्बइसँ भए आबह । फेर दुनू भाइ किछुदिन संगे गुरुग्राममे रहब । तखने कारखानाक भविष्यक बारेमे निर्णय कएल जाएत । ताबे हम गामेपर रहब । एकाएक गामो छोड़ि देब ठीक नहि बुझा रहल अछि। आखिर दुखनक भेल अन्यायक किछु तँ निराकरण हेबाक चाही?”

“ठीक छैक । तँ हम सएह करैत छी ।”

प्रात भेने दिवाकर मुम्बई बिदा भए गेल । ओकरा चलि गेलाक बाद हम आओर असगर भए गेलहुँ । रहि-रहि कए माए-बाबूजी मोन पड़ैत रहैत छलाह । दुखनक वृतांत तँ मोन पड़िते छल। मुदा कएल की जाए से नहि बुझा रहल छल ।

22

डाक्टर शशांक आ रागिनीक परिचय बहुत पुरान छल । रागिनी किछु दिन मामा गाम,रुद्रपुरमे अपन नाना-नानीक संगे रहैत छलि । डाक्टर शशांक रागिनीक नानासभक भगिनमान रहथि । हुनकर माए अपन नैहरेमे बसाओल गेल रहथि । हुनका नैहरमे रहबाक हेतु पर्याप्त खेत,कलम,पोखरि,इनार सभ किछु देल गेल रहनि । रुद्रपुरे प्राइमरी इसकूलमे शशांकक भेँट रागिनीसँ भेल रहैक । दुनूगोटे एकहि किलासमे रहए । अपन किलासमे शशांक प्रथम तँ रागिनी दोसर स्थान पबैत छल । एकबेर परीक्षा परिणाम उल्टा भए गेलैक । रागिनीकेँ प्रथम स्थान भेटलैक आ शशांक दोसर स्थान प्राप्त केलक । इसकूलमे सभ इएह कहए लागल जे नागेन्द्र बाबू रागिनीकेँ बेसी नंबर दए देलखिन नहि तँ ओ प्रथम स्थान नहि आनि सकैत छलि । शशांक एहि बातसँ बहुत दुखी भेलाह । तकरबाद ओ ओहि इसकूलसँ नाम कटा कए लहेरिआसरायक नामी इसकूलमे चलि गेलाह । रागिनी सेहो अपन गाम चलि आएलि आ आगूक पढ़ाइ दोसर इसकूलमे केलक । अस्तु,शशांक आ रागिनीक आपसी दोस्तीमे अचानक विराम लागि गेलैक ।

एतेक पैघ अंतरालक बाद मुम्बईक अस्पतालमे शशांकक रागिनीसँ भेंट भेलैक । ताबे की-की ने बदलि गेल छल । रागिनी जबान भए गेल । शशांक एकटा नामी डाक्टर भए गेलाह । मुम्बई सन महानगरमे नीकसँ व्यवस्थित भए गेलाह । सभ किछु भेलैक मुदा ओकरा कालेजमे पढ़ाइक समयमे वा ओकर बादो ककरोसँ

तेहन दोस्ती नहि भेलैक । मुम्बई अस्पतालमे तँ कैकटा संगी महिला डाक्टरसभ बहुत आकर्षित भेल रहैक । मुदा शशांककेँ ककरो संग अंतरंगता नहि भेलैक । जखन ओ रागिनीकेँ देखलक आ ओकर इलाजक समयमे ओकर संपर्कमे आएल तँ ओकर पुरान परिचयमे नवांकुर भेलैक । ओ परिचय क्रमशः आपसी सिनेहमे परिणति होइत गेलैक,सेहो अकस्माते। ने शशांककेँ कोनो प्रयास रहैक ने रागिनीकेँ । रागिनी तँ ताहि स्थितिमे रहबो नहि करए । बिमारीक कारण दिन-राति परेसान रहैत रहए ।

अस्पतालक इलाजक बाद जखन परिस्थिति एहन भेलैक जे रागिनी शशांकक लगीचेमे रहए आबि गेलि तखन तँ सभ किछु अनुकूल भए गेल । शशांकक निरंतर प्रयाससँ रागिनीक स्वास्थ्यमे सुधार होइत गेलैक । ओकरा बहुत दिनक बाद भोजन करबामे रुचि लगैक । समय केना बीति जाइतक तकर पतो नहि चलैक । ई क्रम दिवाकरकेँ गुरुग्राम चलि गेलाक बाद आओर तीव्रतासँ चलैत रहल। दुनूगोटे एकदोसरक सामिप्यमे बहुत सुखी छल। शशांक अस्पताल जइतथि आ मौका पबितहि अपन डेरा चलि अबितथि । रागिनी तँ जेना सदिखन हुनकर बाटे तकैत रहैत छलि।

आपसी संबंधमे एतेक प्रगाढ़ताक बादो ने रागिनीकेँ,ने शशांककेँ एक-दोसरसँ कोनो अपेक्षा रहनि । शशांक कोनो तरहें रागिनीकेँ स्वस्थ देखए चाहैत छलाह आ रागिनीक इच्छा एतबे रहैत छलनि जे डाक्टर साहेबकेँ हुनका चलतें परेसानी नहि होनि ।

जखन रागिनीक हालतमे बहुत सुधार भेल आ ई बुझाए लागल जे आब दबाइसँ बेसी हुनका नीक आ सुखद परिवेशक आवश्यकता छनि तँ शशांक अपना भरि सेहो करबाक प्रयास

केलनि । ओतए केओ छल नहि जकरापर किछुओ भार देल जाइत। एहीक्रममे जखन शशांककेँ अस्पतालक काजसँ राँची जाएब जरुरी भेलनि तँ ओ रागिनीकेँ सेहो अपना संगे चलबाक आग्रह केलथि । असगर ओ हुनकर डेरापर रहि तँ सकैत छलि मुदा ताहि हेतु बेसी तरुदतिक प्रयोजन होइत । कहीं रागिनीक स्वास्थ्य फेर ने गड़बड़ा लागनि ताहि डरे ओ आग्रहपूर्वक हुनका अपना संगे राँची लेने चलि गेलथि । ओ अपने सरकारी अतिथिगृहमे ठहरलथि। रागिनीकेँ लगीचेमे प्राकृतिक चिकित्सालयमे भर्ती करा देलनि । दिनभरि ओ अस्पतालक काजमे व्यस्त रहथि । रागिनी मधुबनी चित्रकला करथि, गीत-नाद सुनथि आ कखनहु काल बाहरो घुमि आबथि । ओहीक्रममे एकदिन पर्यटनकेन्द्रमे रागिनीक भेंट नागेन्द्र बाबूसँ भेलनि ।

रागिनीकेँ अपनो नहि बूझल रहैक जे ओ एतेक नीक मिथिला चित्रकला बना सकैत छथि । नित्य खाली समयमे ओ एहि काजमे लागल रहलीह । नीक सँ नीक मिथिला चित्रकलाक सृजन होइत रहल । ओ सभटाकेँ नुका कए रखने जाथि । जखन एकदिन नागेन्द्र बाबू ओकरासँ भेंट करए प्राकृतिक चिकित्सालयमे आएल रहथि तँ गप्प-सप्पक क्रममे ई बात सेहो उठि गेलैक । नागेन्द्र बाबू मिथिला चित्रकलामे स्वयं माहिर रहथि । इसकूलमे खाली समयमे ओ इएह काज करथि । रागिनीकेँ चित्रकलाक प्रति अभिरूचि देखि ओ बहुत प्रसन्न भेलथि । रागिनी एक-एक कए सभटा चित्रकला आलमीरासँ निकालि-निकालि देखाबए लगलीह । ओही समयमे शशांक अस्पतालक काज संपन्न कए डेरा वापस आएल रहथि । रागिनी हुनका प्राकृतिक चिकित्सालयमे बजा लेलखिन ।

शशांक रागिनीक मिथिला चित्रकलासभक संग्रह देखि बहुत चकित रहथि । हुनका बूझल रहनि जे रागिनी ई काज जनैत छथि मुदा ओ एहिमे एतेक प्रवीण छथि से अनुमान नहि रहनि । ओ एक-एकटा चित्रकला बहुत ध्यानसँ देखैत रहि गेलाह । अंतमे एकटा चित्रकला देखि ओ मूर्तिवत भए गेलाह । ओहिमे हुनके चित्रण कएल गेल छल । से ततेक सटीक छल जे लागए जेना शशांक ओहिमे सँ निकलि आब बजताह तँ ताब । रागिनीक प्रतिभासँ ओ बहुत प्रभावित रहथि । हुनका बहुत किछु कहबाक मोन भेलनि मुदा सामनेमे नागेन्द्र बाबू रहथिन अस्तु,चुप्पे रहि गेलाह ।

शशांककेँ बहुत दिनक बाद नागेन्द्र बाबूसँ भेंट भेल रहनि। तथापि,ओ सभ सहज नहि रहथि । शशांक थोड़बे कालक बाद अपन डेरा वापस चलि गेलाह ।

23

नागेन्द्र बाबू हमर पिताक पितिऔत भाइ रहथि । हुनकर सहोदर नहि रहथिन,ने भाइ ने बहिन । हमर पिता आ नागेन्द्र बाबूमे बहुत नीक संबंध रहनि । ओ हमरा सभगोटेकेँ अपने संतान जकाँ बुझथि । जखन-करवनो प्रयोजन होइत ओ हमरासभक संगे ठाढ़ भए जइतथि । नागेन्द्र बाबू अपना इलाकामे प्रथम स्नातक छलाह। संगे शिक्षकक प्रशिक्षण सेहो केने रहथि । तकर बाद ओ माध्यमिक विद्यालयमे प्रधानाध्यापक भए गेल रहथि । इसकूल गामसँ लगीचे छल । अस्तु,ओ साइकिलसँ आबाजाही करथि । गामक सड़ल राजनीतिसँ ओ एकदम हटल-हटल रहैत छलाह । कोनो विवादमे

नहि पड़ैत छलाह । अपन बँचलाहा समय अध्ययनमे बिताबैत छलाह । ओ स्वभावेसँ अध्यात्मिक प्रकृतिक रहथि । तेँ सामान्यतः उद्विग्न नहि होइत छलाह ।

हमरा नीकसँ मोन अछि जे जखन शशांक आ रागिनीक परीक्षाफल लए कए विवाद भेल छल तँ ओ कनीको परेसान नहि भेल रहथि । असलमे हुनकर ओहिसँ किछु लेना-देना छलहो नहि। परीक्षा संबंधी सभटा काज उपप्रधानाचार्यजी करैत छलखिन । भए सकैत अछि जे ओएह किछु गड़बड़ कए देने होथि । अपना भरि नागेन्द्र बाबू दुनूगोटेकेँ इसकूल नहि छोड़बाक हेतु कहलखिन। मुदा जखन ओ सभ नहिए मानलखिन तँ सभबात बिसरि अपन काजमे लागि गेलाह । जकरा जे मोन होइक बाजओ,ओ अपन काजमे लागल रहथि ।

इसकूलमे काज करैत-करैत ओ कतेको गरीब विद्यार्थीकेँ मदति केलाह । ओकरासभक आत्मसम्मानकेँ जगओलाह आ जीवनमे उत्कृष्टता अनबाक प्रयास करबाक हेतु प्रेरित करैत रहलाह। कैकटा विद्यार्थीकेँ जखन टाकाक दिक्कति होइक तँ ओ अपना दिससँ मदति कए देथि । कतेको विद्यार्थीकेँ किताब-काँपी किनि देथि ।

नागेन्द्र बाबूकेँ एकमात्र संतान सरला छलखिन । बेटाक हेतु बहुत कबुला-पाती केलाह । मुदा हुनकर सभक मनोकामना पूर्ण नहि भए सकलनि । बेटीक बहुत नीकसँ पालन-पोषण केलनि। नीकसँ बिआह-दान केलथि । जतेक करबाक चाही ताहिसँ बेसीए केलखिन । कालक्रमे बेटी अपन सासुर चलि गेल । गामपर रहि गेलाह अपने दुनू बेकती । बेटीक बिआहमे बहुत रास

जमीन बिका गेलनि । किछु कर्जो भए गेलनि । सोचलथि जे बिआह बेर-बेर तँ होएत नहि । बेटी नीकठाम पहुँचि जाएत तँ जीवन बनि जेतैक । मुदा अपन सोचल की होइत छैक ?

नागेन्द्र बाबू बेटीक बिआह शशांकसँ केने छलाह । ओ बिआहक समयमे डाक्टरीमे दरभंगा मेडिकल कालेजमे पढ़ैत छलाह । हुनकर आगूक पढ़ाइक खर्चा ओ गछि लेलखिन । ओही सर्तपर बिआह भेल । से ओ पालनो केलथि । शशांक डाक्टर भए गेलाह । मुंबइमे नौकरी लागि गेलनि । मुदा एही बीच हुनकर आपसी संबंध गड़बड़ा गेलनि । बात हदसँ बाहर होइत गेल । आखिर,शशांक न्यायालयमे तलाक हेतु केस कए देलनि। ओ केस अखन धरि चलिए रहल अछि। ओ बेटी नागेन्द्र बाबूक संगे रहैत अछि । हुनका बेटीसँ बहुत लगाव रहनि । तेँ ओकर एहि हालतसँ नागेन्द्र बाबू बहुत दुखी रहथि। मुदा कइए की सकैत छलाह? जकरा भाग्यमे जे लिखल रहैत अछि सएह होएत अछि । हुनकर ई बेटीक जहिना नाम सरला छल तहिना सरल ओ छथिहो। मुदा ओकर जीवन एतेक क्लिष्ट किएक भेलैक से भगवाने जानथि। जे भेल से भेल मुदा नागेन्द्र बाबू एहि घटनासँ बहुत आहत भेलाह,सभदिनक हेतु टुटि गेलाह ।

एक युगक बाद नागेन्द्र बाबूक भेंट रागिनीसँ भेल रहनि । ओ बहुत काल धरि हुनकासँ गप्प करैत रहि गेलाह । ताबे साँझ पड़ि गेल छल । नागेन्द्र बाबूकेँ फोनपर-फोन आबि रहल छलनि। असलमे ओ विद्यार्थीक एकटा समूहक संगे घुमबाक हेतु आएल रहथि । आइ अंतिम दिन छलनि । काल्हि भोरे ओ सभ लौटि

जेताह। जेबाक टिकटक ओरिआन हेतु विद्यार्थीसभ टीसन गेल रहए । ताही संबंधमे ओ सभ फोन कए रहल छलनि।

विद्यार्थीसभक आतुरता जानि नागेन्द्र बाबू शीघ्रे अतिथिगृह वापस आबि गेलाह । विद्यार्थीसभ हुनकर कतेक कालसँ प्रतीक्षा कए रहल छलाह । काल्हि भोरे ओ सभ वापसी यात्रापर बिदा हेताह । राँचीसँ पटना आ पटनासँ दरभंगा । ओहिठामसँ सभगोटे अपन-अपन सुबिधानुसार अपन-अपन गामक रस्ता पकड़ताह । रातिएमे मोटा-चोटा बन्हबाक रहैक । अतिथिगृहक हिसाब-किताब करबाक रहैक । संगहि किछुगोटेकेँ बजारो करबाक रहनि जाहिसँ गाम वापस खाली हाथ नहि जाथि ।

दूदिनक यात्राक बाद नागेन्द्र बाबू सदल-वल गाम पहुँचि गेलाह । ओहिठाम सभसँ पहिने हमरासँ भेंट भेलनि । ओ अपन यात्राक गप्प करए लगलाह । राँचीमे रागिनी आ शशांक संगे भेल आकस्मिक भेंटक बारेमे सेहो कहलनि । हम से जानि बहुत आश्चर्यचकित भेलहुँ । काल्हिए दिवाकर मुम्बई बिदा भेल छल । मुदा ओकरा ओतए केओ नहि भेटतनि से जानि चिंतामे पड़ि गेलहुँ। हमरा चिंतित देखि नागेन्द्रबाबू कहैत छथि-

"की बात छैक? तूँ तँ बहुत चिंतित बुझा रहल छह?"

"कोनो खास बात नहि ।"

"बात नहि नुकाबह । हम देखि रहल छी जे तूँ बहुत परेसान छह ।"

"कैकदिनसँ यात्राक बाद गाम अएलहुँ अछि । पहिने अहाँ आश्वस्त भए जाउ । फेर चैनसँ गप्प करब ।"

"ठीक छैक ।"

नागेन्द्र बाबू अपन आङन चलि गेलाह । हम असगर ओसारापर पटिआपर बैसल सोचैत रहि गेलहुँ,बहुत किछु.. जे आब अपना वशमे नहि बुझाइत छल ।

24

दिवाकर मुम्बई टीसनसँ चोट्टे शशांकक डेरा पहुँचल । फटकिएसँ मुख्यद्वारिपर बड़कीटा ताला लटकल देखि ओ चिंतामे पड़ि गेल । नीचाँबला फ्लैट सेहो बंदे रहए ।

"दू दिनक यात्राक बाद हम तँ चूर-चूर भए गेल छी । जँ ई सभ एतए नहि हेताह तँ की करब? आब तँ एक्को डेग ससरब मोसकिल बुझा रहल अछि । " -ओ मोने-मोन सोचैत अछि ।

जँ जँ ओ केबारक लगीच अबैत गेल ,ओकर संका सही साबित होइत गेलैक । तथापि ,ओ कैकबेर घंटी मारैत रहल। जखन केबारपर बाहरे ताला लटकल छल तखन घंटी मारबाक कोन काज? मुदा हड़बड़ीमे किछु गड़बड़ी भए गेलैक । आब की करए? हारि कए ओतहि नीचाँमे बैसि गेल । जेबीसँ मोबाइल निकाललक। मुदा ओकर बैट्री खतम भए गेल रहैक । आब की करए? ओतहि कनी काल ओहिना बैसल रहि गेल । मुदा ओहिसँ तँ कोनो समाधान होबएबला छलैक नहि । तखन...। ओ वापस बजार गेल आ दूरभाषकेन्द्र सँ शशांकक फोन लगओलक । मुदा ओकर फोनसँ

लगातार एतबे आबाज अबैक- “ई फोन अखन व्यस्त अछि। कनीकालक बाद फेर प्रयास करू ।”

हम स्नान करए जाइत रही की दिवाकरक फोन आएल ।

“हम थोड़बे काल पहिने मुम्बई टीसनसँ शशांकक डेरापर पहुँचलहुँ। एहिठाम केओ नहि अछि । डेरामे ताला लागल अछि । शशांकसँ फोनपर गप्प करबाक प्रयास केलहुँ, मुदा हुनकर फोन नहि लागल । लगपासक लोकसभ किछु नहि कहि रहल अछि । हम दूदिनक यात्राक बाद बहुत थाकि गेल छी । सोचने रही जे आइ खूब निचेनसँ सुतब । मुदा एहिठाम तँ बैसबोक जोगार नहि भए रहल अछि । आब अहीं कहू जे हम की करू? कतए जाउ?”

“तोरा हड़बड़ा कए जेबाक काजे नहि रहह? गुरुग्राम चलि जैतह । ओहिठामक काजकेँ आगू केनाइ बेसी जरुरी अछि । आब जखन ओतए पहुँचिए गेल छह तँ धैर्यसँ काज लएह , अगुता नहि । अस्पताल चलि जाह । ओहिठामक प्रशासनसँ सभटा पता चलि जेतह । आखिर ओ नौकरी करैत छथि । भए सकैत अछि जे कोनो जरूरी काजमे लागि गेल हेताह ।”

“ठीक छैक । हम प्रयास करैत छी ।”

दिवाकर जेना-तेना अस्पताल पहुँचल । ओतए पता लगलैक जे ओ दुनूगोटे अखन राँचीमे अछि । कहिआ लौटत तकर कोनो ठेकान नहि अछि । दिवाकरकेँ एहि बातसँ बहुत निराशा भेलैक । ओ आएल छल की सोचि कए आ देखि की रहल छल। मुदा करैत की? रातिभरि कहुना अस्पतालक विश्रामालयमे समय कटलक । भोरे निन्न टुटि गेलैक । बड़ीकाल धरि सोचैत रहि गेल ।

किछु फुरेबे नहि करैक । एक मोन होइक जे गाम वापस भए जाए। फेर होइक जे किछु दिन ओतहि रहि कए प्रतीक्षा करए ।

दिवाकरकेँ बुम्बईमे रहब व्यर्थ बुझाइत छलैक । संगहि गामो वापस जेबाक मोन नहि होइक । असलमे ओ रागिनीसँ भेंट करए चाहैत छल । ओही लेल ओ गामसँ एतेक कष्ट काटि कए मुम्बई आएल छल । मुदा जखन एहिठाम केओ नहि भेटलखिन तँ अस्पताल चलि गेल । ओहिठामसँ ओ शशांकक पता उपरेलक । दोसर दिन साँझमे बिना हमरा सूचित केने ओ राँचीक रेलगाड़ी पकड़ि लेलक । ओ ओमहर रेलगाड़ीमे बैसल होएत की एमहर नागेन्द्र बाबू यात्रासँ गाम वापस भए गेलाह । हम महादेव मंदिरसँ अपन घर दिस जाइत रही की ओ हमरा भेटलथि । हमरा देखिते कह लगलाह-

“हम विद्यार्थीसभक संगे राँची गेल रही । ओतए संयोगसँ एकयुगक बाद रागिनी आ शशांक भेंटि गेल । ओ सभ अखन ओतहि अछि। कहलक जे किछु दिनक बाद मुम्बई वापस चलि जाएब ।”

हम ई समाचार दिवाकरकेँ देबाक प्रयास केलहुँ । मुदा ओकर फोन लगबे नहि कएल । फोनसँ किछु-ने-किछु उल्टा-पुल्टा बातसभ अबैत रहल । कखनहु सुनाइत- “नेटवर्क व्यस्त अछि ।” कखनो सुनाइत-“फोन बंद अछि । कखनो फोन खराब अछि ।” थोड़े कालक बाद तँ ओकर फोन साफे बंद भए गेल। हमहु की करितहुँ? हारि कए नागेन्द्र बाबूक संगे हुनके ओहिठाम चलि गेलहुँ। भेल जे नव-नव समाचार देताह,यात्राक अनुभव कहताह । से सभ सुनि मोन बदलि जाएत ।

दिवाकर कैकदिन-रातिक निरंतर रेलगाड़ी यात्राक बाद राँची रेलवे टीसनपर पहुँचल । ओतए प्लेटफार्मपर उतरितहि एकटा अखबारपर नजरि पड़लैक । अखबारक मुख्यपृष्ठेपर छपल छल-

“मुम्बईक प्रसिद्ध कैंसर डाक्टर शशांक राँची झीलमे डुबि गेलाह । हुनकर इलाज सीटी अस्पतालमे चलि रहल अछि । डाक्टरक अनुसार हुनकर हालत चिंताजनक किंतु स्थिर छनि । ।” दिवाकरकेँ तँ जेना वज्र खसि पड़लैक । आब की करत? जतहि पैर दैत अछि ओतहि धसना धसि जाइत छैक । ओकरा अफसोच होइक जे ओ राँची किएक आएल? मुम्बईएमे रहि जाइत किंवा ओतएसँ गुरुग्राम चलि जाइत वा गामे वापस भए जाइत । ई तँ कतहुकेँ नहि रहल ।

शशांकक दुखद समाचार सुनि दिवाकरकेँ जेना लकबा मारि देलकैक । बड़ीकाल धरि अखबार हाथमे लेने जस के तस ठाढ़ रहि गेल । एही बीचमे केओ ओकर झोरा लेने चलि गेलैक । जखन ओ कनी सम्हरल आ प्लेटफार्मसँ निकलि मुख्य द्वारिपर गेल तँ टिकट परीक्षक टिकट मंगलकैक । टिकट ओही झोरामे रहैक । ओ झोरा ताकए लागल। मुदा झोरा तँ बिला गेल रहैक। आब की करैत? टिकट,टाका आ जरूरी कागजातसभटा ओहीमे रहैक । मोबाइल फोन सेहो ओहीमे राखि देने छल जाहिसँ सुरक्षित रहितैक। मुदा ई तँ तेसरे झंझटि भए गेलैक । ठीके कहल जाइत अछि जे विपत्ति कखनहु असगरे नहि अबैत अछि । आब ओकरा बुझेबे नहि करैक जे ओ टिकट परीक्षककेँ की जबाब दौक? बड़ीकाल धरि ओहिना चुपचाप ठाढ़ रहि गेल । जँ जँ टिकट परीक्षक टिकट मंगैक तँ तँ ओ गुमकी लदने जाए। भाषाक समस्या तँ रहबे करैक। टिकट परीक्षक पता नहि की- की गिलबिट-

गिलबिट बाजि जाइक । करवनो काल हिन्दीओ बजैक मुदा सेहो टेढ़-मेढ़ । कुलमिला कए दिवाकर महासंकटमे पड़ि गेल छल । आखिर सभटा बात ओकरा कहलकैक । तखने ओकर जान बाँचि सकल ।

25

बहुत खोज पुछारी केलाक बाद दिवाकर अस्पताल पहुँचल । अस्पतालक स्वागतीसँ सभटा जानकारी भेटलैक । तकर बाद ओ सोझे वार्ड संख्या दस शायिकासंख्या तैइसपर इलाज करबैत शशांक लग पहुँचि गेल । ओतहि रागिनी सेहो छलि । दिवाकरकेँ ओतए देखि रागिनी बहुत प्रसन्न भेलि । लगलैक जेना अमावास्याक अन्हरिआमे कतहु डिबिआक इजोत देखा गेलैक । दिवाकर सेहो आश्वस्त भेल । थोड़े काल तँ ओ सभ एक-दोसरकेँ देखैत रहि गेल। ककरो किछु बजले नहि होइक । आखिर दिवाकर चुप्पीकेँ तोड़ैत पुछलकैक-

“ई सभ कोना भेलैक?”

“की कहू केना भेलैक? हम तँ ठीक भए गेलहुँ मुदा हमरा स्वस्थ करबाक चक्करमे ओ स्वयं बरबाद भए गेलाह ,अपन जानसँ खेलि गेलाह।”

“से की?”

“बात ओएह भेलैक ने? ने ओ एहिठाम अबितथि ने ई हाल होइतनि।”

“एतेक केओ सोचए । जीवनमे बहुत किछु घटित होइत रहैत छैक जकर केओ अनुमान नहि लगा सकैत अछि । आब जे परिस्थिति आबि गेल छैक तकर सामना करबे बुधिआरी कहल जा सकैत अछि ।”

“शशांककेँ अस्पतालक काजसँ एतए अएबाक रहनि । हमरो संगे चलबाक आग्रह केलथि । राँचीक प्राकृतिक चिकित्सालय बहुत नामी अछि । भेलनि जे जगह बदलि गेलासँ, घुमला-फिरलासँ हमर मोन बदलि जाएत, स्वास्थ्यमे तेजीसँ सुधार होएत। फेर हम असगर मुंबई कोना रहितहुँ? तेँ हमहु हुनकर बात मानि संगे बिदा भए गेलहुँ। एहिठाम अएलाक बाद हमसभ किछुदिन बहुत खुस रही । हमर बिमारी तँ ठीक भइए गेल छल । स्थान परिवर्तन संगे सुखद आ रम्य प्राकृतिक वातावरणमे हम बहुत प्रसन्न रहए लगलहुँ ।

एकदिन हुनका संगे राँची झील लग घुमए निकलि गेलहुँ। ओ झीलक सौंदर्य देखितहि ओहिमे स्नान करबाक हेतु ब्यग्र भए गेलथि । हम बाहरे रही । तकर बाद की भेलनि की नहि ओ बाहरे नहि होथि । संयोगसँ लगीचेमे एकटा गोताखोर रहए । ओ हुनका उबडुब करैत देखलकनि । जेना-तेना हुनका पानिसँ बाहर केलकनि। तकरबादसँ ओ बेहोस छथि । अस्पतालमे ओही हालतमे आनल गेलथि । हमरा बहुत अफसोच होइत रहैत अछि जे संगे रहितहुँ हम हुनकर किछु मदति नहि कए सकलहुँ । जखन की हमर जान बँचेबाक हेतु ओ की नहि केलाह?”

“आब ई सभ सोचलासँ की फएदा होएत? जे हेबाक छल से भए गेल । आगू हुनकर जान बाँचनि,ओ स्वस्थ होथि से प्रयास भइए रहल अछि । तखन तँ भगवानपर विश्वास राखि शांत रहू । ओएह

छथि खेबनिहार । सभक रस्ता ओएह पार लगबैत छथि आ लगओताह ।”

हमर बात सुनि रागिनी चुप्प भए गेलीह । की कहितथि? जखन मनुक्खकेँ भीतरी चोट पड़ैत छैक तखन कोनो सुझाओ नहि सोहाइत छैक । होइत रहैत छैक जे अनेरे बड़बड़ा रहल अछि । भए सकैत अछि हुनको तेहने लागल होनि । जे -से । हमहु चुप्प भए गेलहुँ । थोड़े कालक बाद डाक्टरक हुजुम आएल । ओ सभ शशांक स्वास्थ्य परीक्षण केलकनि । तकरबाद हमरा इसारासँ अपना संगे आबए कहलक । हम हुनकासभक संगे-संगे डाक्टरक चैम्बर पहुँचि गेलहुँ । हमरा देखि डाक्टर कहैत छथि -

“शशांकक जान तँ बाँचि गेलनि । मुदा हिनका दिमागी समस्या भए गेल छनि । होस नहि आबि रहल छनि । भए सकैत अछि जे कालक्रमे आबि जानि वा नहिओ आबनि । हमसभ ओना अपना भरि पूरा प्रयासमे छी जे हिनकर हालत सामान्य भए जानि । मुदा से बहुत मोसकिल काज बुझा रहल अछि ।”

दिवाकर किछु नहि बाजल । डाक्टर दबाइक पुरजा देलकैक । ओ चोट्टे दबाइक दोकानसँ दबाइ आनए चलि गेल। थोड़ेकालक बाद दिवाकर दबाइसभ लए कए घुरल । दिवाकर आ रागिनी दिन-राति एक कए शशांकक सेवा केलनि । डाक्टरोसभ जान लगा देलक । एहि प्रकारें एक सप्ताह ओ आ रागिनी अस्पतालेमे रहि गेलाह । आखिर, शशांककेँ अस्पतालसँ छुट्टी भेटि गेलनि । मुदा जाइत-जाइत डाक्टर कहलकनि-

“हिनका मनोचिकित्सकसँ इलाज करेबाक होएत । हिनकर स्मृति वापस नहि आबि रहल छनि । ताहि हेतु सघन प्रयासक जरूरी अछि ।”

“मुदा एना भेलनि किएक?”

“से की कहि सकैत छी? मनुक्खक देह आ मोन बहुत जटिल होइत अछि । जाबे चलैत अछि तँ ठीक । नहि तँ एकरा सम्हारब ककरो वशक बात नहि अछि । डाक्टरसभ तँ निमित्तमात्र होइत छथि ।”

हमसभ शशांकक संगे हुनकर डेरापर वापस अएलहुँ । मुदा डेरा पहुँचलाक बादो हुनकामे कोनो क्रिया-प्रतिक्रिया नहि होइत छल । मथसुन्न जकाँ ओछाओन धेने रहैत छलाह । एहन हालतमे की कएल जाए? हम आ रागिनी बहुत चिंतामे रही । किछु फुरेबे नहि करए । आखिर डाक्टरेसभ कहलक-

“हिनका मुंबईए लेने जाउ । ओहिठाम नीक सँ नीक डाक्टर छथि। ओतहि आगूक इलाज हेतनि सएह अहूँसभ लेल ठीक रहत ।”

ओ सभ सएह केलक। रागिनी दिवाकर आ शशांक दोसर दिन भोरे रेलगाड़ीसँ मुंई बिदा भए गेल । रस्ता भरि शशांक सुतले रहलाह । रेलगाड़ी चलैत रहल । भोरसँ साँझ भए गेल । यात्रीसभ रात्रिक भोजन कए सुतबाक ओरिआनमे लागि गेलाह । दिवाकर आ रागिनी सुति नहि सकलथि । राति भरि जगले रहलासँ बहुत थाकि गेलथि । दिवाकर आ रागिनी आपसमे गप्प-सप्प करैत जेना-तेना समय कटलक। दोसर दिन साँझमे मुम्बई पहुँचलापर ओकरासभक जान मे जान आएल ।

26

शशांकक दुर्दशाक समाचार हमरा गाममे नागेन्द्र बाबूसँ भेटल । हुनका राँचीसँ केओ जानकार सभटा समाचार देलकनि । ओ चोट्टे हमरा घर दिस बिदा भेलाह । हम पोखरि दिससँ आबि रहल छलहुँ । दरबाजापर पैर धेने छलहुँ की ओ भेंट भेलाह ।

"किछु पता लगलह?"

"की?"

"सुनलिऐक अछि जे शशांकक हालत ठीक नहि छनि । केना-ने-केना ओ राँची झील लग टहलैत काल डुबि गेलाह । बहुत मोसकिलसँ हुनका जीबित बाहर निकालल गेल। तकर बादेसँ मथसुन्न जकाँ रहैत छथि । दिवाकर सेहो ओहिठाम गेल रहए । अखन ओ सभ वापस मुंबई आबि गेल अछि। डाक्टरक अनुसार हुनका ठीक हेबामे बहुत समय लागि सकैत छनि।"

"मुदा एना भेलैक कोना? ओ तँ बहुत योग्य आ बुझनुक लोक छथि।"

"समय-समयक बात होइत छैक । कखन के केहन रूप धरत, ककरा की हेतैक से के जनैत अछि?"

"ठीके कहलहुँ। आश्चर्यक बात अछि जे केओ हमरा एहि विषयमे फोनो नहि केलक । दिवाकर गेल से गेले अछि । हम सोचने रही जे ओ रागिनी संगे वापस गुरुग्राम आबि जाएत जाहिसँ कारखानाक विषयमे किछु अंतिम निर्णय होएत । मुदा ई तँ नवे बातसभ सुनि रहल छी ।"

“हमरो तँ संयोगेसँ पता लागल । से सुनितहि तोरा लग आएल छी। भेल जे तोरा जानकारीमे बात देब जरूरी अछि।”

“तखन की कएल जाए?”

“देखहक, इलाज तँ भइए रहल छैक । सुधार होएब. नहि होएब ई तँ भविष्येमे बुझाएत । मूल समस्या तँ अछि रागिनी आ दिवाकरकेँ ओहिठामसँ वापस आएब । आखिर,ओसभ कतेक दिन मुम्बईमे रहि सकत । ओ सभ तँ गेल रहए इलाजक चक्करमे । मुदा दोसरे चक्करमे फँसि गेल ।”

“शशांकक परिवारमे के छथि, के नहि छथि से तँ हमरा कोनो जानकारी नहि अछि । नहि तँ हमही हुनका सभकेँ सूचना दितिअनि । ओ सभ ओकर देखभालक जिम्मा लितथि । रागिनीक भविष्य तँ आओर चिंताजनक बुझाइत अछि । ओ नितांत एसगरि अछि । पढ़ि लीखि लेने अछि । सोचने रहिऐक जे बिआह भए जेतैक तँ ओकर जीवन पटरीपर आबि जाएत । मुदा सोचलाहा थोड़े होइत छैक? ”

“आइ-काल्हि बिआहक कोन ठेकान छैक? देखिते छह जे हमर एकमात्र संतान बिआहक बादो ओहिना ओझराएल जिनगी बिता रहल अछि । घरबलासँ पटिते नहि छनि । केसा-केसी भेल अछि। आब तँ शशांक अपनो बिमारे पड़ि गेल छथि ।”

“बात तँ ठीके कहैत छी । मुदा कएल की जाए? हम तँ अपने पत्नीकेँ खा कए बैसल छी ।”

“एना नहि बाजह । तोरा सन लोक होएब तँ मोसकिल अछि । जे भेलैक से ओकर अपन दुर्भाग्यसँ भेलैक।”

"अखन फिलहाल की करी?"

"हमरा हिसाबे मुम्बईए चलि जाह । सामनेमे सभकेँ देखबहक तँ संतोखो हेतह आ सही समाधानो होएत ।

"बात तँ ठीक कहि रहल छी । मुदा रत्नेशकेँ की करिऔक ।"

"ओ भरिदिन तँ हमरे ओहिठाम रहैत अछि । ओकरा हमरासभक संगे मोनो लगैत छैक । तेँ ओकर चिंता छोड़ि दएह। हमसभ ओकरा सम्हारि लेब । तूँ निश्चिन्त भए ओतए जाह । ओतए पहुँचि कए हमरो कहिअह जे की-कोना भेल । चिंता तँ लागले रहत ।"

27

हम अपन मुंबई अएबाक कार्यक्रमक बारेमे दिवाकरकेँ फोन कए देने रहिऐक। हमर आगमन सुनि रागिनीक ध्यान शशांकक घरपर गेलैक । कैकदिनसँ घरक समानसभ यत्र-कुत्र पसरल छल । हालते तेहने छल जे एहिसभ बातपर ध्यान देबाक उसास ककरो नहि रहैक । रागिनी बहुत प्रयाससँ स्वस्थ भेल छल। मुदा ओकर इलाज केनिहार डाक्टर स्वयं गड़बड़ा गेलाह । ओ ने ककरो चिन्हैत छथि ने किछु बजैत छथि । रागिनी घरक समानसभकेँ सुव्यवस्थित करए लागलि । ओहीक्रममे आलमीराक समानसभकेँ चौपेति रहल छलि कि पहिल खानामे शशांकक लिखल लिफाफामे एकटा चिठ्ठी भेटलैक । ओ तुरंत लिफाफा खोलैत अछि । चिट्ठीक शुरुएमे अपन नाम देखि ओ सहमि जाइत अछि,सोचमे पड़ि जाइत अछि । पता नहि शशांक की लिखलनि

अछि? किएक लिखलनि अछि? कहीं किछु अनट बात ने होइक? रागिनी एहि दुविधासभमे पड़ि जाइत अछि । मुदा मोन नहि मानैत छैक , अपनाकेँ बेसी काल रोकल नहि होइत छैक । । चिट्ठी पढ़ए लगैत अछि ।

"प्रिय रागिनी,

बहुत दिनसँ सोचैत रही जे अहाँसँ गप्प करी । अपन असली हालातसँ अवगत कराबी । मुदा से कोनो-ने-कोनो कारणसँ संभव नहि भेल । अहाँकेँ लगैत होएत जे हम लगातार अहाँक उपेक्षा करैत रहलहुँ ,किंवा जे अहाँ चाहैत रही से हम नहि बूझि सकलहुँ । मुदा असलियत से नहि छल । हम बूझिओ कए की करितिऐक? हम तँ पहिनेसँ विवाहित छी । कोनो-ने-कोनो कारणसँ हमरा हुनकामे मतभेद होइत रहल । के सही छल,के गलती छल आब तकर चर्चामे किछु नहि राखल अछि । मुदा हमरासभक आपसी संबंध ततेक गड़बड़ा गेल जे ओ अपन पिता नागेन्द्र बाबू लग चलि गेलि आ आब ओतहि रहि रहल छथि । हमर ससुर ,नागेन्द्र बाबू ,बहुत नीक लोक छथि । हम अखनो नहि चाहैत छी जे हमरा कारण हुनका कोनो तरहक परेसानी होनि? मुदा हमरा चाहलेसँ की होएत? हालात हमर काबूमे नहि रहि गेल अछि । दू आदमी आपसमे मिलि कए रहए ताहि लेल दुनूक सहयोग जरुरी छैक,आपसी समझ जरूरी छैक । हमर मोनमे निरंतर इएह समस्या घुमैत रहैत छल आ अखनहुँ सएह हाल अछि। आब अहीं कहू जे एहनमे हम अहाँकेँ की कहितहुँ? की जबाब दितहुँ?

समय बदलैत रहैत छैक । हमरो समय जरुर बदलतैक,एही उमीदसँ हम जीबैत जा रहल छी । आगा भगवानक इच्छा।

अहाँ एहिसभ बातक बेसी चिंता नहि करब । हम अहाँपर कनीको भार नहि देबए चाहैत छी । तैं अखन धरि किछु नहि कहलहुँ। मुदा भेल जे आब अहाँकेँ सही कहनाइ जरूरी अछि तैं कहि देलहुँ । अहाँ अपन स्वास्थ्यक ध्यान राखू। अहाँक सामने तँ सौंसे भविष्य पड़ल अछि । जेहन चाही ,जेना चाही अपन स्वप्नकेँ साकार कए सकैत छी ।

शुभकामना सहित,

शशांक

चिठ्ठी पढ़ि-पढ़ि रागिनीक आँखिसँ नोर अविरल झहरि रहल छल। कनैत-कनैत ओ सुति गेलि । ओ सुतले छलि की हम मुंबई शशांकक डेरापर पहुँचलहुँ । दिवाकर झोरामे दूध लेने दोकानपरसँ आबि रहल छलाह । घरक द्वारिएपर भेटि गेलाह । हमरा देखि ओ बहुत आश्वस्त भेलाह ।

“अहाँ आबि गेलहुँ । आब हमरा जान मे जान आबि गेल । जहिआसँ मुंबई अएलहुँ परेसानीमे पड़ल छी । एना कतेक दिन चलत? शशांकक ओरिआन कए हमसभ वापस चली ।”

“तैं तँ हम अएलहुँ । भेल जे देखिऐक आखिर बात की छैक? शशांककेँ एना किएक भेलनि? ”

“डाक्टरोसभ किछु निजगुत नहि कहि पाबि रहल अछि । ओकरा सभक मोताबिक हिनका कोनो बातक भितरिआ कष्ट छनि। डुबनाइ तँ एकटा संयोग छल । हुनकर मानसिक समस्या पहिनेसँ छलनि जे ओहि घटनाक बाद बढ़ि गेलनि ।”

“मुदा आब कए की रहल छह?”

“किछु नहि । बस लागल छी । सएह बुझू ।”

शशांक डेरापर हम आ दिवाकर गप्प करैत रहैत छलहुँ आ रागिनी सुनैत रहैत छलि । समाधान किछु नहि निकलैत छल । असलमे कोनो एहन समाधान भइओ नहि सकैत छल जाहिसँ सभ एकहि संगे संतुष्ट भए जाइत , सभक दुख हरा जइतैक । ककरो ने ककरो तँ पाछू हेबेक रहैक । ककरो-ने-ककरो दुखकेँ अनठाबहि पड़ितैक। एहि प्रकारे एक सप्ताह समय बीति गेल । शशांक कखनहु काल किछु-किछु बजितथि मुदा तकर माने लगाएब मोसकिल छल। एहिना एकदिन गुनधुनमे ओसारापर बैसल चाह पीबि रहल छलहुँ की नागेन्द्र बाबूक फोन आएल । ओ कहैत छथि-

“की समाचार?”

“समाचार कोनो उत्साहवर्धक नहि कहल जा सकैत अछि।”

“से की?”

“ओएह शशांके हेतु सभगोटे चिंतामे पड़ल छी । गुरुग्राम गेनाइ जरूरी अछि । कारखानाक हिसाब-किताब करब जरूरी अछि । मुदा हुनका कोना छोड़ि दिअनु?”

“एकटा समाधान बुझाइत अछि।”

“की?”

“हम अपन बेटीकेँ संगे अबैत छी । हमसभ ओतए किछु दिन रहि कए देखब । की पता किछु सुधार भए जानि ।

ठीक छैक ,आउ । किछु-ने-किछु तँ करैक हेतैक ।”

28

जखनसँ सरलाकेँ शशांकक दुखित हेबाक समाचार पता लगलनि ओ बहुत परेसान भए गेलथि । कतहु-ने -कतहु हुनकर मोन अपराधवोधसँ भरि गेलनि ।

“यदि हम हुनकर संगे रहितिअनि, तँ साइत ओ एहि हालमे नहि पहुँचतथि । हम जखन हुनका छोड़ि बाबूजी संगे बिदा भेल रही तँ ओ बहुत आग्रह केने रहथि, घटी मानने रहथि मुदा हमही अड़ि गेल रही। मानलहुँ जे हुनकर गलती छलनि । मुदा तकर समाधान परिवारकेँ विखंडित कए नहि भए सकैत अछि । आइ ने हम सुखी छी ने ओ । हमर माए तँ मृतमान भेल छथि । बाबूजीकेँ तँ ओहि दिनक बाद कहिओ भरि मुँह हँसैत नहि देखलिअनि । आखिर, एहि प्रसंगमे जीतल के? केओ नहि । सभ हारि गेल? परिवारमे समन्वय बहुत जरूरी अछि । जँ हम एक डेग पाछू कए लेने रहितहुँ,कनी सहिए गेल रहितहुँ तँ बाते आओर रहैत ।” सरला इएह सभ सोचैत रहैत छलि । शशांकक समाचार हुनका भीतरसँ हिला कए राखि देने छलनि । अस्तु,ओ सभ किछु बिसरि,संकोचक त्याग कए नागेन्द्र बाबूक संगे मुम्बई जेबाक निर्णय केलथि । सरलाक माए सेहो हुनकर समर्थन केलनि । आखिर,नागेन्द्र बाबू सरला संगे मुम्बई बिदा भेलाह । गामपर हुनकर पत्नी रहि गेलि । रत्नेश हुनके जिम्मा रहि गेल । ओ सभ दोसर दिन भोरे मुम्बई टीसनसँ सोझे शशांकक डेरापर पहुँचलाह ।

हम आ दिवाकर ओसारेपर बैसल चाह-पान करैत रही । रागिनी जलखै बना रहल छलि । शशांक अखन सुतले छलाह । हमरा देखितहि दिवाकर चिचिआ उठलाह-

“काका आबि गेलाह । काका आबि गेलाह ।”

हमहु हुनका देखैत छी । संगे सरलाकेँ देखि आओर प्रसन्नता भेल। मोनमे भेल जे भए सकैत अछि समस्यासभक समाधान एतहि भए जाए । हम आ दिवाकर आगू बढ़ि कए नागेन्द्र बाबूकेँ प्रणाम करैत छी । सरला हमरासभकेँ देखि आश्वस्त लागि रहल छलि । हमसभ गोटे घरक ओसारापर अबैत छी । हल्ला सुनि कए रागिनी सेहो बाहर अबैत छथि । थोड़े काल लागल जेना ओतए आनंदक वर्षा भए रहल छल । मुदा शशांककेँ ओतए नहि देखि नागेन्द्र बाबू चिंतित भए गेलाह । ओ पुछिए देलनि- “की बात छैक शशांक नहि देखा रहल छथि?”

“ओ अखन सुतले छथि । रातिमे बहुत देरीसँ सुतलाह । तेँ हमहुसभ नहि उठओलिअनि जे भने कनी आराम हेतनि ।”

“मुदा हुनका भए की रहल छनि? डाक्टर की कहि रहल अछि?”

“की कहू? सएह तँ नहि बूझा रहल अछि। डाक्टर कोनो स्पष्ट विचार नहि दए पबैत अछि । पुछैत छिऐक तँ बस कहए लागत – “धैर्य राखू,सभ ठीक भए जेतैक । हुनका कोनो बिमारी नहि छनि। समयक प्रतीक्षा करू । सभ ठीक भए जेतैक ।” ओतबे रटैत-रटैत ओ सभ घसकि जाइत अछि।

हमसभ गप्पे कए रहल छलहुँ की सरला आगू बढ़ि शशांकक कोठरीमे चलि जाइत छथि । ओसरापर हल्ला सुनि कए हुनकर निन्न टुटि गेल रहनि । ओ करोट बदलैत छथि । सामनेमे

सरलाकेँ ठाढ़ि देखि ओ धराक दए उठि बैसैत छथि ,हुनकर प्रसन्नताक अंते नहि छल । लगबे नहि करैक जे ओएह शशांक छथि जे कतेको दिनसँ खाट धेने छथि । जिनका पाछा सभ अपसिआँत अछि । डाक्टरो नहि बूझि सकल जे आखिर हुनका कोन बिमारी छनि । सरला सेहो बहुत आनंदमे रहथि । ओ शशांककेँ प्रणाम करैत छथि आ हुनका लेने बाहर ओसारापर आबि जाइत छथि । शशांक नागेन्द्र बाबूकेँ प्रणाम करैत छथि । हमरा आ दिवाकरसँ आग्रह करैत छथि जे सभगोटे भीतरे आबि जाइ । हुनकर व्यवहारसँ हम आश्चर्यचकित रही । सोचिओ नहि सकल रही जे एहनो हेतैक ।

लगभग साल भरिसँ शशांक आ सरलाक भेंट नहि भेल छल । ओहि बीचमे बहुत किछु भेल । सरला अपन माता-पिता लग रहैत-रहैत दुखी भए गेल छलीह । हुनकर वयोवृद्ध माता-पिता दिन-राति हुनकर चिंतामे परेसान रहैत छलखिन । तेँ रहि-रहि कए सरलाकेँ होइक जे ओ अनेरे शशांक संगे झंझटमे पड़ल अछि । एहिमे ककरो कोनो फएदा नहि छलैक । के गलतीपर अछि,के सही अछि ताहिपर सोचैत रहलासँ कोनो समाधान तँ होएत नहि । ककरो-ने-ककरो पाछा आबहि हेतैक । तेँ जखन नागेन्द्र बाबू शशांकसँ भेंट करए मुंबई बिदा होइत रहथि तँ ओहो संग लागि गेलि। ओ पहिनेसँ सोचि लेने रहए जे जेना होएत ओ शशांककेँ मना लेति । भेवो सएह कएल । ककरो मनेबाक काजे नहि भेलैक। एक-दोसरसँ भेंट होइतहि लगलैक जेना सभ कष्ट हरा गेलैक । दुनूगोटे एक-दोसरकेँ स्वभाविक रूपसँ स्वीकार कए लेलक । लगलैक जेना आब कोनो समस्ये नहि अछि । शशांकपर तँ जेना जादू भए गेलैक । कतए गेलैक ओकर बिमारी आ कतए गेलैक

ओकर बेहोसी? सभटा मोनेमे रहैक आ मोने तकर इलाजो कए देलक ।

सरलाक संग नागेन्द्र बाबूक अएलासँ ओहिठामक माहौलमे चमत्कारिक परिवर्तन भेल । हम आ दिवाकर सेहो दंग रही । नागेन्द्र बाबूकेँ तँ विश्वासे नहि होनि जे ओ सही देखि रहल छथि । बेर-बेर हमरा दिस तकैत रहलाह ।

“ई सभ ईश्वरक आशीर्वाद बुझबाक चाही । आखिर अहाँ सन नीक लोकपर भगवानोकेँ दया आबि गेल हेतनि ।”

“आब की कएल जाए?”

“पहिने सुस्ता लिअ । स्नान करू । भोजन करू । फेर आरामसँ कार्यक्रम बनाओल जेतैक । ताबे शशांको आश्वस्त भए जेताह ।”

“ठीक कहैत छह ।”

नागेन्द्र बाबू स्नानगृह जाइत छथि । हम आ दिवाकर लगीचेक हाटसँ टटका तरकारीसभ अनैत छी । आई कतेक दिनक बाद रागिनी सेहो बहुत प्रसन्न छथि । ओ आ सरला मिलि कए भात,दालि ,पाँचटा तरकारी,तरुआ बनबैत छथि । सभगोटे एकहि संगे टेबुलपर बैसि भोजन करैत छथि । भोजनक बाद शशांक डाक्टरी परिधानमे तैयार होइत छथि । ओ हाथमे झोरा लटकओने प्रसन्नतापूर्वक अस्पताल बिदा भए जाइत छथि ।

29

हम आ दिवाकर मुम्बईसँ गुरुग्राम जेबाक हेतु तैयार होइत छी । हमरासभकेँ एना तैयार होइत देखि रागिनी अपसियाँत भए गेलि ।

"हम एहिठाम बैसल की करब? हमहु अहींसभक संगे चलब।"

"एक बेर शशांककेँ पुछि लितिअनि ।"

"पुछि लेलिअनि । ओ आब ठीक छथि । हमहु ठीक छी । एहि ठामसँ हम चलिए जाएब सएह हुनका लेल नीक हेतनि । हमरो लेल से जरूरी अछि । कारण एहिठाम जाधरि रहब ताधरि लगैत रहत जे इलाजे करबा रहल छी । शशांक अपने कहैत रहथि जे स्थान परिवर्तनसँ हमर स्वास्थ्यमे आओर तेजीसँ सुधार होएत । जखन हम आब ठीक छी तँ किछु सार्थक काजमे लागी । जीवन हमरा लेल ठहरि तँ जाएत नहि । जे समय भगवान देने छथि तकर किछु सदुपयोग करबाक चाही ।"

हमरा रागिनीक बात पसिंद पड़ैत अछि । हम दिवाकर दिस तकैत छी । दिवाकर बजैत छथि-

"अहाँकेँ हमसभ अवश्य लेने चलब । अहाँकेँ ई सोचबाक काजे नहि अछि । हम तँ पहिनेसँ अहूँक टिकट लेने छी।"

"ठीक छैक । हम तैयार होइत छी । ताबे अहाँसभ चाह पीबू ।"

रागिनी दुनूगोटेकेँ चाह आनि कए दैत छथि । अपन सामानसभ सरिअबैत छथि । रागिनी नागेन्द्र बाबूकेँ प्रणाम करैत छथि आ बेग लेने हमरासभक संगे बिदा भए जाइत छथि ।

हम तीनूगोटे बिदा होइत छी । हमरासभकेँ जाइत देखि नागेन्द्र बाबूक आँखिसँ नोर खसि पड़ैत छनि । ओ भाव विह्वल भए जाइत छथि । एतेक जल्दी आ एतेक सही समाधान होएत से के सोचने छल? कम सँ कम सरलाक उजरल घर फेरसँ बसि रहल छलनि । एकटा पिताक लेल एहिसँ बेसी प्रसन्नताक बात आओर की भए सकैत छल? हुनकर एकमात्र संतान साल भरिसँ हुनका लग दुखी रहि रहल छलि आ ओ सभकिछु बुझितो किछु नहि कए पाबि रहल छलाह ।

हमसभ टीसन जेबाक हेतु कारमे बैसि गेल रही । कार खुजि रहल छल । ओसारापरसँ नागेन्द्र बाबू आ सरला हमरा लोकनिकेँ बिदा कए रहल छलि । ताबतेमे शशांक अस्पतालसँ वापस आबि गेलाह । हमरा लोकनिक जेबाक कार्यक्रमक हुनका सही जानकारी नहि रहनि । ओना हमसभ आब चलि जाएब से चर्च तँ होइते रहैत छल । हमरासभक संगे रागिनी सेहो जा रहल छलि से एकटा नव समाचार छल। हमसभ सेहो एहि विषयमे हुनकासँ चर्च नहि केने रही । हम वाहन चालककेँ कार रोकबाक संकेत दैत छी । ओ कारकेँ रोकि दैत अछि। शशांक हमरासभसँ दुटप्पी करैत छथि । फेर रागिनी दिस देखि कहैत छथि-

“खुसीक बात जे अहाँ स्वस्थ भए जा रहल छी । आब दोबारा परेसानी नहि होअए ताहि हेतु जरुरी अछि जे किछु दिन धरि नीक डाक्टरसँ जाँच करबैत रही ।”

रागिनी किछु नहि बजैत छथि, सहमतिमे मुड़ी हिला दैत छथि । कार खुजि जाइत अछि । शशांक थोड़े काल ओहिना ठाढ़े रहि रहैत छथि ।

हमसभ टीसनपर पहुँचि रहल छी । हमरसभक रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर लागि गेल अछि । रेलगाड़ी सीटीपर सीटी मारि रहल अछि। संयोगसँ हमर डिब्बा सामने छल । कूलीसभ हमरासभकेँ अपन-अपन शायिका धरि पहुँचा दैत अछि । हमसभ जल्दीसँ जेना-तेना रेलगाड़ीमे बैसि जाइत छी । अपन-अपन स्थानपर बैसि हमसभ बहुत आश्वस्त छी । ई रेलगाड़ी दिल्ली धरि जाएत । ओहिठामसँ कारसँ हमसभ गुरुग्राम जाएब । थोड़बे कालमे रेलगाड़ी सीटी मारलक आ अपन गंतव्य दिस बिदा भेल ।

30

हमसभ रेलगाड़ीमे चाह-पान करैत छी । आपसमे तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत छी । रागिनी अपन कालेज दिनक स्मरणसभ सुनबैत रहैत छथि । शुरुमे दिवाकर सेहो बतिआइत रहलाह । फेर की भेलनि की नहि ओ अपन ऊपरका शायिकापर चलि गेलाह । हम आ रागिनी सेहो अपन-अपन शायिकापर ओछाओन केलहुँ । रातिक दस बाजि रहल छल । हमहुसभ जल्दीए सुति गेलहुँ ।

रेलगाड़ी सरपट भागि रहल छल । राजधानी एक्सप्रेसक ठहराव बहुत कम होइत छैक । तेँ रातुक समयमे जकरा उतरबाक रहैक से पहिनेसँ सतर्क रहैत छल । शेष यात्रीसभ फोंफ काटि रहल छल। हमहुसभ थोड़बे कालमे निश्चिंत भए सुति रहलहुँ । हमरासभकेँ रेलगाड़ीक अंतिम गंतव्यपर उतरबाक छल । तेँ कोनो चिंता रहबे नहि करए । भोरमे आठ बजेक आस-पास यात्रीसभक

खटपट सुनि हमर निन्न टुटि गेल । रागिनी सेहो उठि गेलि । हमर ध्यान दिवाकरक उपरका शायिकापर गेल । ओतए केओ नहि देखाएल। हमरा भेल जे ओ कात दिस चलि गेल होएत । हम उठि कए ऊपर दिस देखैत छी । ओहिठाम केओ नहि देखाइत अछि । नीचाँमे दिवाकरक सामान सेहो जस-के तस पड़ल छल । तखन ओ गेल कतए? हमरा भेल जे भए सकैत अछि जे ओ शौचालय गेल होअए।

दिवाकरकेँ नहि देखि रागिनी सेहो चिंतित भए गेलीह । हम हुनका किछु कहिअनि ताहिसँ पहिनहि ओएह पुछि बैसलीह-

“दिवाकरकेँ नहि देखि रहल छिअनि?”

“सएह तँ हमहु सोचि रहल छी । रातिमे हमरा मथुराक आसपास किछु आबाज सुनाएल रहए । भेल जे ऊपरका यात्री उतरैत हेताह। परंतु, ओ तँ ठामहि छथि।”

“ई तँ महासंकट भए गेल । आब की करब?”

ई बात नहि रहैक जे दिवाकरकेँ अचानक एना रेलगाड़ीसँ कतहु चलि गेलासँ हम कोनो कम परेसान रही मुदा रागिनीक हालत तँ बहुत खराब भए गेलनि। देखिते-देखिते हुनकापर जेना वज्रपात भए गेलनि। पता नहि मोने-मोन ओ की-की सपना देखने छलि। संभवतः ओकरा आशा रहल होएतैक जे स्वस्थ भए गेलाक बाद ओकरो गृहस्थी बसि जेतैक । ओकर दुखक दिन ओतहि समाप्त भए जाएत आ ओ एकटा संपन्न,सुखी परिवारक संग आगूक जीवन बिता सकत । मुदा दिवाकर की सोचैत छल से प्रायः केओ नहि बूझि सकलैक । हमहु नहि । रागिनी आ शशांक बहुत दिन धरि दिवाकर संगे रहथि । मुदा ओ सभ अपनेमे व्यस्त छलथि ।

दिवाकरपर उचित ध्यान नहि दए सकलथि,ने ओकर मानसिक स्थितिक किछु अंदाज लगा सकलथि ,ओकर अंतरमनकेँ नहि बूझि सकलथि । प्रायः तकर मूल कारण ओकर अंतरमुखी भए जाएब छल । रागिनीक बिमारी ओकर स्वभावमे बहुत परिवर्तन आनि देने रहैक । ओ कखनहु भरि मोन बजैत नहि छल,बेसीकाल गुम-सुम रहितए । संभवतः कखनहु अपन मोनकेँ दोसर लग हल्लुक नहि करितए । इएह कारण छल जे शशांको दिवाकरकेँ नीकसँ नहि बूझि सकलथि ।

बहुत दिनसँ रागिनीकेँ दिवाकर प्रतिए अनुराग छलनि । ई बात हमहु बूझिऐक । मुदा एहन समय नहि आबि सकल जे एहिसभ बातकेँ कोनो तार्किक परिणति होइत । तकर मूल कारण रागिनीकैँ दुखित भए जाएब कहि सकैत छी । कारखाना बंद भए जाएब ,हमर गाम चलि जाएब आ ताही बीचमे शशांकक स्वयं बिमार पड़ि जाएब,स्थितिकेँ आओर जटिल बनबैत चलि गेल । मुदा आब जे हालात सामने आएल अछि तकर की निराकरण कएल जाएत से नहि बूझा रहल अछि ।

हम अपना भरि रागिनीकेँ बुझेबाक प्रयास केलहुँ ।

“परेसान रहलासँ समस्याक समाधान तँ नहि होबएबला अछि । टीसन आबिए रहल छैक । हमसभ ओतए टीसन मास्टरसँ संपर्क करैत छी । आइ-काल्हि टीसनसभपर सीसीटीभी लागल छैक । सभबात पता लागि जेतैक ।”

“मुदा जँ रेलेमे किछु भेल हेतैक तखन?”

“सेहो तँ जाँचेमे पता लागत? कनलासँ तँ समस्याक समाधान नहि होएत ।”

हमर बातक कोनो खास प्रभाव रागिनीपर नहि भेलैक। ओ ओहिना उदास मने नईदिल्ली टीसनपर उतरि गेलि । ओकर पाछा-पाछा हमहु रेलगाड़ीसँ उतरि रहल छलहुँ की रागिनीक शायिकाक नीचाँमे एकटा लिफाफा देखाएल। हम ओहि लिफाफाकेँ चोट्टे उठा लैत छी । ओकरा दहिना जेबीमे रखैत छी आ अपन सामान लेने रेलगाड़ीसँ आओर सहयात्रीक संगे उतरि जाइत छी ।

सामानक संगे हम प्लेटफार्मपर उतरिए रहल छलहुँ की रागिनी पुलिसकेँ सभटा बात कहि देलखिन । पुलिस डंडा हिलबैत हमरा लग आबि रहल छल । हमर इच्छा रहए जे पहिने लिफाफाकेँ खोलि चिट्ठीकेँ पढ़ल जाए । तकरबादे एहि विषयमे किछु कएल जाए । मुदा रागिनी हड़बड़ा गेलि । पुलिसकेँ मौका भेटि गेलैक । ओ हमरा दुनूगोटेकेँ पुलिस चौकीमे लेने चलि गेल । पुलिस अपन ऊपरका अधिकारीकेँ सेहो फोन कए देलकैक । पुलिस चौकीमे पहुँचिते पुलिसक उच्च अधिकारी सेहो पहुँचि गेल छलाह । ओ हमरासभ दिस बेर-बेर देखैत छथि । फेर बजैत छथि-

“हिनकासभकेँ चाह-पानि दहुन । ई सभ बहुत परेसान बूझा रहल छथि । तकर बाद आगूक सोचल जेतैक ।”

तुरंत भफाइत चाह-बिस्कुट आबि गेल । हमसभ चाह पिलहुँ । मोन कनी आश्वस्त भेल । तकरबाद जेबीसँ ओ लिफाफा निकालि पुलिस अधिकारीकेँ दैत छिअनि ।

“ई लिफाफा अहाँकेँ कतए भेटल?”

“रेलगाड़ीमे रागिनीक डिब्बाक नीचाँमे ।”

“एहिमे की लिखने छथि?”

“से हम की जाने गेलिऐक । अखन धरि एकरा पढ़बाक मौका नहि भेटि सकल । अहीं पढ़ि कए कहू जे बात की छैक?”

“सभसँ पहिने तँ ई कहू जे चिठ्ठीक लिखाबट दिबाकरेक छनि की केओ आओर लिखने अछि ।”

“हुनके छनि ।”

“ठीक छैक । हम एकरा पढ़ैत छी । फेर एहि विषयमे गप्प करब ।”

चिठ्ठी दिवाकरक लिखल छल । पुलिस चिठ्टी पढ़ैत अछि। चिठ्ठीमे लिखल छल-

“हम स्वेच्छासँ अपन गंतव्य दिस जा रहल छी । अहाँसभ हमर चिंता नहि करब । अपन ध्यान राखब ।

दिवाकर”

चिठ्टी पढ़लाक बाद पुलिससभ हमरा दुनूगोटेकेँ छोड़ि देलक । एना रेलगाड़ीसँ दिवाकरकेँ बिला गेलाक बाद पुलिसमे प्राथमिकी(एफ.आइ.आर) सेहो दर्ज कएल गेल ।

“आब अहाँसभ जाउ । पुलिस अपन काज करत । किछु समय लागि सकैत अछि मुदा सही बात अवश्य सामने आओत । ओ चाहे जतए कतहु होअए हमसभ दिवाकरकेँ अवश्य ताकि लेब ।”

पुलिसक बातपर हमरा विश्वास नहि होइत छल । मुदा कइए की सकैत छलहुँ?

31

सामानक संगे रागिनी आ हम कारसँ कारखाना दिस बिदा भेलहुँ । घंटा भरिक बाद हमसभ कारखानाक द्वारिपर ठाढ़ छलहुँ। ओहिठाम कोनो गतिविधि नहि छल । कारखानाक मुख्यद्वारिपर बड़कीटा ताला लटकि रहल छल । हमसभ कारखानाक लगीचेमे होटलमे एकटा कोठरी लैत छी । ओतए स्नान-ध्यान करैत छी । किछु भोजन सेहो करैत छी । रागिनी बहुत थाकि गेल रहथि । हुनका ओतहि विश्राम करैत छोड़ि हम कारखाना पहुँचलहुँ ।

हमर आगमनक समाचार कारखानाक भूतपूर्व कर्मचारीसभकेँ भेटलैक। कैकटा ठीकेदार,दोकानदार,व्यापारीसभ सेहो अपन-अपन बकिऔताक हिसाब लेने पहुँचल । हमरा लगमे ककरो किछु देबाक हेतु तँ छल नहि । हम ओकरासभकेँ एकहि बात कहलिऐक-

“हमर हालत जे अछि से अहाँसभ जनिते छी । अहूँसभक परेसानी हम बूझि रहल छी । सभक जड़िमे टाका अछि जाहिसँ समाधान होएत । यदि ई कारखाना आ ओकर जमीन बिका जाइत अछि तँ अहाँसभक समस्याक समाधान भए जाएत । हम तकरे प्रयास करबाक हेतु आएल छी । हमर आग्रह अछि जे अपने लोकनि एहिमे हमर उचित सहयोग करी जाहिसँ जल्दी सँ जल्दी समाधान भए जाए ।”

“हमरासभकेँ अहाँसँ कोनो व्यक्तिगत शत्रुता नहि अछि । हमहुसभ सार्थक समाधान चाहैत छी । मुदा से शीघ्र हेबाक चाही । कारण कर्मचारीसभ बहुत कष्टमे अछि ।”

"जरूर हेतैक । हम अही लेल आएल छी ।"

कारखानामे किछुकाल ठहरलाक बाद हम डेरा वापस भए गेलहुँ ।

प्रात भेने हम आ रागिनी चाह पीबि रहल छलहुँ । ओही समयमे कारखानामे काज केनिहार किछु प्रमुख कर्मचारी पहुँचलाह। हुनकासभक संगे सेठ,साहुकारसभ सेहो रहथि । सभगोटे मूलतः मैथिले छलाह । हुनकासभकेँ देखि हम चिंतामे पड़ि जाइत छी । भेल जे तगादा करैत-करैत ओ सभ एतहु पहुँचि गेलाह। हम किछु बजितहुँ ताहिसँ पहिने ओहिमेसँ एकगोटे बजलाह-

"हमसभ अहाँक परेसानी बूझि रहल छी । मुदा हमरोसभक मजबूरी अछि । पेटक सबाल अछि । कतेकोदिनसँ हमसभ कर्ज खा कए जीबि रहल छी । धन्य कही सेठजीकेँ जे हमरासभक जान बँचओलथि ।"

"ई की बजैत छी । हमहु तँ अहींक समांग छी । आखिर धन कहिआ काज आओत । हमरा लगमे जे किछु अछि से अहींसभक अछि ।"-सेठजीक उदारतासँ सभ अभिभूत छलाह । हमहु आश्चर्यचकित रही ।

"यदि अहाँलोकनिक विचार होअए तँ हमसभ एहि कारखानाकेँ फेरसँ चला देबैक । जे एकर बँकिऔता छैक सभटाक हिसाब-किताब कए फेरसँ एकरा चलेबाक हेतु जे टाका लगतैक से हम देबैक । कारण हम नहि चाहैत छी जे एतेक परिवार उजड़ि जाए । अपन समाजक बात छैक । तेँ किछु हमरो तँ कर्तव्य अछि ।" -सेठजी बजलाह ।

"हमरा दिससँ कोनो हर्जा नहि ।"

"तखन समाधान भए गेल बुझू ।"

सभगोटे बहुत खुस रहथि । निर्णय भेल जे सेठजी आ हुनकर संगीसभ मिलि कए कारखानाकेँ फेरसँ चलेताह । हम अपन सहमति देलिऐक आ इहो कहलिऐक-

"हमरा एहि कारखानासँ आब किछु नहि चाही । मुदा एकर जे लेन-देन छैक ताहिसँ फारकति कए देल जाए जाहिसँ निश्चिंत भए हम गाम जा सकी ।"

"हमसभ अहाँकेँ कारखानाक समस्त लेन-देनसँ मुक्त करैत छी ।"- सेठजी बजलाह ।

एहि तरहेँ बहुत सुखद वातावरणमे गप्प-सप्प संपन्न भेल । बहुत दिनसँ लंवित एकटा समस्याक समाधान एतेक जल्दी भए जाएत से उमीद ककरो नहि रहैक । मुदा से भेलैक ।

कारखानाक समस्यासँ मुक्त भेलाक बाद हम बहुत उसासमे रही । रागिनी सेहो प्रसन्न रहथि । हमदुनूगोटे ओहिदिन साँझमे रेलगाड़ीसँ गाम बिदा भए गेलहुँ । भेल जे आब गुरुग्राममे रहिओ कए की करब? गामे चली । ओतए रत्नेश छथि, अपन समाज अछि। सभसँ ऊपर अपन धरोहरि सेहो ओतहि अछि । जे शक्ति बाँचल अछि तकरा आब ओही सभमे लगा देल जाए ।

जाइत काल कारखाना देखाएल । ओकर लग-पासमे ओएह चहचही छल । ओकर प्रमुखद्वारिपर माछबला झंडा फहरा रहल छल । कर्मचारीसभ आपसमे मिठाइ बाँटि रहल छल । लागल जेना समस्त प्रवासी मैथिलसमाजमे स्फुर्ति आबि गेल छल। एक बेर फेर हुनकासभक जीवनमे हरिअरी देखाइत छल । से देखि हमसभ बहुत प्रसन्न भेलहुँ आ निचेन मोनसँ टीसन दिस बढ़ि गेलहुँ।

32

शशांक आ सरलाक समय नीकसँ कटि रहल छलनि । बहुत दिनक बात एहन मौका आएल छल । नागेन्द्र बाबू एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि । आब हुनका मुम्बईसँ जेबाक इच्छा होबए लगलनि । रहि-रहि कए गाम मोन पड़नि । पत्नीक चिंता से होनि । कारण ओ तँ बेसी काल बिमारे रहैत छलखिन । ओहने हालातमे हुनका छोड़ि कए मुम्बई जाए पड़ल रहनि । तैं ओ शशांककेँ ओहि दिन चाह पीबैत काल कहलखिन-

"हम आब गाम जाएब । ओहिठामक हाल-चाल लेब जरूरी अछि।"

"हमहुसभ तँ अमेरिका जाए बला छी ।"

"कहिआ?"

"मास दिनसँ टारि रहल छी । भेल जे एहिठामक समस्यासभक समाधान भए जाएत तकर बादे जाएब । आब सभकिछु अनुकूल बुझा रहल अछि । ओहिठाम हमरा मनपसंद काज भेटि गेल अछि । मास दिन पहिने हमरा नियुक्तिपत्र भेटल छल । आब ओकर समय सीमा लगचिआ रहल अछि । तैं जल्दीए किछु निर्णय करए पड़त।"

"सरलाक की विचार छैक?"

"ओहो हमरा संगे जेबाक हेतु तैयार अछि ।"

"तखन तँ ठीके अछि । हमर जेबाक टिकट कटबा दिअ जाहिसँ हम समयसँ गाम पहुँचि जाएब ।"

"ठीक छैक ।"

साँझमे जखन शशांक अस्पतालसँ घुरलाह तँ नागेन्द्र बाबूक वापसी यात्राक टिकट सेहो लेने अएलथि ।

“काल्हि दस बजे रेलगाड़ी अछि ।”

“बहुत बढ़िआँ । हम अपन समानसभ आइए सरिआ लैत छी ।”

प्रात भेने नागेन्द्र बाबू टीसनपर जेबाक हेतु तैयार होइत छथि । शशांक आ सरला सेहो तैयार छथि । सभगोटे चाह-पान करैत छथि । तकर बाद टैक्सीसँ सभगोटे संगे बिदा होइत छथि । हिनका लोकनिकेँ सेहो अपन्-अपन सामान लेने देखि नागेन्द्र बाबूकेँ संका भेलनि-

“की बात छैक? अहूँसभक सामान टैक्सीबला राखि रहल अछि?

“हमरोसभकेँ आइए जेबाक अछि । संयोगसँ टिकट भेटि गेल । काल्हि धरि पहुँचि जाएब तँ समयेसँ काज पकड़ि लेब । नहि तँ समय बढ़ेबाक हेतु प्रयास करए पड़ैत ।”

“फेर अहाँसभ कहिआ वापस होएब?”

“से अखन की कहल जा सकैत अछि? पहिने पहुँची तँ ।”

शशांक,सरला आ नागेन्द्र बाबू संगे टैक्सीसँ बिदा होइत छथि । नागेन्द्र बाबू टीसन पहुँचि जाइत छथि । रस्तामे बहुत जाम लागल छल । तेँ टीसन पहुँचबामे किछु विलंब भए गेल । शशांकक हवाइ जहाज छुटबाक समय लगीच भेल जा रहल छलनि । तेँ टीसनपर बाहरेसँ नागेन्द्र बाबूसँ बिदा हेबाक आज्ञा लैत छथि । दुनूगोटे हुनका प्रणाम करैत छथि आ हवाइ अड्डा दिस प्रस्थान कए जाइत छथि ।

नागेन्द्र बाबू गाछसँ टुटल पात सन लटपटाइत,किछु-किछु सोचैत रेलगाड़ी पकड़बाक हेतु प्लेटफार्म संख्या एक दिस बढ़ि जाइत छथि,एसगरे,नितांत एसगरे । ओ टीसनमे दाखिल भए जाइत छथि। शशांक आ सरला सेहो हवाइ अड्डा दिस बढ़ि जाइत छथि ।

नागेन्द्र बाबू दरभंगाक रेलगाड़ीमे बैसल छथि । रेलगाड़ी ठसाठस भरल अछि। लोकसभक बगए-बानि ,बोल-चाल सभ किछु स्वतः स्पष्ट होइत छल , ककरो किछु पुछबाक काज नहि । नागेन्द्र बाबू अपन शायिकापर जा कए बैसि जाइत छथि । थोड़बे कालमे रेलगाड़ी ससरए लगैत अछि । यात्रीसभ आश्वस्त होइत छथि। टिकट परीक्षक हुनका लोकनिक टिकट जाँच करैत छथि । नागेन्द्र बाबूसँ सेहो टिकट मंगैत छथि । ओ अपन टिकट तकैत छथि । आहि रे बा! बेरा-बेरी सभटा जेबी ताकि लैत छथि । टिकट नहि भेटैत छनि । आब की कएल जाए? हुनका हड़बड़ाएल देखि टिकट परीक्षककेँ सक होइत छैक । ओ हुनकापर वक्रदृष्टि दैत अछि ।

“हमर टिकट कटल तँ छल । मुदा कतहु रहि गेल । सौंसे ताकि लेलहुँ । भेटि नहि रहल अछि ।”

“ताहिसँ काज नहि चलत । टिकट नहि देखेबैक तँ जुर्माना लागत। सेहो नहि देबैक तँ जहल जाए पड़त ।”

लगपासक यात्रीसभक कान ठाढ़ भेलैक । ओ सभ हुनकर जानकारी लेलक,हुनकर आधार कार्ड सेहो देखलक । टिकट सूचीमे हुनकर नाम छल । हुनका लग आधार कार्ड छल । दुनू नाम मिलि रहल छल । ओ सभ ई बात टिकट परीक्षककेँ कहलकैक ।

मुदा ओ किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छल । नागेन्द्र बाबू तँ बहुत परेसान भए गेल रहथि । कोनो रस्ते नहि फुराइनि । एतबेमे शशांकक फोन अएलनि ।

"अहाँक टिकट तँ हमरे लग रहि गेल अछि । मुदा हम ओकर फोटो वाट्सअपपर पठा देलहुँ अछि । टिकट परीक्षककेँ से देखा देबैक ।"

हुनकर मोबाइलमे टिकट परीक्षकक आबाज भेल । ओ बात बूझि गेलथि । झोरासँ मोबाइल निकालैत छथि । मोबाइलमे ठीके टिकटक फोटो आबि गेल छल । ओ टिकट परीक्षककेँ से देखबैत छथि । टिकट परीक्षक संतुष्ट भेल । नागेन्द्र बाबूक जान-मे-जान आएल । तकर बाद जे सुतलाह से दरभंगे जा कए निन्न टुटलनि ।

संयोग एहन भेलैक जे नागेन्द्र बाबूक रेलगाड़ी जखन दरभंगा टीसनपर पहुँचलनि तँ हम दरभंगेमे रही । रातिमे काकीक मोन अचानक खराब भए गेलनि । ओ अपना भरि सहबाक बहुत प्रयास केलथि । मुदा छातीक दर्द बढ़िते गेलनि । साँस लेबामे से परेसानी भए रहल छलनि । तुरंते कारसँ हुनका दरभंगा लेने अएलहुँ। राति भरि चिकित्सालयमे भर्ती छथि । दस बाजि रहल छैक । आब बड़का डाक्टरसभ अएतैक। तकरबादे बात फरिछाएत । मुदा ओहिठामक डाक्टरसभ कहए जे बँचि जेतीह । आब कोनो खतरा नहि छनि । हमहु चैन भए गेल रही । लगीचेमे गाछक छाहरिमे विश्राम करैत रही की नागेन्द्र बाबूक फोन आऐल ।

"हम लहेरिआसराय गुमती लग आबि गेल छी ।"

"हमहु दरभंगेमे छी ।"

"कोनो विशेष बात?"

हम हुनका रातुक घटनाक जानकारी दैत छिअनि । ताबे रेलगाड़ी दरभंगा टीसन पहुँचि गेल छल । ओ जल्दीसँ रिक्सा पकड़ि कए बंगलागढ़ स्थित चिकित्सालय हेतु बिदा होइत छथि।

33

चिकित्सालय लग पहुँचि नागेन्द्र बाबू रिक्सासँ उतरि रहल छथि । हम ओहीठाम सटले ठाढ़ छी । हुनकर एक हाथमे सामानसभ छलनि आ दोसर हाथमे किछु टाका छलनि जे ओ रिक्सा भाड़ा देबाक हेतु जेबीसँ निकालने छलाह । हुनकर सभटा ध्यान तँ काकी दिस रहनि । हमरासँ किछु पुछि रहल छथि कि रिक्सासँ पैर नीचाँ करबाक क्रममे संतुलन बिगड़ि जाइत छनि । ओ बीच सड़कपर मुँहे भरे खसैत छथि । हाथसँ टाका आ सामानसभ सौंसे छिड़िआ जाइत अछि । अचानक घटल एहि घटनासँ हम चकित छी । कनी काल तँ किछु फुरेबे नहि कएल । लगपासक लोकसभकेँ दौड़ैत देखि हमहु सचेत होइत छी । हुनका उठेबाक प्रयास करैत छी । ओ दर्दसँ बफारि तोड़ि रहल छथि । लोकसभ हुनका ठाढ़ करबाक प्रयास करैत अछि मुदा ओ लुद दए बैसि जाइत छथि । दर्द बढ़िते जा रहल छनि । चारि-पाँचगोटे मिलि कए हुनका उठा-पुठा कए चिकित्सालयमे लए जाइत छथि । डाक्टरसँ हुनकर जाँच करैत अछि । दर्दक सुइआ लगबैत अछि । “लगैत अछि हिनकर पैरक हड्डी टुटि गेलनि अछि । एक्सरे कराबए पड़त।” हुनकर एक्सरे करओल जाइत अछि । डाक्टरक अनुमान सही छल । हुनकर दहिना पैरक हड्डी टुटि गेल रहनि। डाक्टरसभ

हुनकर तुरंत शल्यक्रिया कए पैरमे लोहाक छड़ लगओलकनि । ताहिपरसँ प्लास्टर केलकनि । घंटा भरिक बाद ओ सभ बाहर भेल। हमरा देखैत कहए लागल-

“बाँचि गेलाह नहि तँ सभदिनक हेतु विकलांग भए जइतथि।”

“ठीक हेबामे कतेक समय लगतनि ।”

“अखन की कहि सकैत छी? ओना सभ किछु ठीक रहल तँ मास दिन मानि कए चलू ।”

डाक्टरसभ अपन-अपन काज कए चलि गेल । हमरा लग जे बाँचल-खुचल टाका छल सेहो हिनकर शल्यक्रियामे लागि गेल। अखन काकी तँ अस्पतालेमे छथि । कहि ने हुनकर कोन-कोन इलाज हेतनि? फेर हम स्वयंकेँ बुझबैत छी । मोनकेँ शांत करैत छी। सोच-विचारक बाद सरलाकेँ फोन करैत छी । मोसकिलसँ एक-दू बेर घंटी बाजल कि सरला फोन उठा लेलक ।

“हम छी रघुबीर।”

“गोर लगैत छी ।“

“एतेक राति कए ...सभकिछु ठीक अछि ने...?”

“ठीक की रहत कपार? तोहर माए आ बाबूजी दुनूगोटे दरभंगा चिकित्सालयमे भर्ती छथि । हम एसगरे हुनकासभक संगे छी । तेँ तोरा फोन केलिअह । हमरसभटा टाका हिनकर इलाजमे खर्च भए गेल । अखन तँ काकीक इलाज बाँकीए छनि ।”

“मुदा हमरसभक हाथ तँ एकदम खाली अछि । अखने तँ एहिठाम अएबे केलहुँ अछि । एकमासक बादे जा कए हुनका दरमाहा भेटतनि । ताबे अहीं किछु जोगार करिऔक।”

हम तामसे फोन काटि देलिऐक । चिंतासँ मोन ब्यग्र भए गेल छल। गाम समाद देलिऐक । जेना-तेना सूदिपर किछुटाकाक जोगार केलहुँ । आगू देखल जेतैक । अखन जरुरी काजसँ निपटि जाइ ।

चिकित्सालयक डाक्टर हड्डीक जानकार नहि रहथि । तथापि,लोभमे ओ नागेन्द्र बाबूक शल्यक्रिया कए देलनि । परिणामतः हुनकर हड्डी उल्टा जुड़ि गेलनि । मास दिनक धक लागि गेल। अखन धरि चलि-फिरि नहि होइत छनि। शायिकापर पड़ल-पड़ल शय्याव्रण से भए गेलनि । काकीक हालत तँ आओर खराब रहनि । असलमे हुनका कोनो हृदयरोगक अस्पतालमे इलाज हेबाक चाहैत छलनि । मुदा से बात ई डाक्टर साफ-साफ नहि बजलथि । हमरासभसँ टाका टनने जाथि । रोगीसभक हालत खराबे होइत जाइत छल ।

एही बीच मौका पाबि हम अपन आँखिक जाँच सेहो करओलहुँ । आँखि बहुत नोराइत छल । भरिदिन पानि बहैत रहैत छल । देखबामे परेसानी तँ होइते रहए । ओही चिकित्सालयक बगलमे आँखिक डाक्टरक शिविर लागल छल । हमर आँखि देखितहि ओ सभ बाजए लागल-"तुरंत शल्यक्रिया कराउ । मोतिआबिंद बहुत बढ़ि गेल अछि । शल्यक्रिया नहि कराएब तँ दुनू आँखि गेल अछि ।"

डाक्टरक बात सुनि हम बहुत चिंतामे पड़ि गेलहुँ । आँखि सन रत्न खतरामे पड़ि गेल छल । जँ इहो चलि गेल तँ कोना जीअब? के हमर सेवा करत? रागिनी तँ ओहिना परेसान छथि । यदि हमहु बैसि गेलहुँ तखन हुनकर की होएत?गामसँ रागिनी आ रत्नेशकेँ बजा लेलिअनि । एक सप्ताहक भीतरे दुनू आँखिक शल्यक्रिया भेल ।

डाक्टर कहलक जे एक सप्ताहक बाद आँखिमे पुरना ज्योति वापस आबि जाएत । मुदा दिन-दिन आँखिमे दर्द बढ़िते गेल । हमरा संगे आओरो कैकगोटे ओतहि आँखिक इलाज करओने रहथि । हुनको लोकनिकेँ सएह समस्या रहनि । हमसभ डाक्टर लग अबैत-जाइत रहलहुँ । मुदा सुधारक बदला आँखिक हालत आओर खराबे होइत चलि गेल । दुनू आँखि निठ्ठाह आन्हर भए गेल ।

आब की होएत? एक दिस ओ दुनूगोटे पड़ल छथि । एमहर हम आन्हर भेल पड़ल छी । एकटा रागिनी ककर-ककर सेवा करितथि? दिन-प्रतिदिन हुनको हालत खराबे होबए लगलनि । रत्नेशकेँ से बोखार होबए लगलैक । आब तँ मोन बहुत परेसान भए गेल । रागिनी स्वयं करवनहु ओछाओन धए लेतीह , से हालत हुनकर भए गेल रहनि ।

“हमरा अहाँ गामे लए चलू । हमर आँखि तँ गेबे कएल । अहूँसभक जान चलि जाएत । एहि चिकित्सालयसँ कहुना कए भागू ।”- हम रागिनीकेँ कहलिऐक । ओहो हमर बातक समर्थन केलनि । ओ आ रत्नेश हमरा टेंपूपर बैसा कए ओहि चिकित्सालयसँ भागैत छथि । टेम्पूक आबाज सुनि ओहिठामक कर्मचारी हमरासभ दिस दौड़ैत अछि । टेम्पू पूर्ण गतिसँ निकलि जाइत अछि । एहि तरहें जान बँचा कए हमसभ ओहिठामसँ गाम वापस अएलहुँ । अपने तँ आबि गेलहुँ, मुदा नागेन्द्र बाबू आ हुनकर पत्नी तँ ओतहि छथि । पता नहि हुनकरसभक की अंत लिखल छनि?

34

रातिक दूपहर होएत । हम असगर ओसारापर बैसल छी । साँझेसँ मेघ बरसि रहल अछि । रहि-रहि कए बिजलौका चमकि रहल अछि । मेघ ढनढना रहल अछि । आनदिन जकाँ हम आइओ सबेरे भोजन कए ओसारापर राखल चौकीपर सुति गेल रही । मुदा थोड़बे कालक बाद पानिक झटकसँ निन्न टुटि गेल । तकरबाद लाख प्रयास केलहुँ परंतु निन्न नहि भेल । असलमे प्रयाससँ कतहु निन्न भेलैक अछि? हमरा एकर पर्याप्त अनुभव अछि । तथापि हम एहि प्रयासमे लागल रहलहुँ । आओर कइए की सकैत छलहुँ? ओहने तंद्रित हालतमे प्रकृतिक प्रचंड विभीषिकाकेँ सद्यः झेलि रहल छलहुँ । आङनमे घरे-घर सब सुतल छल । निःशब्द । जेना किछु भइए नहि रहल होइक । जेना प्रकृतिक प्रचंड विभीषिका ओकरासभक निन्नपर कोनो असर नहि पड़ल होइक । सभ अपनामे मग्न छल । हम असगर कोन हालतमे छी आ कि कोनो परेसानी मे छी तकर ने ककरो परबाह छैक,ने प्रयोजन । मुदा हम तँ भुक्तभोगी छलहुँ । सद्यः कष्ट काटि रहल छलहुँ । ने सुति पाबी,ने जागल रहल होअए ।

एही हालतमे घंटा बीतल,दू घंटा बीतल । मुदा ने बरखा रुकल,ने हमरा निन्न भेल । ऊपर चार से चुबि रहल छल । ओछाओन बचाएब बहुत मोसकिल भए गेल छल । एतबहिमे दछिनबारिकातसँ हल्ला सुनबामे आएल । लागल जेना ककरो घर खसि रहल छैक । जखन आओर ठिकिआ कए सुनलिऐक तँ बुझा गेल जे हमरे घर खसि रहल अछि । घरमे सुतल लोकसभ

आत्मरक्षार्थ चिचिआ रहल अछि । मुदा ककरोपर किछु असर नहि भेलैक । एहन विकट समयमे के अबितैक?से केओ नहि अएलैक।

हमर घर प्रलयकारी बरखा,अन्हरक प्रकोपसँ खसि रहल छल । परिवारक लोकसभ निन्नमे मातल छल । ओ सभ एहि दुर्घटनाक किछु पूर्वाभास नहि कए सकल । केओ किछु बचाओ नहि कए सकल । जखन चार तरतरा कए खसएपर उतारु भए गेल तँ ओ सभ जागल,जान बँचेबाक हेतु एमहर,ओमहार भागए लागल। हम तँ जगले रही । मुदा आँखिक अभावमे के अछि,के नहि अछि से नहि बूझि सकलिऐक ।

घंटा बीतल,दू घंटा बीतल मुदा प्रकृतिक प्रकोप कम हेबाक नामे नहि लैक । अपितु,लगैक जेना बढ़ले जा रहल छलैक। तेहन हालतमे के ककरा देखैत? सभ अपन जान बँचेबामे लागल छल, अपन-अपन घरमे नुकाएल छल । किछु कालक बाद जखन बरखा कनेक थम्हल तँ बिजलौकाक प्रकाशमे सभ एक-दोसरकेँ तकबाक प्रयास केलक। परिवारक सभ लोक भेटि गेलखिन । मुदा रागिनीक कतहु पता नहि छलनि । हुनका ताकबाक भरिसक प्रयास ओहनो मौसममे कएल गेल। मुदा कोनो जानकारी नहि भेटलनि । आखिर रत्नेश चिचिआ उठल-

“मौसी कहाँ छथिन? मौसी कहाँ छथिन ?......”

रत्नेश बड़ीकाल धरि एहिना चिचिआइत रहल । ओकर आबाज सुनि लगपासक घरबैआसभ सेहो दनानपर आबि गेल । मुदा ककरो किछु करबाक साहस नहि भेलैक । हमर घर निठ्ठाह खसि पड़ल छल । घरक सभटा सामान आ प्रायः रागिनी सेहो ओहीमे दबल पड़ल छलि । ओतेक रातिमे आ एहन परिस्थितिमे

केओ किछु कइओ नहि सकैत छल । सभ हमर चौकीक लगपासमे जमा भए गेल छल । मुदा एकहु डेग बढ़बाक साहस ककरो नहि होइक ।

भोरहरबा भए रहल छलैक । क्रमशः बुनछेक सेहो भेलैक। प्रकृतिक ताण्डव कनी शांत भेल । बुझाएल जेना दरबाजापर लोकक भीड़ लागि गेल अछि । हमर घर खसबाक समाचार सौंसे गाममे पसरि गेल छल । हमर परिवारक सभ सदस्य सकुशल निकलि गेल छल । बस रागिनीक कोनो अता-पता नहि चलि रहल छलनि । जखन बाहर नहि छलि तँ घरमे चारक तरमे दबल हेतीह । आओर दोसर कोनो विकल्पपर सोचबाक परिस्थिति नहि छल। गौंवासभ खसल चारकेँ हटबए लागल । केओ बांस घिचए तँ केओ कोरो । जकरा हाथमे जएह अबैक सएह घिचए लागए । मुदा ओ कतहु नहि भेटलखिन । सभ परेसान,चिंतित । आखिर ओ कतए चलि गेलखिन? की भेलनि? जीबिओ रहल छथिन की नहि? सभक मोनमे इएह प्रश्नसभ आबि रहल छल ।

35

धन्यवाद दी गौंवासभकेँ जे ओहनो हालतमे साहस बनओने रहलथि आ अंततोगत्वा, अपन प्रयासमे सफल रहलथि । आखिर ओ भेटि गेलखिन, मुदा निष्प्राण । पूजाघरमे दबल छलीह। ऊपरसँ अन्न-पानिक बोरासभ खसल छल । चारूकात घरक समानसभ पसरल छल । जेना-तेना हुनकर लासकेँ बाहर कएल गेल । ओहने मौसममे हुनकर अंतिम संस्कारक तैयारी कएल

गेल । हमरा केओ किछु कहए नहि,मुदा ओहिठाम भए रहल गप्प-सप्पसँ अंदाज लागि गेल जे ओ नहि रहलीह । आँखिसँ नोर अविरल खसि रहल छल । आबाज अवरुद्ध भए गेल छल । ततबेमे गौंवासभ कहलकैक-"राम नाम सत्य है .... । हमरा किछु देखा नहि रहल छल । मुदा अनुमानेसँ सभटा बात बूझा रहल छल । हम ओहि भीड़क पाछा-पाछा बिदा भेलहुँ । ककरो हमरा रोकबाक साहस नहि भेलैक । आखिर,ककरो हाथ धेने-धेने हमहु बड़की कलम पहुँचि गेलहुँ । ओ साझीक कलम छल । हमरा हिस्सामे एकटा मालदह,एकटा बंबइ आ एकटा कृष्णभोग आमक गाछ पड़ल छल । बंबइ आम हुनका बहुत प्रिय छलनि ।

“हिनका एही गाछ तरमे राखि दिअनु ।”-हम रत्नेशकेँ कहलिअनि ।

“सही कहि रहल छथि काका ।” -केओ गौंवा बाजल ।

“मुदा गाछ साफे झड़कि जाएत । लगीचेमे हमर जरदालु आमक गाछ अछि, सेहो नष्ट भए जाएत । हिनका मालदाह आमक गाछ लग लए चली ।” -पाछूसँ केओ बाजल ।

ई बात सुनि लागल जेना सौंसे देहमे आगि लागि गेल ।

“सभटा गाछ हमर रोपल अछि । जतए मोन होएत ओतहि हिनकर संस्कार करबनि ।”

हुनकर लासकेँ बंबइ आमक गाछ तर राखल गेल । गौंवासभ हमर बातक समर्थन करैत बंबइ गाछे तरमे हुनकर अंतिम संस्कारक ब्योंत करए लगलाह । गाछक डारि काटल गेल । जारनि बनाओल गेल । अंतिम संस्कारसँ पहिनेक सभटा विध-विधान कएल गेल । हम एसगरमे चुपचाप ठाढ़ रही । सभ किछु बुझैत मुदा किछु नहि देखैत ।

जेना-जेना गाछक डारिसभ पाङल जाइत छल,तेना-तेना हमर मोनमे गड़ल बातसभ स्मरण होइत जाइत छल । करवन जारनिक टुकड़ीसभकेँ गोलिआओल गेल,करवन हुनका ओहि टुकड़ीसभसँ लादि देल गेलनि,करवन रत्नेश हुनकर लासमे आगि देलाह ,हम किछु नहि देखि सकलहुँ । मुदा हमर मोनक आगि धधकैत रहल । कैकबेर अनुमान बेसी घातक दृश्य उपस्थित कए दैत अछि । जे अछि ताहिसँ बहुत भयावह घटनाक कल्पना होबए लगैत अछि । सएह हमरो मोन संगे भए रहल छल । हुनकर लासक अधिकांश जरि चुकल छल । बँकिए भाग छोड़ि देल गेल छल-प्रेतांश । पंडितजी हमरा हुनकर चितापर पाँचटा काठी देबाक हेतु कहैत छथि । हम से करैत छी । केओ हमरा धेने रहैत अछि । हम असमर्थ,असहाय बच्चा जकाँ भोकासी पाड़ि कए कानए लगैत छी। काठी देलाक बाद तीन बेर चिताक चारूकात परिक्रमा करैत छी आ ओहने हालतमे ओहिठामसँ सभक संगे बिदा भए जाइत छी।

हम वापसी यात्रामे पोखरि लग पहुँचि रहल छी । सभगोटे राम नामक जयकारा लगा रहल छथि । हम चुप्प छी । किछु बाजि नहि पाबि रहल छी । हमर मोनमे एक-एकटा बीतल दृश्यसभ पलटि रहल अछि । समय एहन पलटी लेत से के सोचि सकैत छल?

पोखरिपर स्नानक बाद गौंवासभक संगे हम वापस आबि रहल छलहुँ । रत्नेश सभसँ आगू-आगू । हुनकर पाछू-पाछू लोकसभ । हमर डेग आगू बढ़िए नहि रहल छल । आब ओहिठाम वापस जाए की करब? ककरा संग समय काटब । पहिने तँ दुनूगोटे एक-दोसरक हाल-चाल पुछैत रहैत छलहुँ । करवनो हम हुनका पर

तँ करवनहु ओ हमरा पर तमसाइत रहैत छलहुँ । करवनहु नीक,करवनहु बेजाए होइत रहैत छल । समय बीति जाइत छल । मुदा करवनो-करवनो रत्नेश किछु एहन बात बाजि जाथि जाहिसँ रागिनी उदास भए जाथि । सहटि कए हमरा लग अबितथि। अपन मोनक दुरव बटितथि ।

“साइत अपन जनमल रहैत तँ एना नहि करैत ।”- ओ कहितथि ।

“तकर कोन ठेकान? आइ-काल्हि विचित्र हवा बहि गेल छैक । सभ परेसान अछि । जकरा संतान छैक सेहो,जकरा नहि छैक सेहो । जे गरीब अछि सेहो,जे धनीक अछि सेहो । ककरो मोनमे शांति नहि छैक ।”

ओ चुप्प भए जइतथि । हम अपना भरि हुनका बूझेबाक प्रयास करितहुँ । दोसर उपायो की छल? जरवन विधाता हमरा लोकनिक कपारमे सएह लीरिव देने रहथि तरवन कएल की जाइत?

36

ओहि राति दुर्घटनाक समयमे घरमे रागिनीक अतिरिक्त रत्नेश आ हुनकर नवविवाहित पत्नी सुतल छलि। संयोगे कहक चाही जे ओहनो हालतमे ओ सभ बाँचि गेल । बस रागिनी चलि जाइत रहलीह। जेना ओ संकट हुनके प्राण घिंचबाक हेतु आएल छल । मुदा उपाय की छल? जे हेबाक छल से भेल । जहिआसँ हम आन्हर भेलहुँ ओएह हमर आँरिव रहथि । हुनका बले हम समय काटि लैत छलहुँ । ओ छाया जकाँ हमर संगे दिन-राति लागल रहैत

छलीह । मुदा आब? असगर हम ठुट्ठ गाछ जकाँ भए गेल छी । सभ किछु ओहिना अछि । गाम ओएह अछि । घर ओएह अछि। ओसारा ओएह अछि । मुदा हमरा लेल सभ व्यर्थ भए गेल अछि । हम नितांत असगर भए गेल छी । केओ कतहु नहि । अपन मोनक बात ककरा कहबैक, के हमर दुख सुनत? के हमरा संगे अपन जीवनकेँ बरबाद करत आ कथी लेल? हम ओकरा की देबैक?

एहि तरहें हम निरंतर पछिला जीवनक घटनासभक प्रति सोचैत रहैत छलहुँ ।

करवनो काल हमरा घोर निराशा होइत अछि । होइत रहैत अछि जे हमर जीवन व्यर्थ अछि । जखन हम किछु कइए नहि सकैत छी,जखन सभकिछु हेतु दोसरे दिस मुँह तकैत रहैत छी,तखन जीबाक की लाभ? अनेरे दोसरोक जिनगीकेँ तबाह केने रहैत छी । सही मानेमे केओ आओर किएक तबाह होइत?ककरा हमरासँ कोनो मतलब छलैक? सभ अपन-अपन रस्ता पकड़ि लेलक। मुदा रागिनी कर्तव्यवश हमरा संगे जीवन पर्यंत चट्टान जकाँ ठाढ़ि रहलीह । मुदा आब?

अकस्मात भेल ओहि रातिक दुर्घटना हमरा ऊपर पहाड़ बनि खसि पड़ल । हमर मोन खंड-खंडमे विभक्त भेल निरंतर एहि खंडसँ ओहि खंड बौआइत रहैत अछि । हम असगरमे स्मृतिक संग एकालाप करैत रहैत छी । कखनहु हँसैत छी , कखनहु कनैत छी , कखनहु ठहाका पाड़ैत रहैत छी ।

दिन-राति हमरा संग देनिहारि,रागिनी सेहो जा चुकल छलीह । एहि तरहें हमर जीवनक सभसँ दुखद अध्याय प्रारंभ भेल

छल । सभ किछु बुझबाक,सुनबाक, गुनबाक सामर्थ्य पूर्वबते मुदा भए गेल छलहुँ पूर्णतः उपेक्षित ।

37

चार तर दबि कए रागिनीक आकस्मिक देहान्त भए गेलाक बाद हम वस्तुतः ब्यर्थ भए गेलहुँ । एतेक दिन ओएह हमर आँखि छलीह । ओ देखैत छलीह आ हम गुनैत छलहुँ । मुदा हुनका चलि गेलाक बाद सभ रस्ता बंद बुझाएल। रत्नेश अपन पत्नीक संगे सहर चलि गेल । कतबो कहलिऐक जे हमरा छोड़ि कए नहि जाह,हमरा के देखत? हम ककरा बले जीअब? मुदा ओ किछु नहि सुनलक । ओकर पत्नी अड़ि गेलैक । रूसि कए नैहर चलि गेलैक । हारि कए ओकरा हुनकर बात मानए पड़लैक । ओ गाम छोड़ि देलक ।

जखन से समाचार हमरा पता लागल तँ हम अन्हरोखे बिदा भेलहुँ । गामसँ उत्तर दिस। रस्तामे लागल जेना केओ हाथ धेने चलि रहल अछि । चलैत-चलैत हम दू-तीन कोस चलि गेलहुँ। एकाएक बहुत तरहक गतिविधि सुनाएल । हम ठमकि गेलहुँ । ओहिठाम एकटा नवनिर्मित मंदिरमे भगवानक प्राणप्रतिष्ठा भए रहल छलनि । भजन-कीर्तन भए रहल छल । भंडारा सेहो चलि रहल छल । इलाकाक हजारों लोक ओतए जमा छल । हमरा अबैत देखि ओहि भीड़मे सँ केओ पुछैत अछि -

"अहाँ के छी?”

“हमरा लोक रघुबीर कहैत अछि । हम देबीपुरक रहएबला छी ।”

“अहाँ असगरे एहिठाम धरि कोना अएलहुँ?”

“हम की कहितिऐक?” मुदा चुप्पो नहि रहल जा सकैत छल । कहलिऐक -

"हम स्वयं नहि बूझि सकलहुँ जे हमरा एतए के पहुँचा देलक?”

" अहाँक ई हाल केना भेल?”

" हम जनमेसँ आन्हर नहि रही । आओर नेना जकाँ हमरो दुनू आँखि छल । हम एकदम स्वस्थ रही । हमहु ओहिना खेलाइ। ओहिना सौंसे टहली । बाबा संगे खेतपर जाइ । अगहन मासमे धान कटाबए जखन ओ बाध जाथि तँ हम निश्चित रूपसँ हुनका संगे रही। नेनेसँ हम मजगुत रही । खेती करबएमे बहुत मोन लगैत छल। आमक मासमे आमक रखबारी करी । मकइक खेतमे जा कए कौवा रोमी । इसकूल तँ जेबे करी । ओहि बीचमे हमर बिआह भेल,द्विरागमन भेल,कैकबेर सासुर गेलहुँ । दिल्ली सेहो गेलहुँ । मुदा दिल्ली हमरा नहि धारलक । हम गाम जेबाक क्रममे दरभंगामे रही । ओतहि मोतिआबिंदक शल्यक्रियाक क्रममे हमर दुनू आँखि चलि जाइत रहल । हम सभ दिनक हेतु आन्हर भए गेलहुँ ।

हम आन्हर की भेलहुँ ,हमर दुनिआ बदलि गेल । आब हम किछु नहि देखि सकैत छलहुँ । कनीकोटा काजक हेतु ककरो सहायताक मोहताज छलहुँ । रहि-रहि कए बीतल बातसभ सोचैत रहैत छलहुँ। नित्यप्रति समस्या सभसँ मुखातिब होइत रहैत छलहुँ मुदा तकर समाधान हमरा वशमे नहि छल । यद्यपि हम बाहर किछु नहि देखि सकैत छलहुँ मुदा पहिनेसँ बेसी सोचि सकैत छलहुँ ।”

"मुदा अहाँ चाहैत की छी?”- बीचेमेहमर बात कटैत ओहीमे सँ केओ बाजल ।

"किछु नहि?”

“मंदिर स्थापनाक समयमे ई एकाएक प्रकट भेलाह अछि । जरूर एहिमे ईश्वरक प्रेरणा अछि ।”- दोसरगोटे बाजल ।

"सही कहि रहल छह । हिनका मंदिरेपर राखल जाए ।” -तेसरगोटे बाजल ।

"हमरा विचारसँ हिनके एहि मंदिरक पुजारी बनाओल जाए ।” -चारिमगोटे बाजल ।

एहि तरहें ओतए उपस्थित लोकसभ आपसमे चर्चा करैत रहल । कनीकालक हेतु चारूकात एकदम शांति पसरि गेल। मंदिर प्रांगणमे चलि रहल कीर्तन रुकि गेल । हुनका लोकनिक आपसी चर्चा सेहो थमि गेल । फेर एकटा ठहरल आबाज सुनैत छी-

"अहाँ आब एतहि रहब । एहि मंदिरक भार अहींपर रहत ।”

"सही निर्णय थिक । मुदा हिनका असगरे किछु कोना कएल हेतनि?”

"तूँ सभ सदिखन उल्टे सोचैत रहैत छह । हमसभ कोनो परदेश चलि जाएब । बेरा-बेरी एतए अबिते रहब। हिनका कोनो दिक्कति नहि होबए देबनि ।”

ओ सभ आपसमे चर्चा करैत रहलाह । हम की कहितिऐक? जकरा लग कोनो विकल्प होइक से ने विचार करए । हम तँ सभटा विकल्पकेँ पहिने देखि चुकल रही । तेँ सामने आएल अवसरकेँ ईश्वरक इच्छा बूझि स्वीकार कए लेलहुँ। स्वीकृतिमे मुड़ी हिला देलिऐक ।

38

दूपहर रातिक समय अछि। चारूकात गहन अंधकार पसरि गेल अछि । कतहु किछु नहि देखा रहल अछि । पता नहि किएक आइ हम सुतबाक प्रयासो नहि कए रहल छी । मंदिरपर एकांतमे सोचैत-सोचैत हम थाकि चुकल छी। हमर भूतकाल हमरासँ हटिए नहि रहल अछि । जतेक ओकरा बिसरबाक प्रयास करैत छी ,ओ ततेक जोर-सोरसँ पछोड़ करए लगैत अछि । गाम-घर, माए-बाबूजी , रानी, रागिनी,दिवाकर,.दुखन,रत्नेश सभ बेर-बेर मोन पड़ि रहल छथि । देबीपुर,शक्तिपुर आ रुद्रपुर सभठाम भम्ह पड़ि रहल छल। गामक-गाम खाली भए गेल छल । लोकसभ जीबाक हेतु सहर चलि गेल छल । घरसभमे ताला लटकैत रहैत छल । केओ भगवतीक पूजा केनिहार नहि छल । पुरान घरसभ खसि गेल छल। रत्नेश सपरिवार नौकरी करए सहर गेलाह,से गेले रहि गेलाह। गाममे हमर डीह उजड़ि गेल छल। हमरासभक मोहमे देबीपुरेक अपन सभकिछु बूझनाहरि रागिनी अकाल कालक गालमे समाहित भए चुकल रहथि । रुद्रपुरमे आब केओ शशांकक नाम लेबए बला नहि छल । ओ सरला संगे विदेश गेलाह से गेले रहि गेलाह । गाम-घर दिस घुरि कए नहि तकलाह । चिकित्सालयमे पड़ल वयोवृद्ध माता-पिताक हालो-चाल लेबए सरला नहि आबि सकलीह। हम सोचैत रहि जाइत छी-

“रागिनी-तीन आखरक एकटा एहन कन्याक नाम छल जे हमरा लेल जीवन भरि मसालक काज करैत रहलीह । त्यागक पराकाष्ठाक नाम छल रागिनी। जीवन भरि अविवाहिते रहि रत्नेशकेँ

मातृत्वक सुख दैत रहलीह । बिना कोनो स्वार्थकें बहिनक स्मृतिकें जीवंत रखबाक हेतु जीवन भरि तत्पर रहलीह । हमर संतान,हमर परिवार,हमर घरकें अपन बूझि ओहिमे ओझराएल रहलीह ,बिना कोनो किंतु,परंतुकें । दुख आ दुर्भाग्यक बात जे ओ हमरे ओहिठाम अचानक भेल दुर्घटनामे अपन प्राणो उत्सर्ग कए देलीह । हम हुनकर किछु कर्ज नहि सधा सकलहुँ । मुदा कोनो बात नहि। हम फेर जन्म लेब,एही गाममे आ संपूर्ण शक्तिसँ प्रयास करब जे हुनकर ऋणक किछुओ अंश सधा सकी। ताधरिक हेतु क्षमाप्रार्थी छी ।

दिवाकरक अचानक रेलगाड़ीसँ उतरि गेलाक बाद हम अंत-अंत धरि सोचैत रहि गेलहुँ जे ओ एना किएक केलक? तकर एकहिटा जबाब हमरा बुझाइत छल । ओकरा नीकसँ बूझल छलैक जे हम ओकर गृहस्थी बसि जेबाक हेतु कतेक परेसान रही । मुदा ओ एकटा अद्भुत लोक छल । अपन स्वार्थक तिलांजलि दए हमर जीवन सुखी देखए चाहैत छल। जखन की हम अपन बात बेर-बेर ओकरा कहि चुकल छलहुँ । हम फेरसँ बिआह नहि कए सकैत छलहुँ । तथापि,ओ अपन सर्वस्व त्याग कए चलि गेल । कतए भेटत एहन सहोदर,ओहो एहि कलियुगमे?हम तँ अखनहुँ कहैत छी,घुरि आबह दिवाकर,घुरि आबह । मुदा इहो एहि जन्ममे नहि भए सकल । साइत अगिले जन्ममे से संभव होएत ।

मनुक्ख एहि संसारमे एसगरे आएल अछि आ एसगरे जाएत। ताहि बातकें बुझबाक अछि । यद्यपि स्मृतिशेष हमर एकमात्र धरोहरि अछि, तथापि ओहूसँ हम आब मुक्त होबए चाहैत छी । समय बीति गेल, घटनासभ पाछू छुटि गेल, आब ओकरा मोनमे रखलासँ की फएदा? कष्ट छोड़ि किछु नहि भेटि सकैत

अछि। शांति तँ भइए नहि सकैत अछि । आब तँ ओहि बातसभकेँ बिसरनाइए उचित अछि।

सुख-दुख जे किछु हमर भाग्यमे छल से आएल,गेल । हम आब नीकसँ बूझि गेल छी जे ई संसार माया अछि । केओ ककरो नहि अछि एहिठाम । बस जेना नाटकक पात्र होअए। नाटक खतम,पात्र खतम। जेना नाटकक नीक दृश्यसँ दर्शकगण प्रसन्न भए जाइत छथि,कोनो कष्टप्रद दृश्यसँ दुखसँ नोर बहबए लगैत छथि आ अंतमे सभकिछु ठामहि छोड़ि अपन-अपन घर वापस चलि जाइत छथि, तेहने थिक ई जीवन । आब चली । नाटक खतम अछि । बहुत हँसलहुँ,बहुत कनलहुँ । आब समय अछि शांत भए जेबाक ।"

हम मंदिरक चौकीपर बैसल सोचैत-सोचैत टगि गेलहुँ ।

भोर भेल । हमर प्राणहीन शरीर ओही मुद्रामे चौकीपर अड़ल छल। देखिते-देखिते भक्त लोकनिक भीड़ लागि गेल। सभ हमरा उठा-पुठा कए बिदा भेल-अंतिम यात्रापर , जतएसँ आइ धरि केओ वापस नहि आएल ।

39

हमर लासकेँ गाम आनल गेल । अंतिम संस्कार हेतु रत्नेशक प्रतीक्षा करैत-करैत गौंवासभ थाकि गेलाह । अंततोगत्वा,ओएहसभ ई भार उठओलनि । हमर अंतिम संस्कार हमरे कलममे रागिनीक साराक बगलमे कए देल गेल । हम सदा-सर्वदाक हेतु अनंतमे समाहित भए गेलहुँ । ओहिठामसँ बिदा होएबासँ पहिने लोकसभ एकबेर फेर जोरसँ बजलाह-"राम नाम सत्य है", आओर खेल खतम । हमर चिताकेँ सनुगैत छोड़ि ओसभ अपन-अपन घर वापस चलि गेलाह । निःशब्द रातिमे ओहिसँ रहि-रहि कए निकलैत ध्वनि बहुत दूर धरि सुनाइत छल-

"बेसक हम शरीर छोड़ि देने छी । मुदा हमर एक्केटा कामना अछि, जे हम जँ हम फेरसँ जन्म ली तँ एही भूमिपर, एहीगाममे जाहिसँ हम अपन अपूर्ण रहि गेल संकल्पकेँ साकार होइत देखि सकी, जतए कोनो बूढ़केँ चिकित्सालयमे पड़ल अपन संतानक प्रतीक्षा नहि करए पड़तैक, जतए दुखन सन संतानसँ त्रस्त कोनो माता-पिताकेँ मृत्युकेँ आलिंगन नहि करए पड़तैक, जतए रागिनी सन उच्चकोटिक महिला सुखी जीवन जीबि सकतीह, जे जतए कतहु भेटैत हम दिवाकरकेँ बजा अनितहुँ आ देखि सकितहुँ ओकर सुखी, संपन्न गृहस्थ जीवन ।"

हमर आत्मासँ निकलैत आर्त्तनाद सुनि ओतए अचानक चारूकातसँ मेघ जमा भए जाइत अछि । भयानक वृष्टि होबए लगैत अछि,इलाका जलमग्न भए जाइत अछि । भोर होइत-होइत सभकिछु शांत होइत अछि । भगवान भास्करक स्वर्णमयी रश्मिसँ

समस्त पृथ्वी आलोकित भए रहल अछि । सगतरि नूतन जीवनक संचार होबए लगैत अछि । समस्त वातावरण आशा आ रचनात्मकतासँ परिपूर्ण लगैत अछि ।

ओ मंदिर अखनहुँ ओहिना जीवंत छल । ओतए लोकसभ निरंतर भजन-कीर्तन करैत रहैत छल । भोर-साँझ ओतए घड़ी-घंटा बजैत रहैत छल । ओहिठामसँ रहि-रहि कए संचारित भए रहल शंखध्वनि इलाकाकेँ नूतन ऊर्जा प्रदान करैत रहैत छल, जगबैत रहैत छल ,कहैत रहैत छल –"वयम् अमृतस्य पुत्राः!"

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।